तज़करह
खुलफ़ा-ए-राशिदीन

शफ़ीक़-ए-मिल्लत मुफ़्ती
शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी
क़ाज़ी-ए-शहर, इलाहाबाद

मकतबा नूर
नूर उल्लाह रोड, इलाहाबाद 9450612914

Scanned by CamScanner

तमाम भाइयो को सलाम किताबे

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फक़ीर को अपनी दुआओ मे

खास तौर पर याद रखे !

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

Scanned by CamScanner

तज़केरह

खोलफाये राशिदीन

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

बानी व मोहतमिम दारूल उलूम अफज़लुल मदारिस
करैला बाग़ इलाहाबाद

जेरे एहतेमाम

मोहम्मद नोमान रज़ा

नवासए शफ़ीके मिल्लत

नाशिर

जामेआ दारूस्सलाम

K 49/A1जे0 के0 आशियाना, करैली, इलाहाबाद

Rs. [redacted]/-

फेहरिस्त उनवानात

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
इन्तेसाब	4	खन्दह	32
खेराजे अक़ीदत	4	सर मुबारक	32
तक़रीज़	5	गरदन मुबारक	32
पेश लफ़्ज़	9	दस्त मुबारक	33
मोक़द्दमा	13	सीना मुबारक	33
सैयदे आलम सल्ल0	16	शिकम मुबारक	33
शक्के सदर	18	पुश्त मुबारक	33
शाम का सफर	18	हर दो पाये अक़दस	33
हज़रत खदीजतुल कुबरा		एड़ियाँ, क़द मुबारक	33,34
से निकाह	20	रंग मुबारक	34
अज़वाजे मोताहिरात	20	जिल्द मुबारक	34
औलादे केराम	21	मूए मुबारक	34
गज़वात और सराया	22	लिबास,	34
वालियाने मुल्क को दावते		अमामा	35
इस्लाम	22	सैयदना सिद्दीक़	
कुछ अहम ग़ज़वात	27	अकबर	37
वेसाल शरीफ	28	वेलादत	37
हुलिया मुबारक	30	हालात	38
रूये मुबारक	31	शुजाअत	38
आँखें मुबारक	31	सखावत, आपका इल्म	39, 40
अबरूये मुबारक	31	सहाबा में अफज़ल	41
बीनिए अक़दस	31	वह आयात जो आप	
गोश मुबारक	31	की मदह में नज़िल हुई	42
दहन मुबारक	31	आपके फज़ायल	
लोआबे दहन	32	अहादीस में	43
जबान मुबारक	32	सलफ सालेहीन के	
आवाज़ मुबारक	32	इरशादात	45

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
खेलाफ़ते सिद्दीक की		शहर बसरा की तामीर	83
तरफ इशारात	45	मदायन की फतह	84
हालात	47	फतह रोम व शाम	85
शोअब अबी तालिब	49	हज़रत उमर का	85
ग़ज़वात और सिद्दीक़		किरदार और कारनामे	
अकबर	52	कशफ व करामात	87
कुछ अहम उमूर	54	हज़रत उमर की	
खेलाफते सिद्दीक़ का		शहादत	91
बयान	55	सैयदना उस्मान ग़नी	
मुर्तदीन से जेहाद	57	इब्तेदाई ज़िन्दगी व	
तजहीज़ जेशे ओसामा	57	हसब व नसब	95
फ़ुतूहे शाम व ईराक	59	आपकी फज़ीलत	
तदवीने कुरआन	60	अहादीस की रौशनी में	96
अव्वलियात	61	हजरते उस्मान का दौरे	
अहदे सिद्दीक़ पर एक		खिलाफत	97
नज़र	64	फतूहाते इस्लामिया	100
सैयदना उमर फ़ारूक़ का		ईरान के बागियों की	
अहदे हुकूमत	68	सरकूबी	101
हज़रत उमर की इब्तेदाई		आज़रबाईजान में बगावत	101
ज़िन्दगी	68	अफ्रीका पर यूरश	102
हज़रत उमर का इस्लाम	69	खूँरेज़ जंग के बाद	
हिजरत उमर फारूक़	71	अफ्रीका की फ़तह	103
खेलाफत	74	कब्रिस और रोडस की	
फुतूहात	75	फतह	104
फतहे ईरान	75	तदवीने कुरआन	106
हज़रत सअद बिन अबी		सोरिश का आगाज़	109
वक़ास ईरान के गवर्नर	78	हज़रत उस्मान का	
शाहे ईरान को दावते		सफरे आख़िरत	111
इस्लाम	80	शहादत क्यों और कैसे	112
जंगे क़ादसिया	80	सहाबा के अक़वाल	116

Scanned by CamScanner

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
हज़रत उस्मान का सरापा	117	खोलफाये राशिदीन के	
हज़रत उस्मान के दौरे		अहद में सल्तनत का	
हुकूमत पर एक नज़र	117	नज़्म व नसक़	169
हज़रत उस्मान पर किये		क़ज़ा	169
गये एतराजात के जवाब	118	देफ़ा	169
सैयदना अली इब्न		महसूल	170
अबी तालिब	128	जुज़िया	170
आपकी फज़ीलत		ज़कात	170
अहादीस की रौशनी में	128	उशूर	171
हज़रत अली की शुजाअत	130	सिक्का	171
इल्म व फ़ज्ल	131	मौलाए कायनात की	
खेलाफ़ते अली	132	अदबी शख्सियत	171
अमीर मआविया और शाम	134	नहजुल बलागत	172
अम्माल की तबदीली	135	खुतबाते अली के नमूने	179
जंगे जमल	136	मौला अली के	
हज़रत अली और अमीर		हकीमाना इरशादात	174
मआविया	140	माखज़ व मुराजेअ़	176
हज़रत अली का खत			
अमीर मआविया के नाम	144		
मारका सफ्फ़ैन	145		
खूँरेज़ जंग	149		
तहकीम के असरार	155		
तहकीम की तकमील	156		
खवारिज	157		
मजलिसे मुशावेरत	159		
खवारिज से जंग	161		
मिस्र पर अमीर मआविया			
का कब्ज़ा	163		
हज़रत अली की शहादत	164		

इन्तेसाब

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा रज़ि0 के अज़ीमुल मरतबत व जलीलुल कद्र शहज़ादा ग्रामिए वक़ार आबरूये सुन्नत कुतुबे आलम आरिफ़–ए–बिल्लाह हुज़ूर मुर्शिदी व मौलाई अल्लामा अलहाज मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ मुफ्ती–ए–आज़म हिन्द अलैहिर्रहमह के नाम

जिनकी निगाह कीमिया ने ना जाने कितने ज़र्रो को हमदोश कहकशाँ कर दिया। जिनकी गुलामी मेरे लिए बाइसे फख़ और सरमाया ये आख़िरत है।

कभी भी गर्दिशे दौराँ में जब आवाज़ दी तुमको।
मेरी आवाज़ से पहले तेरी आवाज़ आयी है।।

असीरे रज़ा
शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी रिज़वी

खेराज-ए-अक़ीदत

हिन्दुस्तान के उन दो जलील–उल–क़द्र रहनुमायाने केराम की ख़िदमते आलिया में जिन की शफकत व मोहब्बत और मेहनत व जाँफिशानी ने आज मुझे इस लायक़ बनाया।

यानी

1. बहरूल उलूम नाएब मुफ्ती–ए–आज़म हिन्द उस्ताजुल करीम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद शरीफुल हक़ साहब क़िबला अमजदी, सदर शोबए इफ़ता, जामेआ अशरफ़िया मुबारकपुर, आज़मगढ़।
2. शहेनशाहे ख़ेताबत, सुल्तानुल मुनाज़िरीन पासबाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद साहब क़िबला निज़ामी, ख़लीफ़ा हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द, मोहतमिम दारूल उलूम ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद यू0 पी0 ।

शरीफ़ी

Scanned by CamScanner

तक़रीज़

पीरे तरीक़त सुल्तानुल मुनाज़िरीन ख़तीब–ए–मशरिक हज़रत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद साहब निज़ामी दामत बरकातहुमुल कुदसिया।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू व नुसल्ली अ़ला हबीबेहिल करीम

यह बात बहुत ही खुश आइन्द और उम्मीद अफ़्ज़ा है कि जमात के होशमन्द, साहबे इल्म और अहले क़लम ने जमाअत और वक्त की अहम ज़रूरतों को शिद्दत से महसूस कर लिया है। माज़ी क़रीब में जितनी भी किताबें मनज़रे आम पर आयीं वह तक़रीबन पचास फीसद से ज़ायद रद और अबताले बातिल पर मुश्तमिल थीं और इस सिलसिला में असलाफ़ के जज़्बए एख़्लास को हद्फ़े मलामत भी नहीं बनाया जा सकता। चूँकि हर तरफ से मसलके अहले सुन्नत पर एक शदीद यलग़ार थी । इस लिए देफ़ाई मोरचा को संभालना वक्त का अहम तकाज़ा था। जिसका लाज़मी नतीजा यह हुआ कि दफ़अ़तन सभी ने उसको अपना मर्कज़े तवज्जह बना लिया। हम बजा तौर पर कह सकते हैं कि वह हमारी जमाअत का एक बोहरानी और उबूरी दौर था। हमारा हरीफ़ नित नये हथियारों से लैस होकर हम पर हमला आवर था। वहाबियत, देवबन्दियत, गैर मोक़ल्लिदियत और क़ादियानियत सब इसी दौर की पैदावार हैं। हर एक को ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से न सिर्फ यह कि शह मिल रही है, बल्कि खज़ानों को खोल कर बढ़ावा दिया जा रहा था। जैसा कि खुद उनकी किताबें शाहिदे अद्ल हैं। अगर हमारे बुजुर्गों ने ऐसा न किया होता तो आज करोड़ों की तादाद में सुन्नी नज़र न आता। अग़यार का मनसूबा यही था कि हमला इतना सख्त हो कि जिसके देफ़ा की यह ताब न ला सकें। और इस बड़े दरिया को मुख़्तलिफ़ नहरों में बाँट दिया जाय। शायद कि शफ़ीक़ जौनपुरी ने इसी दिन के लिए कहा था–

निकालें सैकड़ों नहरें कि पानी कुछ तो कम होगा।
मगर फिर भी मेरे दरिया की तुग़ियानी नहीं जाती।।

अल्लाह जिसे रखे कौन उसे चखे। हमारे बुजुर्गों की काविशों का नतीजा है कि आज भी हिन्दुस्तान में सुन्नी भारी अक्सरीयत में अपना वज़न और मक़ाम रखता है। लेकिन अब हालात में पहले जैसा हैजान बाक़ी न रहा। सब का कच्चा चिट्ठा खोल दिया गया और हर तस्वीरें इस तरह बेनक़ाब कर दी गयीं, कि अब वह उजाले में ही नहीं रात की तारीकी में पहचाने जा सकते है। और इन जमातों के बुतलान पर इतना मवाद और मटेरियल फराहम कर दिया गया है कि हमारी दरसगाह का बाशऊर मुब्तदी तालिब इल्म भी बहुत अच्छी तरह इसका तआकुब कर सकता है। फलहम्दो लिल्लाहे अला ज़ालिक।

चुनान्चे अब जमाअत के दानिशवरों ने कलम का रूख बदल दिया है और दरस–ए–निज़ामी के शुरूह व हवाशी और अदब व तारीख निगारी वगैरह जैसे उमूर की तरफ इन की तवज्जोह मबजूल हो गयी है।

ज़ेरे मुताअ़ला किताब इसी सिलसिले की एक कामयाब कड़ी है। जामेअ माकूल व मनकूल मौलाना मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी प्रिन्सिपल, दारूल उलूम ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद एक बहुत ही कामयाब मुदर्रिस होने के साथ बहुत ही सेहतमंद, संजीदा और शाइस्ता कलमी ज़ौक भी रखते हैं। दरसे हदीस से ख़ाली अवक़ात में तस्नीफ़ व तालीफ़ उनका हसीन मशग़ला है। अभी एक साल पेशतर दरस–ए–आलिया से मोतअल्लिक़ अल्तल्ख़ीस नामी किताब ज़ेवर–ए–तबअ से आरास्ता हुई है जो आलिम का एक बहुत ही जामेअ और मुकम्मल नोट है। तलबा और दर्सगाहों ने इसे हाथो हाथ लिया और मकबूलियत का यह आलम कि अब इसके दूसरे एडीशन की तैयारी हो रही है।

ज़रूरत थी कि खिलाफ़त–ए–राशेदा पर कुछ लिख जाये जिससे आम व ख़ास सभी इस्तेफ़ादह कर सकें। चुनान्चे ज़ेरे नज़र किताब इसी जज़्बए एख़लास का समरह है। मौलाना अपनी इस पेश रफ्त में आम व ख़ास दोनों की तरफ से मुस्तहिके

Scanned by CamScanner

मुबारकबाद हैं। किताब के बाज़ बाज़ मज़ामीन को देख कर हमने यह महसूस किया कि मौलाना इस गुर से बहुत अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि किसी शख़्सियत का तारीख साज़ होना और है, और मोअर्रिख़ की तारीख़साज़ी और है। यह तो शख़्सियत का कमाल है कि वह किसी मुल्क या क़ौम को अपनी ज़िन्दगी के ऐसे अनमिट नुक़ूश दे दे जिसे वह ज़िन्दगी की तारीकियों में रौशन चिराग़ समझे और मशअले राह बनाए। लेकिन यह मोअर्रिख़ का बहुत बड़ा नुक़्स या अनाड़ीपन है कि वह तारीख़ निगार न होकर तारीख़ साज़ बन जाये। तारीखसाज़ी और तारीख़ निगारी में बोअ़दल मशरिक़ैन है। आज कल आये दिन मोहम्मद बिन क़ासिम महमूद ग़ज़नवी और हज़रत आलमगीर जैसी मशाहीर शख़्सियतों से मोतअल्लिक़ जो अफसोसनाक वाक़ेआत रोनुमा होते हैं, या तो इसी अनाड़ीपन का नतीजा है या फिर दीदा–ओ–दानिस्ता तारीख़ को मसख़ करने या इश्तेआल और इख़्तेराक़ व इन्तेशार की आग भड़काने के लिए ग़ैर आइनी व ग़ैर संजीदा रविश अख़्तियार की जाती है। मौलाना ने इस राह में बड़ी एतदाल पसन्दी का सबूत दिया है। ज़ेरे मोताअ़ला किताब की तरतीब में मौलाना को वाक़ेआत की फराहमी से कोई सरोकार नहीं था बल्कि तारीख़ के सफ़हात पर फैले हुए वाकेआत से बहुत ही मोहतात तौर पर बस ऐसे ही वाक़ेआत को छान फटक के बाद चुन लेना था जिन पर इफरात व तफरीत या ग़ुलू व मुबालग़ा की छाप ना लगती हो। बेहम्देही तआला मौलाना अपनी इस रविश में ग़ायत दरजा मोहतात और कामयाब साबित हुए और इस ख़ार दार झाड़ी से दामन बचा कर गुज़र जाना कुछ आसान न था वरना यह आये दिन का मुशाहदा है कि ख़िलाफ़ते राशेदा लिखने वाला अगर इफ़रात व तफ़रीत का शिकार हुआ तो रफ़्ज़ व ख़रूज वरना कम से कम तफ़ज़ीलियत की ज़द में तो आ ही जाता है। मगर मौलाना जब शेख़ैन की बारगाह ए अज़मत व जलाल में पहुँचे तो इतने अदब आशना कलम की सुबक रवी पर नसीम–ए–सहर भी सु जूदे नियाज़ लुटाये और जब शेरे खुदा हैदर–ए–कर्रार की बारगाह ए फज़ल व कमाल में शमशीर बराँ

के ज़ेरे साया गुज़रे तो बहुत ही सलीक़े और करीने से ऐसे रवाँ दवाँ गुजरे कि बादे सरसर गर्दे राह तक न पाये। गरज़ यह कि वह अपनी कलम कारी में ऐसे मोहतात नज़र आये कि बेसाख़ता मरहबा सद मरहबा कहने को जी चाहता है। आज के बिगड़े हुए माहौल में यह किताब मोअर्रिख़ीन को तारीख़ निगारी का सलीक़ा सिखायेगी। हमें उम्मीद है कि अ़वाम और ख़वास दोनों में इसकी पज़ीराई होगी।

मौलाना शफ़ीक़ पूरी जमाअ़त की तरफ से मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं। खुदाये क़दीर बहुत दिनों उन्हें दीनी ख़िदमात के लिए सलामत रखे। आमीन। बजाहे सैय्यदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वआलेही वसल्लम।

मुश्ताक़ अहमद निज़ामी
मोहतमिम दारूलउलूम ग़रीब नवाज़ इलाहाबाद
6 जुलहिज्जह 1403 हिजरी।

☆☆☆

जामेआ दारूस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।
उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना
करैली इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

पेशे लफ्ज़

अल्हम्दो लिल्लाहे व कफ़ा
वसलामुन अला इबादेहिल्लज़ीनस्तफ़ा

जिन लोगों की नज़रों में जमाले इलाही समाया हुआ हो वह मिट्टी की उन पुतलियों को जिन्होंने लोहा तेज़ कर के कान्धे पर डाल रखा है या बहुत सा चाँदी सोना अपने जिस्म पर लपेट लिया है। क्या चीज़ समझते हैं उनको तो खुद अकलीमे इश्क़ की सरवरी व शाही और शहरस्ताँ सिद्क़ व सफ़ा का तख़्त व ताज हासिल है।

यही वह लोग हैं जो अगर चाहें तो गोशये रूख़सत बेचारगी में अम्न व आफ़ियत के फूल चुन सकते हैं लेकिन वह फूल छोड़कर दहकते हुए अंगारे पकड़ लेते हैं जिनका ज़िक्र बाइसे ख़ैर व बरकत है और मोजिबे सआदते दारैन है।

कैसे गुस्ताख़ और दीदा दहन हैं वह लोग जो इन महबूबाने इलाही और शैदाये मोहब्बत के दामन से उलझते हैं और उनकी बेगुबार ज़िन्दगी पर कीचड़ उछालने की साजिशें करते हैं। मेरे हैरत की इन्तिहा न रही जब एक इस्तिफ़्ता मेरे पास आया जिसमें बड़ी चाबुक दस्ती और ऐय्यारी के साथ खुलफाए–सलासह के दामन को तार तार करने की कोशिशें की गयी थीं, और उनके इज़्ज़त आबरू से खेलना चाहा गया था जो नज़र–ए–नाज़रीन है।

मोकर्रमी मुफ़्ती साहब – दारूल उलूम गरीब नवाज़
सलाम अलैकुम

मेज़ाज शरीफ़ – बज़िम्मेदारी अज़रूये शरीअत मुन्दरजा ज़ैल सवालात के जवाबात बसबूत क़ाबिले क़यास बतशरीह देने की ज़हमत गवारा फरमायें।

1 आया यह सहीह है कि रसूले खुदा ने अपना ख़लीफ़ा व जानशीन नामज़द नहीं किया बल्कि यह हुक्म दिया कि मेरे बाद आम मुसलमानों की राय से ख़लीफ़ा बना लिया जाये।

2 आया रसूले खुदा ने अलालत की हालत में कागज़, कलम, दवात मांगा या नहीं और अगर मांगा तो दिया गया या नहीं, और नहीं दिया गया तो क्यों?

3 आया रसूले खुदा की तजहीज़ व तकफ़ीन में जुमला मुसलमानान शरीक़ थे या नहीं। शरीक़ थे तो वह कौन लोग थे?

4 आया हज़रत अली ने हज़रत अबूबकर की बैअत किया या नहीं अगर किया तो फौरन किया या कितने रोज़ बाद किया।

5 आया जनाब फ़ातिमा ज़ोहरा का बाग–ए–फ़दक ज़ब्त किया गया और शिकम मुबारक पर दरवाज़ा गिराया गया और उसके अलावा दीगर अज़ीयतें पहुँचाई गयीं या नहीं। अगर ऐसा किया गया तो इसकी वजह क्या है।

6 आया कुरआन मजीद में वज़ू के मोतअल्लिक़ पैर धोना सही है।

7 आया रसूले खुदा और मुसलमानान और आइमा ताहरीन वगैरह हाथ छोड़कर नमाज़ पढ़ते थे या हाथ बाँधकर।

8 आया ताज़ियादारी एक बिदअत है और इमाम हुसैन और दीगर अइज़्ज़ह के ग़म में रोना नाजायज़ और गुनाह है।

9 तौला तबर्रा के मानी क्या हैं और इसका अमल क्या है ?

10 हज़रत उमर की वफ़ात के बाद कोई कमेटी बनी थी जिसमें हज़रत अली के खिलाफ़त के निसबत कौन सी शर्त रखी गयी। यानी इसको हज़रत अली ने इक़रार किया या इनकार किया ?

11 आयते मोअद्दत के क्या मानी हैं ?

12 आया तकिया व मोतआ नाजाएज़ है और इसका तअल्लुक़ कुरआन मजीद से है या नहीं।

13 आया मन कुन्तो मौलाहो फ़अलीयुन मौलाहो किस मौके पर आया और इसका क्या मतलब है ?

वस्सलाम

महबूब हसन, मोहम्मद पुर, गाज़ीपुर।

दारूलउलूम गरीबनवाज़ अहले सुन्नत का एक मर्कज़ी

Scanned by CamScanner

एदारा है, जहाँ दारूल इफ़्ता का बेहतरीन नज़्म है। सवाल व जवाब नेहायत तहक़ीक़ के साथ मुबरहेन व मुदल्लिल कर के दे दिया गया लेकिन दिल में यह ख़याल आया कि खुलफाए राशिदीन की ज़िन्दगी को मुस्तनिद हवालजात के साथ दलायल की ज़न्जीर में जकड़ कर पेश कर दिया जाय ताकि किसी राफ़्ज़ी या ख़ारजी को खुलफ़ा–ए–राशिदीन पर कीचड़ उछालने का मौक़ा न मिल सके।

रफ्ज़ व ख़रूज – यह इस्लाम के लिए दो नासूर हैं जिनका मक़सद इस्लाम के साथ खेलना और सियासी मक़ासिद की तहसील के सिवा कुछ नहीं।

उफ़्तादे तबअ है कि बाप की तौहीन बेटा गवारा नहीं कर सकता, तो मिज़ाजे ईमान यह है कि अंबिया व औलिया और सहाबा की तनकीस हम बर्दाश्त नही कर सकते हैं। बस यही आज़ार है जिसने मुझे कलम उठाने पर मजबूर किया और खुलफा–ए–राशिदीन का आप मोताअला कर रहे हैं।

क्या यही होता है कि ख़िर्मन–ए–गन्दुम सुलगता रहे और पानी छिड़कने वाले को हदफ़े मलामत बनाया जाये। कुसूर उसका है जिसने आग लगायी। बुझाने वाला तो हक़ अदा कर रहा है। खता अम्न व आफ़ियत चाक करने वाले की है। रफूगर की क्यों कलाई पकड़ते हो ? तीर को नहीं रोकते, सीने पर पहरा लगाते हो। नश्तर से आँखें नहीं मिलाते ज़ख्म से बातें करते हो। तुमने गुल फ़रोश के लिये चमन का दरवाज़ा नहीं बन्द किया। गुले तर से कहते हो कि फ़ितरते नमू क्यों दिखलाते हो?

आदिलों, जन्बह दारी ना करो। लैलाए मोहमिल नशीन की अशवह तराज़ी कतअ करना और कैस के दामाने जुनून की धज्जियाँ उड़ाना मुन्सिफ़ी नहीं है।

ऐ लोगो यह अपनी अपनी इस्तेदादे नज़र का फ़र्क़ है। वही गेसूए जानाँ तुम देखते हो तो फ़रोगे हुस्न का परचम समझते हो लेकिन मैं देखता हूँ तो सर चढ़ा हुआ जादू पाता हूँ। तुम्हारे जौके नज़ारा की तस्कीन होती है और यहाँ जान ईमान वफ़ा लरज़ उठता है। भौंरे ने क्या कहा, फूल ने क्या सुना, शबनम

क्यों रोई, यह सब तुम्हें क्या मालूम। तुम तो रंग व बहार का समझे यह तो किसी राज़दार चमन से पूछो।

ऐ गोशये आफ़ियत में सोने वालो, अगर मेरी तर्ज़े फ़ोगाँ से तुम्हारी नींद उचाट हो गयी है तो मुझे मेरी निशाते तबअ दे दो। मैं तुम्हारे वास्ते भी नसीमे ख़्वाब आवर को बुला दूँगा। इन रवाफ़िज़ व ख़वारिज और तमाम काले गोरे हमला आवरों से कह दो कि हमारे मोअ़तक़ेदात व मअमूलात पर हमला न करें। दुश्नाम व बोहतान के तीर न फेंकें। वह अपनी कमीनगाहों में रहें और हम अपनी शबिस्तानों में।

सबू अपना अपना है जाम अपना अपना
किये जाओ मैख़ार काम अपना अपना

शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी
ख़ादिमुत्तलबह
दारूल उलूम गरीब नवाज़, इलाहाबाद
(यू0 पी0)
19 रम्ज़ानुल मुबारक 1403 हिजरी।

☆☆☆

शफीक–ए–मिल्लत की

“औलियाए केराम”

की तारीख पर एक अहम किताब

तारीख़े औलिया

मन्ज़रे आम पर आ चुकी है।

Scanned by CamScanner

मुकद्दमह

1. गैर को नबी से अफजल जानना इज्माअन कतअन कुफ्र है।

2. जो कुरआन अजीम को नकिस माने यकीनन काफिर है।

3. हजरात शैखैन सिद्दीक अकबर व फारूक आजम पर तबर्रा फोकहाए केराम के नजदीक मुतलकन कुफ्र है।

4. रवाफिज़ की तकफीर उनके अकायदे कुफ्रिया के सबब वाजिब है।

5. कुरआन अज़ीम में जो एक लफ्ज़ या एक नुक्ते की कमी बेशी का कायल हो यकीनन काफिर व मुर्तद है।

6. बाद अंबिया मुर्सलीन तमाम मख्लूकाते इलाही इन्स व जिन व मलक से अफजल सिद्दीक अकबर है, फिर उमर फारूक आजम फिर उस्मान गनी फिर मौला अली रजिअल्लाहो अनहुम।

7. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद खलीफा बरहक व इमाम मुतलक हजरत सैयदना सिद्दीक अकबर हैं। फिर फारूक आजम फिर उस्मान गनी फिर हजरत अली फिर छः माह के लिए हसने मुज्तबा रजिअल्लाहो अनहुम हुए। इन हजरात को खुल्फाये राशिदीन और उनकी खिलाफत को खिलाफते राशिदा कहते हैं। क्योंकि उन्होंने हुजूर की सच्ची नियाबत का पूरा पूरा हक अदा फरमाया।

8. इनकी खिलाफत पर तरतीब फजीलत है, यानी जो इन्दल्लाह अफज़ल आला व अकरम था, वही पहले खिलाफत पाता गया।

9. खुलफाए अरबअ के बाद बकिया अशरह मुबश्शिरा हजरात हसनैन व असहाब बद्र व असहाब बैतु रिंजवान के लिए अफजलियत है और ये सब कतई जन्नती हैं।

10. तमाम सहाबए केराम अहले ख़ैर व सलाह और आदिल हैं। उनके जिक्र खैर ही के साथ करना फर्ज है।

11. किसी सहाबी के साथ सू अकीदगी, बद मजहबी व गुमराही व इस्तेहकाक जहन्नम है।

13. कोई वली चाहे कितने ही मर्तबा का हो किसी सहाबी के मर्तबा को नहीं पहुँच सकता।

13. सहाबा केराम के बाहम जो वाकेआत हुए उनमे पड़ना हराम है, मुसलमानों को तो यह देखना चाहिए कि वह सब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जाँनिसार और सच्चे गुलाम हैं।

14. अमीर मआविया रजिअल्लह अन्हु का मुज्तहिद होना सैयदना अब्दुल्ला बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हु ने हदीस सहीह बुखारी में बयान फरमाया है मुज्तहिद से सवाब व खता दोनों ही सादिर होते हैं। खता दो किस्म की है, खता एनादी, यह मुज्तहिद की शान नहीं और खता इज्तेहादी, यह मुज्तहिद से होती है और इस पर इन्दल्लाह असलन मवाखिजा नहीं। मगर अहकाम दुनिया में यह दो किस्म पर है। खता मुकर्रर कि इसके साहब पर इन्कार न होगा। यह खता इज्तेहादी है जिससे दीन में कोई फितना नहीं पैदा होता है जैसे हमारे नजदीक मुक्तदी का इमाम के पीछे सूरे फतिहा पढ़ना। दूसरी खता मुनकिर यह है कि जिसके साहब पर इन्कार किया जायेगा, कि इसकी खता बाइसे फितना है। हजरत अमीर मआविया रजिअल्लाहो अन्हु का हजरत सैयदना अली रजिअल्लाहो अन्हु से खिलाफत इसी किस्म की खता का था और फैसला वह जो खुद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमा दिया कि मौला अली कि डिगरी और अमीर मआविया की मग़फिरत, रजिअल्लाहो अनहुम।

15. उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका बिन्त सिद्दीक, महबूबए महबूबे रब्बिल आलमीन पर मअजअल्लाह तोहमत मलऊना अफक से अपनी नापाक जबान आलूदह करने वाला काफिर व मुर्तद है।

फायदा

सहाबा केराम की तादाद गजवए बद्र में 313 (तीन सौ तेरह) और हुदैबियह में 1500 (पन्द्रह सौ) कम व बेश फतहे मक्का में 10,000 (दस हजार) हुनैन में 12,000 (बारह हजार) हुज्जतुल विदा में 40,000 (चालीस हजार) गजवा तबूक में 70,000 (सत्तर

Scanned by CamScanner

हजार) और बवक्ते वफाते नबवी 1,24,000 (एक लाख चौवीस हजार) और जिन सहाबा से कुतुबे हदीस में रवायात मनकूल हैं उनकी तादाद साढे सात हजार है।

मोहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

इब्ने अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ बिन कसा बिन कलाब बिन मुर्रत बिन कअब बिन लुई बिन गालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नसर बिन कनाना बिन खजीमा बिन मुदरका बिन इलियास बिन मजर बिन नजार बिन मअद बिन अदनान।

सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अबी कहाफा उस्मान बिन आमिर बिन उमर बिन तीम बिन मुर्रत बिन कअब बिन लुई।

उमर फारूक़ रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अलखत्ताब बिन नफील बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन रेयाह बिन अब्दुल्ला बिन करत बिन जराह बिन अदी बिन कअब।

उस्मान बिन अफ़्फान रजिअल्लाहो अन्हु

इब्ने अबिल आस बिन उमैया बिन शम्स बिन अब्दे मनाफ।

अली इब्न तालिब रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अब्दुल मुत्तलिब।

सैयद-ए-आलम

(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)

मक्सूद असली आप ही की जाते गेरामी है और खुलफाए राशिदीन का तजकिरा आप ही की ताल्लुक की वजह से है इस लिए आप का जिक्र किया जाना जरूरी है।

दुनिया की हालत

अरब पहले दीने इब्राहीनी पर थे। सैयदना हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद काबा शरीफ के मोतवल्ली उन के साहब जादे नाबित हुए और आप के बाद कबीलए जरहम मोतवल्ली हुआ। कुछ जमाने के बाद कबीलए खेजाआ का मोअर्रिसे आला उमर बिन लही ने कबीलए जरहम को निकाल कर खुद ही बैतुल्लाह का मोतवल्ली बन गया। अरब मे बुत परस्ती की ईजाद इसी ने की है जमाना गुजरता गया, लोग दीने इब्राहीमी से भटकते गये और अरब दुनिया का बदतरीन मुल्क हो गया यानी अरब के तूल व अरज में बुत परस्ती का जाल बिछा हुआ था। शराब खोरी कुमार बाजी आम थी। माबूदाने बातिल को कादिरे मुतलक की तरह अपने लिए हाजत रवा मानते थे। अजरामे फलकिया की पूजा भी की जाती थी। आफताब व माहताब और सितारों की परस्तिश में फख्र महसूस करते थे। कोई फरिश्तो को खुदा की बेटियाँ समझ कर उन की पूजा करता था और खुदा के यहाँ उनकी शेफाअत के उम्मीदवार थे। बाज खुदा ही का इन्कार करते थे। अलगरज रोज व शब शराब खोरी कुमार बाजी जिना कारी और कत्ल व गारत गिरी में मशगूल रहते थे। कुसावते कलबी के यह हाल था कि लड़कियों के जिन्दा दरगोर किया जाता था। बुतो पर आदमियों की कुर्बानी चढ़ाने पर दरेग न करते थे। लड़ाइयों में आदमियों को जिन्दा जला देना, मस्तूरात के पेट चाक करना और बच्चों को तहे तेग करना अमूमन जायज समझा जाता था। इसी तरह अरब के अलावा पूरी दुनिया मौत के घाट पहुँच चुकी थी। चुनान्चे फारस के लोग आग के पूजने, माओं के साथ वती करने

Scanned by CamScanner

में मशगूल थे। तुर्क दिन रात बस्तियो के तबाह करने और बन्दगाने खुदा को अजीयत देने में मसरूफ थे, उनका दीन बुतो की पूजा और उनकी खसलत मखलूकात पर जुल्म करना था। हिन्दुस्तान के लोग बुतों की पूजा और खुद को आग मे जलाने के सिवा कुछ न जानते थे और नियोग को जायज समझते थे। ये आलमगीर जुल्मत इस अम्र की मुक्तजी थी हस्बे आदते इलाही मुल्क अरब में जहाँ दुनिया भर के अदयाने बातिला व अकायदे कबीहा व एखलाक रद्दिया मौजूद थे। एक हादी तमाम दुनिया के लिए मबऊस हो पो गरीबों का गमगुसार हो। यतीमों, बेकसो, बेवाओं का मावा व मलजा हो। इस कुफ्र व शिर्क मे बहती हुई दुनिया का रूख मोड दे जो बशारते ईसा हो, जो दुआए इब्राहीमी हो। जो नवैदे मसीहा हो, और जो पूरी दुनिया के लिए मुसलेहे आज़म, रहबरे आजम, हादिये अकबर और हर एक के लिए बेमिसाल रिफार्मर हो। ऐसे माहौल मे अल्लाह ताला के आखिरी पैगाम्बर सैयदे वलदे आदम, मालिके रेकाबे ओमम, कासिमे लोगत, हादिये सुबुल,- रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ लाये। आप की वेलादत सरापा बशारत रबीउल औवल के महीना में दोशम्बा के दिन सुबह सादिक के वक्त बारहवीं तारीख को शहर मक्का मे सरदारे कुरैश हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के घर मे हजरत आमिना के बतन से हुई। वालिद माजिद का नाम नामी इस्मे गिरामी अब्दुल्लाह है।(रजिअल्लाहो अनहो) अंग्रेजी तारीख 20 अप्रैल 571 ई0 बयान की गई है। वेलादते तैयबा के वक्त बहुत से अजायबे कुदरत का जहूर हुआ कि कभी दुनिया में वह बातें न हुई। बेजबान जानवरों ने बजबान फसीह इन्सानी अन्दाज मे आपकी खुशखबरी सुनायी। दरख्तों से आवाज़ें सुनी गई। बुत सरन्गू हो गये। दरिया सावा खुश्क हो गयी, दुनिया के दो अज़ीम बादशाहों कैसर व किसरा को बजरिये ख्वाब आपकी अज़मत व रिफअत से आगाही दी गयी और यह भी बता दिया गया कि सितवत व अज़मत के सामने न सिर्फ किसरा व कैसर बल्कि सारी दुनिया की शौकतें सरन्गू हो जायेंगी। आप अभी बतने मादर ही में थे कि वालिद माजिद का साया सर से उठ गया और चार

साल की उम्र में माँ ने भी दागे मफारकत दे दी। आप के दूध पिलाने का शर्फ अजीम हजरत हलीमा सादिया रजिअल्लाहो अन्हा को मिला और इस दौरान उन्होंने बडी ही अजीब व गरीब हालात के मुशाहदे किये। एक बड़ा हिस्सा आप के हालात व कमालात का इनसे मनकूल है और हक यह है कि बेहद खुशनसीब थीं। उनके खुशनसीबी का क्या कहना। उन्हें खुदा ने जमाना–ए–नबूवत तक ज़िन्दा रखा और आप पर ईमान लाईं। मकाम जोअराना मे जब आप माले गनीमत तकसीम कर रहे थे आकर मिलीं। आपने उनकी बहुत कुछ खातिर की और हसनैन के छः हजार असीराने जंग महज इस वजह से आजाद कर दिये गये कि हज़रत हलीमा के कबीला से ताल्लुक रखते थे।

शक्के सदर

आप का सीना चार बार चाक किया गया। दो मर्तबा बवक्ते बोअसत, और एक मर्तबा बवक्ते मेराज। पहली बार जब आप का शक्के सदर हुआ आप अपने रज़ाई भाई के साथ बकरियाँ चराने जंगल तशरीफ ले गये थे। यकायक आपके रज़ाई भाई दौड़ते हुए अपनी माँ हलीमा के पास आये और कहा, ऐ माँ मेरे कुरैशी भाई को दो सफेद पोश मर्दों नें आकर लिटाया और सीना चाक कर दिया। यह सुनकर वह बेहद परेशान हुयीं और फौरन जगल गयीं तो देखा कि आप सही व सालिम हैं मगर चेहरे अकदस पर खौफ के कुछ आसार हैं, फिर सारा वाकेआ खुद आपने बताया। हर मर्तबा शक सदर में फरिश्ते आपका सीना मुबारक चाक कर के और आपके कल्ब अतहर को एक तश्त में जिसमें ज़मज़म का पानी होता था धोते थे।

शाम का सफर

जब आपकी उम्र मुबारक पच्चीस साल की हुई तो आपके सिद्क व अमानत का शोहरा दूर दूर तक पहुँच चुका था। यहाँ तक कि आप को अमीन का लक़ब दे दिया गया था। हजरत खदीजा (जो एक मोअज्जिज़ खानदान की मालदार खातून थीं) ने

Scanned by CamScanner

आप के पास पैग़ाम भेजा कि आप मेरा माले तेजारत ले कर शाम को जाया करें, जो मोआविजा मैं औरों को देती हूँ आप को उसका दोगुना दूँगी। नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुबूल फरमाया।और माल तेजारत लेकर शाम के तरफ हजरत खदीजा के गुलाम मैसरह के साथ रवाना हुए।(वाजेह रहे कि यह शाम के दूसरा सफर था। पहला सफर जबकि आप की उम्र मुबारक बारह साल की थी उस वक्त आप अबूतालिब के साथ शाम तशरीफ ले गये थे और इसी सफर में बहेरार राहिब ने आप को देख कर पहचान लिया था और आप का हाथ पकडकर कहने लगा। ये सारे जहान का सरदार है, रब्बुल आलमीन का रसूल है, अल्लाह इसको सारे जहान का रसूल बना कर भेजेगा।) जब आप शाम पहुँचे वहीं एक राहिब नस्तूरा खानकाह के करीब उतरे। वह राहिब मैसरह की तरफ आया और कहने लगा, ऐ मैसरह यह कौन है जो इस दरख्त के नीचे उतरा है। मैसरह ने जवाब दिया। यह अहले हरम में से कुरैश मे से है। इस पर राहिब ने कहा, सिवाय नबी के उस दरख्त के नीचे कभी कोई नही उतरा। फिर उसने पूछा क्या उनकी ऑखो मे सुर्खी है? मैसरह ने कहा हाँ। और कभी दूर नही होती। यह सुनकर राहिब बोला यह वही हैं और यही आखिरूल अम्बिया है। काश मैं उनको पाता जिस वक्त यह मबऊस होंगे और मैसरह से कहा उन से जुदा न होना और नेक नियती से उनके साथ रहना क्योंकि अल्लाह ने उनको नबूवत का शर्फ अता किया है। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम खरीद व फरोख्त कर के मक्का वापस तशरीफ ला रहे थे तो हजरत खदीजा चन्द औरतों के हमराह एक बाला खाना मे बैठी हुई आप को देख रही थी। उन्होंने देखा दो फरिश्ते आप के सर मुबारक पर धूप से साया किये हुए थे। मैसरह ने हज़रत खदीजा से बयान किया कि मैं ने तमाम सफर मे आप का यही हाल देखा है और राहिब के कौल व वसीयत की खबर दी, और अल्लाह ताला ने इस बार भी तेजारत मे दोगुना फायदा अता फरमाया। हजरत खदीजा ने जो देखा व सुना इससे साफ जाहिर हो गया कि आप बेशक सारी मखलूक की तरफ अल्लाह के भेजे हुए हैं।

हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह

हज़रत ख़दीजा की दो शादियाँ पहले हो चुकी थीं। इस वक्त बेवा थीं। इफ्फत व पाक दामनी के सबब से लोग दौरे जाहिलियत में भी उनको ताहिरा कहा करते थे, उनका सिलसिला नसब पाँचवी पुश्त मे जा कर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मिल जाता है। हजरत ख़दीजा ने यअली बिन उमैया की बहन नफीसा से आप को निकाह का पैग़ाम भेजा और आप ने इस दरख्वास्त की ख़बर अपने चचा अबू तालिब को दी उन्होने क़ुबूल किया और तारीख़े मुतअय्यन पर अबूतालिब और अमीर हमज़ा और दीगर रऊसा–ए–ख़ानदान हजरते खदीजा के मकान पर गये और उनके चचा उमर बिन असला ने और बाज के कौल के मुताबिक उनके भाई उमर बिन खुवैलद ने उनका निकाह कर दिया। बवक्ते निकाह उनकी उमर चालीस साल की थी और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सने मुबारक पच्चीस। अबू तालिब ने निकाह पढाया। निकाह का खुतबा पढ़ा और पाँच सौ दिरहम महर क़रार पाया। यह अल्लाह के रसूल की पहली शादी थी। हजरत खदीजा के वेसाल के बाद नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चन्द और शादियाँ की और तमाम अज़वाजे मुताहिरात के महर पाँच सौ दिरहम पर मुकर्रर हुआ। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तमाम औलाद हजरत खदीजा ही के बतन से हुई। सिर्फ एक साहबज़ादे जिनका नाम इब्राहीम था, हज़रत मारिया क़बतिया के बतन से 8 हि0 में पैदा हुए और 10 हि0 में इन्तिक़ाल फरमा गये।

अज़वाजे मोतहहरात

(रजिअल्लाह अनहुन्न)

नाम	वेसाल	मदफन
ख़दीजा बिन खुवैलद	हिजरत से तीन साल पहले	कोह हजून
सौदा बिन्त जमआ	45हि0 या 55हि0	,, ,,

आएशा बिन्त सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हु	57 हिजरी	जन्नतुल बकीअ
हफसा बिन्त उमर	45 हिजरी	जन्नतुल बकीअ
उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया	59हि0 या 62 हि0 या 63 हि0	जन्नतुल बकीअ
उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफियान	44हिजरी	मदीनतुल बकीअ
ज़ैनब बिन हजश असदिया	20हिजरी	मदीनतुल बकीअ
ज़ैनब बिन्त ख़ज़ीमा	3हिजरी	
मैमूना बिन्त हारिस हेलालिया	51हिजरी	मुसर्रफ़
जवीरिया ख़ज़ाइया मुस्तलकिया	50जिरी	जन्नतुल बकीअ
सफ़िया इसराईलिया	50हिजरी	जन्नतुल बकीअ

औलादे केराम

नाम	सन वेसाल	किसके निकाह में थीं
हज़रत अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हु	क़ब्ले बेसत	
हजरत कासिम रजिअल्लाहो अन्हु		
हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाहो अन्हो		
हजरत ज़ैनब रजिअल्लाहो अन्हा	8 हिजरी	अबुल आस रजिअल्लाहो अन्हु
हज़रत रोकैया रजिअल्लाहो अन्हा		हज़रत उसमान रजिअल्लाहो अन्हु
हज़रत उम्मे कुलसूम रजिअल्लाहो अन्हा	9हिजरी	हजरत उसमान रजिअल्लाहो अन्हु
हजरत फातमा रज़िअल्लाहो अन्हा	11 हिजरी	हजरत अली रज़िअल्लाहो अन्हु

गज़वात और सराया

मोहद्दिसीन और अहले सैर की इस्तिलाह में गज़वा वह लश्कर है जिसमे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बजाते खुद शरीक हुए और अगर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बज़ाते खुद शामिल न हों बल्कि अपने असहाब में से किसी को दुश्मन के मुकाबिला में भेज दें तो वह लश्कर सराया कहलाता है।

गज़वात तादाद में सत्ताईस हैं जिनमें नौ में केताल हुआ। वह यह हैं बद्र, ओहद, मरीसीअ, ख़न्दक़, करीज़ा, ख़ैबर, फतह मक्कह, हुनैन, ताएफ।

सराया की तादाद सैंतालीस हैं।

वालियाने मुल्क को दावते इस्लाम

6 हिजरी जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हुदैबिया से वापस तशरीफ लाये तो 7 हिजरी के शुरू में वालियाने मुल्क को दावते इस्लाम के ख़तूत इरसाल फरमाये। इख़्तेसारन दरज जैल हैं।

1. जोवाला नामा कैसरे रोम के नाम लिखा गया उसके अल्फ़ाज यह थे।

بسم الله الرحمٰن الرحيم. من محمد عبد الله ورسولهٗ الیٰ هرقل عظيم الروم سلام علٰى من اتبع الهدیٰ اما بعد فانی ادعوك بدعايته الاسلام اسلم تسلم يوتك الله اجرك مرتين فان توليت فان عليك اثم الارسين ويا اهل الكتب تعالوا الٰى كلمة سواء بيننا و بينكم الا نعبد الا الله ولانشرك به شيئا ولا يتخذ بعضنا ابعضا اربابا من دون الله فان تولوا فقولوا اشهدو ايانا مسلمون۔

तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के बन्दे और रसूल मोहम्मद की तरफ से हरकुल अमीरे रोम के नाम सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद मैं तुझको दावते इस्लाम की तरफ बुलाता

Scanned by CamScanner

हूँ। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। खुदा तुझको दोहरा सवाब देगा। अगर तूने रूगरदानी की तो तेरी रेआया का गुनाह तुझपर होगा। और अहले किताब आओ ऐसी बात की तरफ जो हममे और तुममें एकसाँ है कि हम खुदा के सिवा किसी की पूजा न करे और उसके साथ किसी को शरीक न करे और हममें से कोई अल्लाह को छोडकर दूसरे को खुदा न बनाये अगर वह नही मानते तो कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मानते हैं।

2. खुसरू परवेज बिन हुरमुज बिन नौशेरवाँ शाह ईरान को यूँ लिखा।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ من محمد رسول اللہ الیٰ کسریٰ عظیم فارس سلام علی من اتبع الھدیٰ وامن باللہ ورسولہٖ واشھد ان لا الہ الا اللہ وحدہٗ لا شریک لہٗ وان محمداً عبدہٗ ورسولہٗ ادعواك بدعایة اللہ عز و جل فانی رسول اللہ الی الناس کلھم لینذر من کان حیا و یحق القول علی الکافرین اسلم تسلم فان تولیت فعلیك اثم المجوس۔

तर्जमा

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ से किसरा अमीर फारस के नाम सलाम उस पर जिसने इस्लाम की पैरवी की और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और गवाही दी कि कोई माबूद बरहक नही मगर खुदा एक जिसका कोई शरीक नहीं और यह कि मोहम्मद उसका बन्दा और रसूल है मैं तुझे दावत खुदाए अज्ज़ व जल्ल की तरफ बुलाता हूँ क्योंकि मैं तमाम लोगो की तरफ खुदा का रसूल हूँ ताकि डराये उनको जो ज़िन्दा हो और साबित हो जाये कलमये अज़ाब काफिरों पर। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। पस अगर तूने न माना तो मजूसियों का गुनाह तुझ पर है।

3. असहमअह नजाशी शाहे हबशह को जो नामए मुबारक लिखा उसके अल्फ़ाज यह हैं।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ من محمد رسول اللہ الیٰ

النجاشی ملك الحبشه سلم انت فانی احمد الیك اللہ الذی لا الہ الا ھو الملك القدوس السلام المؤمن المھیمن واشھد ان عیسیٰ بن مریم البتول والطیبة الحصینة حملت بعیسی فخلقهٗ من روحهٖ ونفخهٗ کما خلق آدم بیدہ والیٰ ادعوك الی اللہ وحدہٗ لا شریك لهٗ والی موالات علی طاعتهٗ و ان تتبعنی وتومن بالذی جائنی فانی رسول اللہ الیك وانی ادعوك و جنودك الی اللہ عزوجل وقد بلغت ونصحت فاقبلوا نصیحتی والسلام علی من اتبع الھدیٰ۔

तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान और नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल की तरफ से नजाशी शाह हबशह के नाम। तू सलामती वाला है। मैं तेरे पास खुदा का शुक्र अदा करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद बरहक नहीं। वह बादशाह है पाक ज़ात सलामत सब ऐब से अमान देने वाला है निगेहबान और मैं गवाही देता हूँ कि ईसा बिन मरियम रूहुल्लाह है और अल्लाह का कलमा जिससे उसने इलक़ा किया। मरियम बतूल अफीफा की तरफ उसने ईसा को उठाया। पस खुदा ने उसे पैदा किया अपनी रूह से और उसके फूँकने से जैसा कि पैदा किया आदम को अपने हाथ से और मैं तुझे बुलाता हूँ अल्लाह की तरफ जो वहदहू लाशरीक है और उसकी एताअत पर मुवालात की तरफ और यह कि तू मेरी पैरवी करे और ईमान लाये उस चीज पर जो मुझे मिली क्योकि मैं तेरी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ। और मैं तुझको और तेरे लश्कर को अल्लाह अज्ज व जल्ल की तरफ बुलाता हूँ। मैंने पहुँचा दिया और नसीहत कर दी। तुम मेरी नसीहत को कबूल करो। वस्सलामो अला मनित्तबल होदा।

4. मक़ूकस वालिए मिस्र हरकुल कैसर रोम का बाजगुजार को यह मुबारक वाला नामा तहरीर फरमाया।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ من محمد عبد اللہ ورسولہٗ الیٰ المقوقس عظیم القبط سلام علی من اتبع الھدی اما بعد فانی ادعوك بدعایة الاسلام اسلم تسلم یوتك اللہ اجرك

Scanned by CamScanner

مرتين فان توليت فعليك اثم القبط يا اهل الكتاب تعالوا الى كلمة سواء بيننا و بينكم الا تعبد الا الله ولا شريك به شيئا ولا يتخذ بعضنا بعضا اربابامن دون الله فان تولوا فقولوا اشهد وايانا مسلمون۔

तर्जमा

शुरू खोदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और अल्लाह के रसूल की तरफ़ से मक़ूक़स अमीर क़बत़ के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद मैं बुलाता हूँ तुझको दावते इस्लाम की तरफ़। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। तुझको अलबत्ता दोगुना सवाब देगा। अगर तू ने न माना तो तुझपर गुनाह क़बतियो का होगा। ऐ अहले किताब इस बात की तरफ़ आओ। जो हममे और तुममे यकसा है कि हम इबादत न करेंगे मगर अल्लाह की ओर शरीक न ठहरायें इसके साथ किसी और को न बनायें हमसे किसी दूसरे को रब सिवाय अल्लाह के सो अगर वह न मानें तो कहो कि तुम गवाह रहो कि हम हैं मानने वाले।

5. हूजह बिन हनफ़ी साहब यमामह की तरफ़ यूँ लिखा।

بسم الله الرحمن الرحيم۔ من محمد رسول الله الى هوذه بن على سلام على من اتبع الهدىٰ واعلم ان دينى سيظهر الى منتهى الخف والحافر فاسلم اجعل ما تحت يديك۔

तर्जमा

शुरू खोदा के नाम से जो बडा मेहरबार नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ से हूजह बिन अली के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। तुझे मालूम रहे कि अनक़रीब मेरा दीन इस हद तक पहुँचेगा जहाँ तक ऊँट और खच्चर जाते हैं, तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। मैं तेरा मुल्क तुझको दे दूँगा।

6. क़ैसरे रोम की जानिब से हारिस बिन अबी शमर ग़स्सानी हुदूदे शाम का गवर्नर था। गोतए दमिश्क उसका पाय-ए-तख्त था। उसको यह नामए मुबारक भेजा गया।

بسم الله الرحمن الرحيم۔ من محمد رسول الله الى الحارث بن ابى شمر سلام على من اتبع الهدىٰ وآمن به و صدق فانى ادعوك الى ان تو من بالله وحدهٗ لا شريك لهٗ يبقى ملكك۔

तर्जमा

शुरू खोदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ से हारिस बिन अबी शमर के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की और उसपर ईमान लाये। तेरी हुकूमत कायम रहेगी।

7. 8 हिजरी में मन्ज़र बिन सादे हाकिम बहरीन को एक तबीलीगी खत तहरीर फरमाया। जिसके मोतअला के बाद मन्ज़र के साथ वहाँ के तमाम अरब और बाज़ अजम ईमान लाये।

8. वालियान अमान के नाम यह नामए मुबारक तहरीर फरमाया।

بسم الله الرحمن الرحيم۔ من محمد بن عبد الله الى جيفر وعبد ابنى الجلندى سلام على من اتبع الهدىٰ امابعد فانى ادعوكما بدعاية الاسلام اسلما تسلما فانى رسول الله الى الناس كافة لا ينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين وانكما ان اقررتما بالاسلام وليتكما مكانكما وان ابيتما ان تقربالاسلام فان ملكما زائل منكما وخيلى تحل بسا حتكما وتظهر بنوتى ملككما۔

तर्जमा

शुरू खोदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ से जैफर व अब्द जलन्दी के दो बेटों के नाम। सलाम उसपर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद, मैं तुम दोनों को दावते इस्लाम की तरफ बुलाता हूँ। तुम इस्लाम लाओ सलामत रहोगे, क्योंकि मैं

Scanned by CamScanner

तमाम लोगों की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ। ताकि मैं डराऊँ उस को जो ज़िन्दा हो और काफिरों पर हुज्जत साबित हो जाये, अगर तुम इस्लाम का इकरार कर लो तो मैं तुमको तुम्हारा मुल्क दे दूंगा, अगर तुम इकरारे इस्लाम से इन्कार कर दो तो तुमहारा मुल्क तुम्हारे हाथों से निकल जायेगा। और मेरे सवार तुम्हारे मकानात की फिज़ा में उतरेंगे और मेरी नबूवत तुम्हारे मुल्क पर गालिब आवेगी।

नामए कासिदीन के नाम

बादशाहों के नाम	कासिदीन के नाम
शाह हरकुल	हजरत वहिया कलबी
मनजर बिन सादी	हज़रत अब्दुल्लाह हजाफा सहमी
	हजरत हला बिन हजरी
असहमा नजाशी	हजरत उमर बिन उमैया खमरी
मकूकस वालिए मिस्र	हजरत हातिब बिन बलतआ
हूजह बिन अली हनफी	हज़रत सलीत बिन उमर आमरी
हारिस बिन अबी शमर गुस्सानी	हजरत शुजा बिन वहब
वालिान ओमान जैफर व अब्द	हज़रत उमर बिन अलआस

कुछ अहम गज़वात

नाम	तारीख
गजवए बद्र	12 रमज़ान 2 हिजरी
माअरकए सवीक	2 हिजरी
ओहद	3 हिजरी
दौमतुल जन्दल	4 हिजरी
बनू नसीर	4 हिजरी
बनू महारिब बनू सअलबा	4 हिजरी
बद्र–ए–सोगरा	4 हिजरी
बनू मुस्तलक़	5 हिजरी
अहजाब (खन्दक)	5 हिजरी

बनू कुरैजह	5 हिजरी
जंग–ए–खैबर	7 हिजरी
फतहे मक्का	8 हिजरी
हुनैन	8 हिजरी
तबूक	9 हिजरी

वेसाल शरीफ

जब आप की उम्र चालीस साल थी आपको रेसालत से सर्फराज फरमाया गया। यानी हक तआला ने अपना रसूल बना कर सारे आलम की तरफ मबऊस फरमा दिया। "वमा अरसलनाका इल्ला काफ्फ़तन लिन्नासे बशरीरौं व नजीरा।" और कामिल तेइस साल तक आपने बड़ी मेहनत और जांफिशानी और जफाकशी के साथ फराएज–ए रिसालत को अदा फरमाया। और इसके लिये बड़ी बड़ी अजीयते बर्दाश्त कीं। पागल व मजनून का खिताब दिया गया। राह में काँटे बिछाये गये। ज़ख्मों से लहूलुहान किया गया। दन्दाने मुबारक शहीद किये गये। कूड़े करकट डाले गये। लेकिन आपने हमेशा खन्दः पेशानी से इन तमाम मसाएब का मुकाबला किया और यह दुआ फरमाते रहे। "अल्लाहुम्मा इहदे क़ौमी फइन्नहुम ला यअलमून।" चुनान्चे मुद्दते क़लील ही में आपकी तालीम व तरबियत ने खुदा परस्तों की एक बड़ी जमात तैयार कर दी जो आला तरीन एखलाक़ और कामिल तरीन जुहद व तकवा मे इस मर्तबा में थे कि तारीखे आलम इनकी मिसाल पेश करने से आजिज है। ऐलाने नबूवत के बाद तेरह साल तक आपने मक्का मोकर्रमा में क़याम फरमाया। फिर हिजरत के हुक्म के नुजूल के बाद आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये। दस बरस मदीना मुनव्वरा मे क़याम रहा। और इसी दस साल में उन्नीस लड़ाइयाँ भी आप को काफिरों से लड़नी पडीं। मोअजेज़ाते खवारिक़ जो आपसे सादिर हुए उनका शुमार नहीं। इस मौजू पर मुस्तक़िल रिसाले व किताबें तस्नीफ़ की गयी हैं। रहती दुनिया तक कुरआन सब से बड़ा एजाज़ है जो यह चैलेन्ज कराया है।

Scanned by CamScanner

"इन कुनतुम फी रैबिम् मिम्मा नज़्ज़लना अला अब्देना फ़ातू बेसूरतिम् मिम् मिसलेही।" ऐलाने नबूव्वत के बारहवे साल जबकि आप की उम्र शरीफ इक्यावन साल नौ माह की थी आपको मेराज अता की गयी। आसमानो पर तलब किया गया। जन्नत व दोज़ख़ की सैर करायी गयी। आलमे मलकूत के अजायबात और आयाते कुबरा का मुशाहदा करा दिया गया।

जब उम्र शरीफ तिरसठ साल की हुयी और हिजरत का ग्यारहवाँ साल शुरू हुआ तो बारहवीं रबीउल अव्वल को दोशम्बा के दिन चाश्त के वक्त चौदह दिन अलील रहकर इस आलम से रेहलत फरमायी और रफीके आला के जवारे इज़्ज़त मे सकूनत अख़्तियार की। जब रूह ने जिस्म अतहर से आला इल्लीयीन की तरफ परवाज़ की तो यह अल्फाज जबान पर जारी थे।

"अल्ला हुम्मा फीररफीकिल आला।"

हजरत अली (रजिअल्लाहो अन्हो) ने आपको गुस्ल दिया। हज़रत अब्बास व फज़ल बिन अब्बास हुजूर के पहलू बदलने में हज़रत अली की मदद करते थे। और कसम बिन अब्बास ओर ओसामा और हुजूर के गुलाम शोकरान पानी डाल रहे थे। हुजूर के कफन मे तीन सूती कपड़े समूल के बने हुए थे। जिनमे कमीज़ व अमामा न था।

शब चहार शबा मे हुजूर को दफन किया गया ताखीर की वजह कई उमूर थे चुनान्चे मोहाजिरीन व अन्सार मे बैअत के बारे में इख़्तिलाफ पैदा हो गया। इस इख़्तिलाफ का फैसला होते ही इस अम्र में इख़्तिलाफ अदा हुआ कि हुजूर को कहॉ दफन किया जाय। कब्र शरीफ में लहद चाहिए या शिक। आखिर कार हजरत अबूतलहा अन्सारी ने लहद खोदी। नमाज़ जनाजा हुजरा शरीफ के अन्दर ही बग़ैर इमामत अलग अलग पढी गयी। अखीर मे हज़रत सिद्दीक अकबर (रजिअल्लाहो अन्हो) ने जनाज़ा मोकद्दस पर नमाज़ पढी फिर किसी ने न पढ़ी। कि बाद सलात वली फिर एआदा नमाज़ जनाजा का अख़्तियार नहीं। मबसूत इमाम शमशुल आ्एमा सरख़सी में है

ان ابا بيكر رضى الله عنهٗ كان مشغولا بتويتہ الامور

وتسكين الفتنة فكانوا يصلون عليه قبل حضوره وكان الحق لهٗ لانهٗ هو الخليفة فلما فرغ صلى عليه ثم لم يصلى عليه بعدهٗ عليه۔

और बहीक़ी और तिबरानी मोअज्जम औसत में हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रजिअल्लाहो अन्हो से रावी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया

اذا غسلتمونى وكفنتمونى فصلووا على سريرى ثم اخرجوا عنى فان اوّل من يصلي على جبرئيل ثم ميكائيل ثم اسرافيل ثم ملك الموت مع جنوده من الملئيكة باجمعهم ثم ادخلو على فوجا بعد فوج فصلوا على وسلموا تسليما۔

जब मेरे गुस्ल व कफ़न से फ़ारिग़ हो मुझे तख़्त पर रख कर बाहर चले आओ सब से पहले जिब्रईल मुझपर सलात करेंगे फिर मीकाईल फिर इसराफील फिर मलेकुल मौत अपने सारे लश्करों के साथ फिर गिरोह गिरोह मेरे पास हाजिर हो कर मुझपर दरूद व सलाम अर्ज़ करते जाओ।

आखिरी वसीयत जो आपने फरमायी थी वह यह थी कि नमाज की हिफाजत करना और अपने लौंडी और गुलामों के साथ नेक सलूक करना। मुश्रिक़ीन को जजीर–ए–अरब से निकाल देना। मलूक व उमरा के एलची जो तुम्हारे पास आया करे उनको जाएजा व ईनाम दिया करना। हजरत आयशा रजिअल्लाहो अन्हा के हुजरे में जिस जगह आपकी वफ़ात हुई थी वहीं आपकी कब्र शरीफ बनायी गयी।

हुलिया मुबारक

जिन बुजुर्गों ने आपका हुलिया बयान किया उन्होंने हुजूर की सिफ़त की सिर्फ एक झलक का एदराक किया है और हकीकत वस्फ पेश कर सके है न हकीकत वस्फ को। क्योंकि हकीकत वस्फे हुजूर को खलिक़ के सिवा किसी ने नहीं पहचाना।

चुनान्चे इमाम क़ुर्तबी अपनी किताब "अस्सलात" में कये आरिफ का क्या ही अच्छा कौल नकल फरमाया है। कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कामिल हुस्न हमारे

Scanned by CamScanner

लिए ज़ाहिर न हुआ। क्योंकि अगर जाहिर हो जाता तो हमारी आँखें आप के दीदार की ताब न ला सकतीं।

आज़ाए शरीफ में तवस्सुत व एअतदाल जो हुस्न व जमाल का मदार और फ़ज्ल व कमाल का मबना है बतौर कुल्लिया हर जगह मलहूज़ है।

रूये मुबारक

जो जमाले इलाहिया का आइना और अनवारे तजल्ली का मज़हर था। पुर गोश्त और किसी कद्र गोल था।

आँखें मुबारक

- बड़ी और कुदरते इलाही से सुरमगीं और पलकें दराज थीं। आँखों की सफेदी में बारीक सुर्ख़ डोरे थे।

अबरूए मुबारक

दराज और बारीक थीं और दरम्यान में दोनों इस कदर मुत्तसिल थी कि दूर से मिली मालूम होती थीं। इन दोनों के दरम्यान एक रग थी जो गुस्सा के वक्त हरकत में आजाती और खून से भर जाती।

बीनीए अकदस

आपकी नाक मुबारक खूबसूरत और दराज़ थी और दरम्यान में उभराव नुमायाँ था। पेशानी कुशादा और चराग़ की मानिन्द चमकती थी।

गोश मुबारक

हर गोश मुबारक कामिल व ताम थे। कूव्वते बसीर की तरह कूव्वते सेमाअ भी आपको बतरीके ख़र्क आदत ग़ायत दरजा की अता की थी। आसमान के दरवाजे के खुलने की आवाज को भी सुन लेते थे।

दहान मुबारक

फराख़ रूख़्सार मुबारक हमवार दन्दानहाए पतीसीं से

कुशादह और रोशन व ताबाँ। जब आप कलाम फरमाते दन्दानहाए पतीसी से नूर निकलता दिखाई देता। जब आप ज़ेहक फरमाते तो दर व दीवार रौशन हो जाते। आपको कभी जमाई ा आयी।

लोआब-ए-दहन

जख़्मी और बीमारों के लिए शिफ़ा था।

ज़बाने मुबारक

आप अफ्सहुल खल्क थे। और फसाहत मे ख़रिक आदत हद तक पहुँचे हुए थे। आप के जवामेउल कलिम बदाए हुकम अमसाले सायरा व मकातीब व मवाइज मशहूर आफ़ाक मे कलाम शीरीं हक व बातिल मे फर्क करने वाला न हद से कम न हद से ज़्यादा गोया आप के कलाम लडी के मोती हैं जो गिर रहे हैं।

आवाज़ मुबारक

तमाम अम्बियाए केराम खूबरू और खुश आवाज़ थे मगर ऑहुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन सब से ज्यादा खूबरू और खुश आवाज़ थे।

खन्दा व गिरयॅह मुबारक

आप अमूमन तबस्सुम फरमाया करते थे। शाज़ व नादिर ज़ेहक की हद तक पहुँचे और कहकहा कभी न मारते। आप की गिरयए शरीफ में आवाज बलन्द न होती मगर आँसू मुबारक आँखों से गिर पड़ते थे।

सिर मुबारक

बड़ा था। यह वही सर मुबारक है जिसपर कब्ल बअस्त बतरीके अरहास गरमा में बादल साया किये रहता था।

गरदन मुबारक

चॉद की मानिन्द साफ।

Scanned by CamScanner

दस्त मुबारक

कफ़ दस्त व बाज़ू मुबारक पुर गोश्त थे हज़रत अनस फरमाते हैं कि मैंने किसी रेशम या देबा को आपके कफ़े मुबारक से ज्यादा नरम न पाया। जिस शख़्स से आप मुसाफह फरमाते वह दिन भर अपने हाथ में ख़ुशबू पाता। और जिस बच्चे के सर पर आप हाथ फेर देते वह ख़ुशबू में और बच्चो से मुमताज़ हो जाता।

सीना मुबारक

कुशादह था और कल्ब शरीफ़ पहला जिस्मे असरारे इलाहिया व मआरिफे रब्बानिया वदीअत रखे गयें।

शिकम मुबारक

सवाउल बतन वस्सदर थे आपका शिकम व सीना मुबारक हमवार व बराबर थे। न शिकम सीना से न सीना शिकम से बुलन्द था। आपके बोल बराज पाक थे। नीज तमाम फुज़लात भी।

पुश्त मुबारक

साफ व सफेद थे। कि गोया पिघलाई हुयी चाँदी है। हर दोशाना के दरम्यान एक नूरानी गोश्त का टुकड़ा था जो बदन शरीफ के बाकी अजजा से उभरा हुआ था। उसे मोहरे नबूवत या ख़ातिमे नबूवत कहते हैं।

हर दो पायए अकदस

पुर गोश्त और ऐसे कि किसी इन्सान के न थे। और नरम साफ ऐसे कि उन पर पानी ज़रा भी न ठहरता। बल्कि फौरन गिर जाता।

एड़ियाँ

कम गोश्त हर दोसाक़ मुबारक बारीक सफेद व लतीफ गोया खजूर का गाफा हैं। जब आप चलते तो कदम मुबारक को

कूवत और वकार व तवाज़ोह से उठाते। जैसा कि अहले हिम्मत व शुजाअत का कायदा है।

क़द मुबारक

न बहुत दराज थे न कोताह कद, बल्कि म्याना क़द। माइल बदराज़ी थे। मगर जब लोगों के साथ होते तो सब से बलन्द व सर्फराज़ होते। आपकी कामते जेबा का साया न था।

रंग मुबारक

रग मुबारक गोरा रोशन व ताबां मगर उसमे किसी कदर सुर्ख़ी मिली हुयी।

जिल्द मुबारक

आपकी जिल्द मुबारक नरम थी। एक वस्फ हुज़ूर में यह था कि ख़ुशबू लगाये बगैर आप से ऐसी ख़ुशबू आती थी कि कोई ख़ुशबू उसको पहुँच न सकती थी।

मूये मुबारक

न तो बहुत घुंघराले थे न बिल्कुल सीधे बल्कि बैन बैन थे। इन बालों की दराजी में मुख़्तलिफ़ रवायात आयी हैं। कानों तक कानो के निस्फ तक कानों के लौ तक शाने मुबारक के नज़दीक तक इन सब रवायतों में ततबीक यूं है कि उनको मुख़्तलिफ औकात व उसूल पर महमूल किया जाये। यानी जब आप कटवा देते तो कान तक रह जाते । फिर बढकर निस्फ गोश या नरमए गोश, या शाना तक पहुँच जाते। दाढी मुबारक घनी थी उसमें कंघी करते, आइना देखते सोने से पहले आँख मे तीन तीन बार सुर्मा डालते। मूँछ मुबारक को कटवाया करते। उम्र शरीफ के अख़ीर में आप की रेश मुबारक और सर मुबारक में तकरीबन बीस बाल सफेद थे। गले और नाक के दरम्यान बालों का एक बारीक ख़त था।

लिबास

Scanned by CamScanner

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आम लिबास चादर कमीज और तहबन्द था। यमनी चादरें बेहद पसन्द फरमाते थे। बाज़ अवकात ऊनी जुब्बा शामिया इस्तेमाल फरमाया जिसकी आसतीन इस कदर तंग थी कि वज़ू के वक्त हाथ आस्तीनो से निकालने पड़ते थे। सफेद लिबास पसन्द फरमाया और सुर्ख लिबास ना पसन्द फरमाते थे।

अमामा

अमामा का शिमला छोड़ा करते और कभी न छोडते। अमामा अकसर सियाह रंग का होता था। नालैन शरीफ़ चप्पल की शक्ल की थी।

जब से देखा है लिबासे बशरी में तुमको
हर फरिश्ते की तमन्ना है कि इन्साँ हो जाये

अदब गाहेस्त जेरे आसमाँ अज अर्श नाजुक तर
नफ्स गुम करदा मी आएद जुनैद व बायजी ईंजा

☆☆☆

जामेआ दारुस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।
उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना करैली इलाहाबाद

अफज़लुल बशर बादल अंबियाए
बित्तहकीक़

११ हि० ता १३ हि०

सैयदना अबूबकर सिद्दीक़

रज़िअल्लाहो अन्हो

की

मज़हबी व सियासी किरदार का मुकम्मल तज़केरह

अज़

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी
बानी अफज़लुल मदारिस इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

सैयदना अबूबकर सिद्दीक

रजिअल्लाहो अन्हो

नामः अब्दुल्ला बिन अबी कहाफा उस्मान बिन आमिर बिन उमर बिन कअब बिन सअद बिन तीम बिन मर्रह इब्न कअब बिन लुई बिन ग़ालिब अलकुरैशी अलयतीमी।

मर्रह पर आ कर आप का सिलसिलए नसब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मिल जाता है। (कालन्नूदी आफ़ी तहज़ीबही)

हजरत अबूबकर सिद्दीक रजिअल्लाहो अन्हो का नाम अब्दुल्लाह है यही सही है और बाज़ ने कहा कि अतीक़ नाम था। और जिस पर तमाम उलमा हैं यह है कि लक़ब अतीक था। इस लिए कि आपको जहन्नम से आजादी की बशारत दी गयी। (कमा वरद फ़ी हदीसिम रवाहु तिरमिज़ी)

और बाज़ ने कहा अतीक़ लक़ब की वजह एताकतह वजहिहि यानी हुस्न व जमाल है।(कालहु अल मसअब बिन जुबैर वल्लैस बिन सअद व जमाअतः)

सिद्दीक

उम्मत का इस बात पर इजमा है कि आपका लक़ब जो सिद्दीक पड़ा इस की वजह यह है कि आपने सब से पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसदीक़ की।

वेलादत

रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वेलादत तैयबा के दो साल चन्द महीनों के बाद सैयदना सिद्दीके अकबर रजिअल्लाहो अन्हो की वेलादत बा सआदत हुई आप मक्का मोकर्रमा में पैदा हुए। ये अपनी कौम में साहबे अज्ज व हशम और माल व दौलत में मुमताज तरीन लोगों में से थे।

ज़ुबैर इब्न बोकार और इब्न असाकर ने मअरूफ बिन खरबूज से रवायत की है कि अबू बकर सिद्दीक उन ग्यारह हज़रात में से एक है जिन मे जाहिलियत और इस्लाम की शराफत दोनों ही पाई गयी। यानी दोनों ही दौर में साहिबे फज़्ल व कमाल रहे।

हालात

अबू नईम ने बसनदे जैयिद नकल की है कि आप ने ज़मानए जाहिलियत मे भी शराब नहीं पी। और अपने ऊपर शराब हराम कर ली थी।

सफर व हजर हमा वक्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हमराह आप रहते थे यहाँ तक कि शबे हिजरत भी आप के साथ साथ थे जिसका बयान आयते करीमा मे है। "सानियस नैने इज होमा फिलग़ारे इज यक़ूलो लेसाहेबेहि ला तहज़न इन्नल्लाहा मअना।" अहमद व हाकिम ने अली रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया बद्र के दिन मेरे और अबू बकर के बारे में कि "मआ अहदोकोमा जिबरईला व मअल आखिरे मीकाईला।" यानी तुममें एक के साथ जिबरईल हैं और एक के हमराह मीकाईल।

आपकी शुजाअत

बजाज़ ने अपनी सनद में हज़रत अली रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की

اخبرنی باشجع الناس قالو الانعلم فمن قال ابوبکر
انہٗ لما کان یوم بدر فجعلنا لرسول الله صلی الله علیه وسلم
عریشا فقلنا من یکون مع رسول الله صلی الله علیه وسلم
لئلا یهوی الیه احد من المشرکین فوالله ما دفی منا احد الا
ابابکر شاهراً یا یسف علی راس صلی الله علیه وسلم لا
یهوی الیه احد الاهوی الیه نحفوا شجع الناس۔ (ملخصاً)

तर्जमा

हजरत अली ने फरमाया मुझे बताओ लोगों मे सब से ज़्यादा बहादुर कौन है लोगों ने कहा हम नहीं जानते लेकिन आप बतायें। फरमाया अबू बकर हैं क्योकि बद्र के दिन हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए एक झोपड़ी बनाई। तो हमने कहा कौन मुशरेकीन से आपकी हेफ़ाज़त करेगा। तो सिवाय अबू बकर के हममें से कोई तैयार न हुआ। आप रात भर तलवार सोंत कर बेदार रहे। कोई मुशरिक न झुकता आप पर मगर आप उस पर टूट पड़ते तो वह तमाम लोगों में बहादुर हैं।

आपकी सख़ावत

आप अजूदुस्सहाबा थे। यानी सहाबा केराम में सब से ज़्यादा सख़ी। इब्ने जूज़ी ने कहा "वसायोजन्नबोहल अस्क़ल्लज़ी यूती मालहू।" तीज़की के बारे में इत्तेफ़ाक़ है कि आप ही के बारे में नाज़िल हुई। अबूहुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो से मर्वी है कि रसूलल्लह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "मुझे किसी के माल ने इतना नफ़अ न पहुँचाया, जितना कि मुझे अबू बकर के माल ने नफ़अ पहुँचाया।" इस पर अबूबकर रो पड़े और अर्ज़ की कि मैं और मेरा माल सब तो आप ही के लिए है। या रसूलल्लाह इब्ने असाकर ने मोतअ़दिद तरीक़ से हज़रत आयशा व उरवा इब्ने जुबैर से रवायत की कि जिस दिन अबू बकर ईमान लाये। आप के पास चालीस हज़ार दिरहम या दीनार थे। उसे आप ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर खर्च कर डाला। अबू दाऊद व तिर्मिज़ी ने उमर बिन ख़त्ताब से रवायत की। हम लोगों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुक्म दिया कि सद्क़ा करें तो मैंने अपने कुल माल का निस्फ़ सरकार की बारगाह मे पेश कर दिया। और सोचा कि आज अबू बकर पर सबकत ले जाऊँगा। रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया। ऐ उमर अहल के लिए क्या छोड़ा अर्ज की निस्फ़ माल। और अबू बकर अपना सारा माल व असबाब

लाये और हुजूर की बारगाह में पेश कर दिया। सैयदे आलम ने इरशाद फ़रमाया। तुमने घर के लिए क्या छोडा। अर्ज की मैं ने उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल को बाकी रखा। इस पर उमर ने कहा मैं कभी भी इनपर सबक़त नहीं कर सकता।

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस

आपका इल्म

आप आअलमुस्सहाबह थे यानी सहाबा में सब से ज़्यादा इल्म व ज़कावत आप में थी। चुनान्चे बिन उमर से मरवी है कि उनसे पूछा गया। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाने मे कौन लोग फतवा देते थे तो कहा अबू बकर व उमर और उनके ग़ैर को नहीं जानता।

बोख़ारी व मुस्लिम ने अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोगों में खुतबा दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने एक बन्दे को दुनिया वमा इन्दहू के दरमियान अख़्तियार दिया। तो उस बन्दे ने इन्दल्लाह को अख़्तियार किया। तो अबू बकर रोने लगे और अर्ज की हमारे बाप व मॉए आप पर कुर्बान हो जाएं। तो हम लोगों को आप के रोने पर तअज्जुब हुआ। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खबर दिया। उस बन्दे के बारे में जिसको अख़्तियार दिया तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ही वह अब्द मुख़ि्य्यर थे और अबू बकर हम में सब से ज़्यादा इल्म वाले तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया। सब से ज़्यादा मेरे सोहबत में अमीन और अपने माल में अबू बकर थे और अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को दोस्त बनाता तो अबू बकर को दोस्त बनाता लेकिन इस्लाम की अख़ूवत व मोहब्बत के तमाम दरवाजे मस्जिद की तरफ से बन्द कर दिये जाँय सिवाय अबू बकर के दरवाज़े ले कर।

इब्न कसीर ने कहा "वकानस्सिद्दीक़ो अकरअस्सहाबता ई

Scanned by CamScanner

अल्लमहुम बिलकुरआने लेअन्नहू सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमा कद्दमहू एमामन लेसलातिन बिस्सहाबतेही मआ़ क़ौलहू यौमुल क़ौमे अक़रअहुम लिकिताबिल्लाह।"

यानी सिद्दीक़ अकबर तमाम सहाबा से अक़रा (ज्यादा इल्म वाले) थे क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको सहाबा का इमाम बनाया। हालाँकि आपकी हदीस है कि जो किताबुल्लाह का सब से ज़्यादा इल्म रखता हो वही इमामत करे और इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत आयशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा से रवायत की قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا ينبغى لقوم فيهم ابو بكر ان يؤمهم غيره- जब अबू बकर मौजूद हों तो गैर की इमामत मुनासिब नहीं। आप इन्साब कुरैश के बहुत बडे आलिम थे और ताबीर ख्वुया मे भी काफी महारत थी। मोहम्मद बिन सरी का इरशाद है (كان ابو بكر اعبر هذه الامة بعد النبى صلى الله عليه وسلم- اخرجه ابن سعيد) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद अबूबकर इस उम्मत के सब से बड़े मोदब्बिर थे तमाम सहाबा में अक्ल व राय के ऐतबार से अकमल थे। इमाम राजी ने अपनी फवायद में और इब्न असाकर ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस से रिवायत की मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुना आपने फरमाया मेरे पास जिबरील आये और कहा आपको अल्लाह तआला हुक्म फरमाता है कि अबू बकर से मशवेरा करें (तारीखिुल खुलफा)। आप उन सहाबा में से एक हैं जो पूरे कुरआन के हाफिज थे।

आप सहाबा में सब से अफ्ज़ल थे

अहले सुन्नत का इसपर इजमा है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद सब से अफ्ज़ल अबूबकर फिर उमर फिर उस्मान फिर अली रजिअल्लाहो अन्हुम। अहमद वगैरह ने हजरत अली से रिवायत किया इस उम्मत मे सब से बेहतर नबी के बाद अबू बकर हैं और उमर हैं। ज़हबी ने कहा ये अली से मोतवातिर है अल्लाह रवाफिज़ पर लअनत फरमाये उन्हें किस चीज ने जाहिल बना दिया। इब्न असाकर ने अब्दुर्रहमान बिन

लैला से तखरीज की कि हज़रत उमर ने मिम्बर पर चढ कर फरमाया "अफ्जलो हाजेहिल उम्मते बादो नबीएहा अबू बकर।" यानी नबी के बाद इस उम्मत में सबसे अफजल अबू बकर हैं और जो इसका ग़ैर कहता है तो वह मुफ्तरी है उस पर वही गुनाह होगा जो मुफ्तरी पर है और इब्न अबी लैला से तखरीज की। उन्होने कहा हजरत अली ने फरमाया। मुझको न फज़ीलत दे कोई अबू बकर व उमर पर वरना उसको कोड़े लगाऊँगा। मुफ्तरी की तरह। अबू दाऊद से मरवी है कि न तुलूअ हुआ सूरज और न गुरूब हुआ किसी पर जो अबू बकर से अफजल हो। मगर यह कि नबी हो। यानी नबी ही अफ़ज़ल है, और नबी के बाद उम्मत में सब से अफ़ज़ल अबू बकर हैं।

वह आयात जो आपकी मदह में नाज़िल हुई या आपकी तसदीक में

ثَانِىَ اثْنَيْنِ فِى الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ

इस पर मुसलमानो का इजमाअ़ है कि साहिबे मज़कूर से मुराद अबू बकर है और इब्न अबी हातिम ने इब्न मसऊद से रवायत की। जब हज़रत सिद्दीक अकबर ने हजरत बिलाल को उमैया बिन खलफ़ से खरीद कर आज़ाद कर दिया तो आयत नाजिल हुयी। وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى से اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى सअयकुम से मुराद अबू बकर और उमैया की सई है। فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى यह भी आप ही के बारे मे नाजिल हुई। तिबरानी ने उरवह से रवायत की। अबूबकर सिद्दीक ने सात ऐसे गुलामो को आजाद किया जिन्हें अल्लाह की राह में अजाब दिया जा रहा था। उन्हीं के बारे में यह आयत नाजिल हुई। وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى اِلٰى आखिर सूरत। बजाज़ ने अब्दुल्ला बिन जुबैर से रवायत की وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى अखीर सूरत तक अबू बकर सिद्दीक ही के बारे में नाजिल हुई। हाकिम ने इब्न अब्बास से रवायत की कि अल्लाह तआ़ला का कौल وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ यह अबू बकर और उमर के

बारे में नाजिल हुई। इब्न मशूजब से है कि وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ अबू बकर ही के बारे में नाजिल हुई। तिबरानी ने अवसत में इब्न उमर इब्न अब्बास से रवायत की وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ यह अबू बकर और उमर के ही बारे में नाज़िल हुई। मुजाहिद से रवायत है कि जब اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ यह आयत नाजिल हुई तो अबू बकर ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह नही उतारा अल्लाह ने आप पर कोई चीज़ ,मगर हमको उसमें शरीक़ किया। तो यह आयत नाजिल हुई هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰئِكَتُهٗ और अली बिन हुसैन से मरवी है कि अबू बकर व उमर व अली के बारे में यह आयत नाज़िल हुई , وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِيْنَ और बिन अब्बास से मरवी है कि अबू बकर सिद्दीक के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ से وعد الصدق الذى كانوا يوعدون तक इब्न ऐनॉ से मरवी है कि अल्लाह ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में तमाम मुसलमानों पर एताब फरमाया। मगर अबू बकर तनहा वह मआतबा से खारिज हैं और इस आयत की तेलावत फरमायी। الا تنصروه فقد لنصره الله اذا خرجة الذين كفروا ثانى اثنين اذهما فى الغار-

आपके बारे में जो फज़ायल हदीस में वारिद हैं

अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो अन्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया। हर नबी के दो वज़ीर अहले समॉ से और दो वज़ीर अहले ज़मीन से रहे तो वह मेरे दोनो वजीर जो अहले समॉ से हैं वह जिबरईल और मीकाईल हैं और दो वजीर जो अहले अर्द से हैं तो वह अबू बकर व उमर हैं। इब्न उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम निकले तो मस्जिद में दाखिल हुए और अबू बकर व उमर में से एक आपके दाहिने दूसरे बाएँ तरफ थे और आप दोनो के हाथ पकड़े हुए थे और आपने फ़रमाया इसी तरह हम क़यामत के दिन उठेंगे। अम्मार बिन यासिर रजिअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया मेरे पास जिबरईल आये तो मैं ने फ़रमाया उमर इब्न खत्ताब की फज़ीलत बयान करो। जिबरईल ने कहा कि अगर मैं आपसे इतनी मुद्दत तक उमर की फ़ज़ीलत बयान करूँ जितनी मुद्दत तक हजरत नूह अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत में ठहरे तो उमर के फजाएल खत्म न होंगे और बेशक उमर व अबू बकर की नेकियो में से एक नेकी है। तिबरानी ने सहल रजिअल्लाहो अन्हो से तखरीज की कि जब जब नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हुज्जतुल विदाअ से वापस हुए। मिम्बर पर तशरीफ़ लाये. अल्लाह की हम्द व सना बयान की फिर कहा ऐ लोगो बेशक अबू बकर ने मुझे कभी ग़म न पहुँचाया। लेहाज़ा इन्हें पहचानो। ऐ लोगो ! मैं इन से राज़ी हूँ और उमर उस्मान अली तलहा जुबैर सअद अब्दुर्रहमान बिन औफ से और मुहाजिरीने अव्वलीन से लेहाज़ा इन्हें पहचानो (रज़िअल्लाहो अन्हुम) इब्न मसऊद से रवायत है कि अबू बकर व उमर की मअरफ़त और उनकी मोहब्बत सुन्नत से है।

(तारीखुल खोलफा)

अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत है कि मैंने सुना रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए कि जिसने अल्लाह की राह में जोडा खर्च किया वह जन्नत के दरवाजों से बुलाया जायेगा तो जो नमाज़ी है नमाज़ के दरवाज़े से जो अहले जेहाद है जेहाद के दरवाज़े से बुलाया जायेगा। जो सदका वाला है सदक़ात के दरवाजे से जो रोज़ादार है वह उस दरवाज़े से जिसका नाम रेयान है। तो अबू बकर ने कहा क्या कोई ऐसा भी है जो इन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जायेगा। फ़रमाया कि हॉं। और मुझे उम्मीद है कि तुम इनमें से हो ऐ अबू बकर। अबू हुरैरह ही से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम ऐ अबूबकर ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में जाओगे। आप ही से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि आज के दिन तुममें से किसने रोजा रखा। अबू बकर ने अर्ज़ की मैंने। फ़रमाया कि कौन जनाज़े में शरीक हुआ। अर्ज़ किया मैने।

Scanned by CamScanner

फ़रमाया मिसकीन को किसने खाना खिलाया। अर्ज़ की मैंने। फ़रमाया मरीज की किसने अयादत की। अर्ज़ की मैने। फिर फ़रमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह सब बातें जिसमें जमअ़ हुई वह जन्नत मे दाख़िल हो गया।

सलफ़ सालेहीन के इरशादात

जाबिर से मरवी है कि हज़रत उ़मर इब्न खत्ताब ने फ़रमाया। अबू बकर सैयदना। अबू बकर हमारे सरदार हैं। हजर उ़मर ने फ़रमाया अगर अबू बकर के ईमान को अहले हक़ के ईमान के बराबर किया जाए तौल कर तो अबू बकर का ईमान भारी होगा। हजरत अली का इरशादे गेरामी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद सबसे बेहतर अबू बकर व उ़मर हैं। मेरी मोहब्बत और अबू बकर व उमर का बोग़्ज़ किसी मोमिन के दिल में जमा नही होगा। रबीअ इब्न अनस से मरवी है कि उन्हों ने कहा हमने अम्बिया के सहाबा मे नजर किया तो हम ने किसी नबी को नहीं पाया जिनके साहब अबू बकर सिद्दीक़ की तरह हों। अबू हुसैन से मरवी है कि आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में नबियों और रसूलों के बाद अबू बकर सिद्दीक़ से अफ़जल कोई पैदा न हुआ।

इब्न असाकर ने शोअबी से नकल किया कि अल्लाह तबारक व तआला ने आपको चार ऐसी खस्लतों से खास फरमाया जो और लोगो मे नहीं। (1) आपका नाम सिद्दीक़ रखा और यह नाम किसी का न रखा। (2) आप साहिबे गार थे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ। (3) और आप रफ़ीक थे हिजरत मे। (4) और आपको हुक्म दिया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नमाज के लिए हालाँकि तमाम मुसलमान मौजूद थे।

खे़लाफ़ते सिद्दीक़ की तरफ़ इशारात

तिरमिज़ी ने हुज़ैफ़ा रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की है اقتدوا باللذین من بعدی ابو بکر و عمر मेरे बाद अबू बकर व

उमर की इक्तिदा करो। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशाद لا یبقین باب الاسدّ الاباب ابی بکر وفی لفظ لهما لا یبقین فی المسجد خوخة الا خوخة ابی بکر. मस्जिद की तरफ़ से सिवाय अबू बकर के दरवाजे के तमाम दरवाजे बन्द कर दिये जाएँ। अ़ता ने कहा कि इससे आप की खिलाफत ही की तरफ इशारा है इसलिए कि इससे आप निकल कर मुसलमानो को नमाज पढायेंगे। शेख़ैन ने जबीर इब्न मोतअम से रवायत किया कि एक औरत नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास हाजिर हुयी तो हुक्म दिया उसको लौटने का उसने अर्ज की। मुझे आप बतायें अगर मै आयी और आपको न पा सकी तो। फरमाया अगर मुझे न पाया तो अबू बकर के पास आना।

अनस रजिअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि मुझे बनू मुस्तलक ने भेजा रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की तरफ कि हम यह पूछे कि आप के बाद हम सदकात किसको देगे। तो मैंने हाजिर हो कर पूछा, तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया अबू बकर को देना।

आयशा रजिअल्लाहो अन्हा से मरवी है मुझसे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मर्जे वेसाल में अपने भाई को और बाप को बुलाओ ताकि एक मकतूब लिख दूँ इस लिए कि मुझे अन्देशा है कि कुछ लोग मुतमन्नी होंगे और कहेंगे कि मै ज्यादा हकदार हूँ हालाँकि अल्लाह व ईमान वाले सिर्फ अबू बकर को ही चाहेगे। उलमा ने फ़रमाया इन इरशादाते बाला से ज़ाहिर होता है कि सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हो अलाल इतलाक अफ़जलुस्सहाबह थे। और सबसे ज़्यादा खिलाफत व इमामत के मुस्तहिक़ थे। हजरत हफ़सा रजिअल्लाहो अन्हा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह जब आप बीमार हुए तो आपने अबू बकर को बढ़ाया। इरशाद फरमाया मैंने नहीं बढाया बल्कि अल्लाह ने उनको बढाया और इब्न असाकर ने मोहम्मद इब्न जुबैर से नकल की मुझे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हसन बसरी की खिदमत में भेजा ताकि मैं उनसे चन्द चीज़ें दरयाफ्त करूँ। तो मै हाजिर हुआ और मैं ने कहा मुझे इसमे शफ़ा बख़्श जवाब दे जिसमे लोग मुख्तलिफ है।

Scanned by CamScanner

क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अबू बकर को ख़लीफ़ा बनाया तो हज़रत हसन ठीक से बैठ गये और फ़रमाया क्या वह शक में हैं। لا أبالك हाँ उस अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नही यक़ीनन आप ने उन को ख़लीफ़ा बनाया।

हालात

सब से पहले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर आप ईमान लाये कोई मोअजजा तलब न फ़रमाया। परवर दिगारे आलम ने फ़ितरते सलीमा बख़्शी थी और शहादते ग़ैबिया ने आप को बेअसत का मुन्तज़िर बना दिया था। आपके इस्लाम लाने से इस्लाम को बेहद तक़वियत पहुँची। वह दुशवार तरीन वक्त जबकि इस्लाम का ज़ाहिर करना मसाएब व आलाम को दावत देना था आप ने न सिर्फ यह कि इस्लाम को जाहिर ही फ़रमाया बल्कि तबलीग़ का काम भी शुरू फ़रमाया। कुरैश के सरदारो की एक जमाअत हज़रत उस्मान, हजरत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद इब्न वक़ास फातेह ईरान, अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़िअल्लाहो अन्हुम उन्हीं की हेदायत व तबलीग़ से मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए।

इस्लाम लाने के बाद आपके पास चालीस हजार दीनार थे। उन्हें आपने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत और इस्लाम की एशाअत में सर्फ़ कर दिया। ऐसे सात गुलामों को आजाद कर दिया जो मुसलमान हो जाने की वजह से कुफ़्फ़ार के जुल्म व सितम का निशाना बने हुए थे। जिसमें हजरत बिलाल ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं। नबूवत के इब्तिदाई दौर में जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अलानिया तबलीग़ करने का हुक्म नाज़िल हुआ तो आप ने अर्ज किया या रसूलल्लाह इब्तिदा मुझे करने दीजिए। मुमकिन है मुशरेकीन ऐसी बात सुनें जो अभी तक उनके कानों ने न सुना तो वह अज़ीयत पहुँचाये। चुनान्चे यही हुआ कि आप ने सब से पहले एक अजीब खुतबा पढ़ा जिसमें हक़ तआला और रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रेसालत और शिर्क और बुतपरस्ती की मुज़म्मत

बयान की। यह तकरीर इश्क़ व इरफ़ान में इस तरह डूबी हुई थी कि इसका कुछ अन्दाजा इस खुतबा के अल्फ़ाज़ से होता है। यह सब से पहला खुतबा था जो इस्लाम मे पढ़ा गया। इसके बाद मुशरिकीन ने जो तकलीफे हज़रत सिद्दीक अकबर को दीं और आपने जिस ज़ौक के साथ इन ईज़ाओं को बर्दाश्त किया वह बजाए खुद एक दफ़्तरे इश्क व इरफ़ान है। इस्लाम कुबूल करने के बाद आपने अपने घर के सामने एक मस्जिद बनायी जिसमें रोजाना सुबह को उठ कर तिलावते कलामे पाक करते थे। कुरआन मजीद वह भी सिद्दीक़ अकबर की जबान से। सुनने वालों का हुजूम जमा होता था। नामुमकिन था कि किसी न किसी पर असर न हो। रोजाना यही मशग़ला देखकर कुफ़्फार ने मज़ाहमत शुरू कर दी। आपने नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इजाजत से हबशा की तरफ हिजरत की नियत से रवाना हुए। रास्ते में इब्नुद्दग़ना काफिर कुरैश के तजिर से मुलाक़ात हुई। वह असरार कर के वापस ले आया। और कुरैश के सरदारो से कहा कि क्या तुम ऐसे मोअज़्ज़िज़ शख़्स को निकाले देते हो जो बे देखी हुयी चीज़ यानी सवाब व आख़िरत को कमाता है। सिला रहम करता है और लोगों की गमख़्वारी करता है और मेहमानो की जियाफ़त करता है। अच्छा अब मैं इनको अमान दे कर लाया हूँ। कोई इसे मज़ाहमत न करना। तमाम कुफ़्फ़ार ने इब्नुद्दग़ना की अमान को मन्जूर कर लिया लेकिन सिद्दीक़ अकबर ने कहा कि मैं एक काफ़िर की अमान में नहीं रहना चाहता। मेरे लिए अल्लाह और उसके रसूल की अमान काफ़ी है और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में गये और पूरा किस्सा बयान किया। आपने इरशाद फ़रमाया अब तुम कहीं न जाओ। मुझे भी हिजरत की इजाजत मिलने वाली है हमारे साथ चलना। हजरत सिद्दीक़ ने फिर मक्का में क़याम कर दिया और तिलावते कुरआन मजीद और दावत, रुश्द व हेदायत के दिलरुबा काम में मशगूल हो गये।

Scanned by CamScanner

शोअ़ब अबी तालिब

नबूवत के सातवें साल कुफ्फ़ारे कुरैश ने यह तजवीज मुत्तफ़ेक़ा तौर पर तय की सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आप के साथ आप के सारे खानदान बनी हाशिम को महसूर कर दे और खाना पानी बन्द कर दें। चुनान्चे एक मोआहेदा मुरत्तब हुआ कि कोई शख्स न तो खानदाने बनी हाशिम से क़राबत करेगा और न उनके हाथ खरीद व फ़रोख्त करेगा न उनके पास खाने पीने का सामान पहुँचने देगा। जब तक वह रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़त्ल करने के लिए हमारे हवाले न कर दे। इस मोआ़हेदा पर सब ने तसदीकी अलामात बनाई और उसको काबा मे आवेजा किया ताकि कोई शख्स खेलाफ़े वरजी की जुर्रात न करे मजबूर हो कर आप मय अपने चचा अबू तालिब और सारे खानदान के मक्का से बाहर एक पहाड जो शोअ़ब अबी तालिब के नाम से मौसूम है तशरीफ़ ले गये। आप तीन साल तक इस दर्रा मे महसूर रहे। इस तीन साल मे जो सख्तियाँ आप पर गुजरीं उसकी मिसाल किसी जालिम के जुल्म मे न मिलेगी। जगली दरख्तो की पत्तियाँ खाकर जिन्दगी के दिन पूरे किये गये। बल्कि हक यह है कि ऐसी हालत में जिन्दा रहना खुदा की कुदरत का एक नमूना था। सैयदना सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हो अज़ खुद इस मुसीबत में शरीक हो गये। जब परवरदिगारे आलम ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस मुसीबत से नेजात दी तो उन्होंने भी रेहायी पायी। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मेराज अता की गयी तो सबसे पहले आप ही ने तस्दीक़ की। कुफ्फ़ारे मक्का ने तअन किया कि तुम मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की इस बात को भी हक मानोगे कि वह बेतुल मोकद्दस गये और वहाँ से सातो आसमान की सैर की और उनको मलकूती अजायब वह गरायब दिखाये गये और फिर लौट आये और इतना बड़ा यह सफ़र अक़ल्ले क़लील हिस्सा में रात के तय हो गया। सैयदना सिद्दीक़ अकबर ने इरशाद

फ़रमाया। हम तो उससे ज्यादा बईद अज़ अक़्ल बात मान चुके हैं। वह फ़रमाते हैं कि जिबरईल अलैहिस्सलाम आसमानो से अभी आये और अभी गये। मक़सद यह है जब जनाब जिबरईल अलैहिस्सलाम की आमद व रफ्त हम चश्मे ज़दन में मान चुके तो सैयदे आलम नूरे मोजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नूरानियत व लताफत तो जिबरईल अलैहिस्सलाम से बढ़कर है लेहाज़ा आपकी आमद व रफ़्त में हमको क्या शक हो सकता है। इसी मेराज की तस्दीक के सिलसिले में आपको सिद्दीक का लक़ब अता हुआ।

मोकम्मल तेरह साल तक मक्का के कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन की तरफ से हर किस्म के जुल्म व सितम उठा कर जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके असहाब इम्तिहाने इश्क मे कामयाब हो चुके और इल्मे इलाही में इन जलिमों का पैमाना भी लबरेज हो चुका तो आपकी तरफ हुक्मे खुदावन्दी हुआ कि अब आप हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले जायें। इस सफरे हिजरत में अल्लाह तआला और उसके रसूल ने तमाम सहाबा में सिर्फ सिद्दीक़ अकबर को मुन्तखब किया और इस सफ़र में कदम कदम पर जैसी कुछ ख़िदमतें जानी व मानी हज़रत सिद्दीक़ ने किया। इश्क़ व मोहब्बत की दास्तानों में कोई वाकेआ इससे माफौक़ नहीं मिल सकता। इस मुबारक सफ़र में अल्लाह के रसूल ने सिद्दीक़ अकबर का इन्तेख़ाब फ़रमा कर यह बात सब पर ज़ाहिर फ़रमा दी कि उनके एख़लाक व मोहब्बत पर आपको मोकम्मल एतमाद था और यह कि वह सब से ज़्यादा अक़लमन्द मोदब्बिर तजुरबा कार और सब से ज़्यादा शुजाअ़ व बहादुर थे क्योंकि इस खतरनाक सफ़र के रफ़ीक़ में इन सब अवसाफ़ का होना जरूरी था।

जरा इस सफ़र हिजरत पर इजमाली नज़र डालिए। यह कुफ़्फ़ारे मक्का का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़त्ल के लिए जमा होना और मकान का मोहासरा करना। आप का इस मोहासरा से सही वह सालिम निकल जाना, सिद्दीक़ अकबर के घर तशरीफ ले जाना और उन्हें इस सफ़र हिजरत

Scanned by CamScanner

और रेफाक़त की खुशख़बरी सुनाना और जनाब सिद्दीक का फ़ौरन तैयार हो जाना। उनकी साहबजादियों का उजलत के साथ नाश्ता तैयार करना। सिद्दीक़ अकबर का अपनी उन दोनों ऊँटनियों को जो चार माह से इस सफर हिजरत के लिये परवरिश पा रही थी एक मोअ़तमिद राजदार के सुपुर्द करना कि तीन रोज के बाद फ़्लॉ मक़ाम पर ले आना। सैयदे आलम के क़दमे नाज का पैदल चलने के सबब जख्मी हो जाना और सिद्दीक़ अकबर का अपने शाने पर सवार कर के गारे सोर तक ले जाना और वालेहाना अन्दाज में सिद्दीक़ का अर्ज करना कि आप गार के बाहर तशरीफ़ रखे। मैं अन्दर जाकर सफाई कर दूँ। फिर अपने चादर के टुकडे टुकड़े कर के तमाम सूराखो को बन्द करना। और एक सूराख जो कि बाकी रह गया था उसका बाकी रह जाना फिर उसको अपना पॉव लगा कर बन्द करना और उस पॉव मुबारक को सॉप का काटना फिर लोआबे दहन मुबारक से शिफ़ा पाना। वह हजरत सिद्दीक अकबर के नौजवान साहबज़ादे हजरत अब्दुल्लाह का तीन रोज बराबर शब को उस गार में आप के साथ सोना और अन्धेरे मुँह ग़ार से निकल कर चले जाना और दिन भर की खबर शाम को पहुँचाना। वह हजरत सिद्दीक़ के गुलाम आ़मिर बिन फ़हीरह का तीन दिन बराबर बवक्ते शब उस ग़ार में खाना पहुँचाना। वह कुफ्फार का एलान कि जो मोहम्मद (सल्ललाहो अलैहे वसल्लम) को गिरफ्तार कर के लाये उसको सौ ऊँट दिये जायेंगे और इस एलान के बाद कुफ्फारे मक्का का बड़े माहिर शनासों की कयादत में चारों तरफ तलाश में फिरना। फिर कुछ लोगो का तलाश करते करते उस ग़ार के मुँह पर पहुँच जाना और सिद्दीक़ अकबर का उनको देख कर रन्जीदा होना और रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का उनको यह कह कर तस्कीन देना कि "ला तहजन इन्नल्लाहा मअ़ना"। रन्ज न करो अल्लाह हमारे साथ है वह तीन दिन के बाद गार से निकल कर मदीना की तरफ रवाना होना। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊँट पर रदीफ बनना और और चारो तरफ नज़र दौड़ाते रहना। दुआए नबवी से सराक़ा के घोड़े का ज़मीन में

धंस जाना और रहमते आलम की पनाह माँग कर रेहाई पाना। वह जगह जहॉ सिद्दीक़ अकबर का एक चरवाहे से दूध माँग कर लाना और ठंडा पानी उसमें मिला कर हज़रत के सामने पेश करना और असरार कर के पिलाना और बचा हुआ खुद पीना और यह कहना "शरबा हत्ता रज़ैतो" यानी हुज़ूर ने इतना पिया कि मैं खुश हो गया। यह वह वाक़ेआत हैं कि जिसका दिल दर्दे मोहब्बत से कुछ आशना हो वही इनकी क़द्र जान सकता है। चुनान्चे सफ़रे हिजरत में हजरते सिद्दीक़ की रेफाक़त का तज़केरा कुरआन मजीद मे बड़ी शान के साथ है और नबीए अकरम भी उनकी इस ख़िदमत का तज़केरा अकसर फ़रमाते थे। सहीह बुख़ारी शरीफ़ मे है कि–

"ह़मलनी एला दारूल फ़जरा" और वफ़ात से पॉच दिन पहले आपने खुतबा दिया इसमें फरमाया कि जिसने कोई एहसान हमारे साथ किया हमने उसका बदला कर दिया सिवा अबू बकर के कि उनकी खिदमत का बदला कयामत के दिन खुदा देगा।

ग़ज़वात और सिद्दीक़ अकबर

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उन्नीस गज़वात पेश आये। जिनमें सबसे पहले गज़वये बद्र। और सबसे आख़िर ग़ज़वए तबूक था। इन तमाम ग़जवओ में सिद्दीक़ अकबर आपके हमराह रहे और नुमायाँ खिदमते अन्जाम दीं। चन्द बतौर तमसील दर्ज ज़ैल हैं।

(1) ग़ज़वए बद्र जो रमजान 2 हिजरी में हुआ। यह इस्लाम की पहली अज़ीम फ़तह है। इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए चादरें तान कर एक साएबान सा बना दिया गया था। हज़रत सिद्दीक अकबर इसमें आपके साथ रहे और आपकी हिफ़ाजत का खूब खूब हक अदा किया। रात में तलवार हाथ मे ले कर साएबान के चारो तरफ निगेहबानी करते रहे। जब सुबह को जंग शुरू होने वाली थी। इस रात के अख़ीर वक़्त में रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नेहायत बेक़रारी के साथ दुआ़ मॉगना शुरू की। ऐ खलिके आलम अपना वादा पूरा

Scanned by CamScanner

कर। अगर यह मुठ्ठी भर तेरे नाम लेवा इस जगह शिकश्त खा जायेंगे तो फिर रूये जमीन पर तेरी इबादत कभी न होगी। जनाब सिद्दीक़ से जब यह बेक़रारी न देखी गयी तो सायबान ही के अन्दर आ कर सरवरे कायनात के रूये मुबारक को पकड़कर कहने लगे।"कफ़्तोका मिन्ना शिद्दतोका या रसूल" यानी ऐ अल्लाह के रसूल बस फरमायें बस इतनी ही दोआ काफ़ी है और जब सिद्दीक़ के कहने से सरे न्याज उठाया तो तायरे सिदरा हामिल वहियें इलाही हजरत जिबरईल अलैहिस्सलाम वहिये इलाही ले कर खड़े थे कि "सयहजमुल जमओ वयुवल्लूनद दुबुर" यानी जल्द ही इन काफ़िरो को शिकस्त दी जायेगी। और यह पीठ फेर कर भाग जायेंगे। इस जंग में लश्कर का मैमना सिद्दीक़ अकबर ही की मातहती में था। जनाब सिद्दीक़ के लख्ते जिगर हजरत अब्दुल रहमान जिन्होंने अब तक इस्लाम कुबूल न किया था इस लडाई मे मुश्रेकीन के साथ आये थे। जब मैदान में बढ़े तो सैयदना सिद्दीक़ अकबर तलवार खींच कर अपने साहब जादे को अपने हाथ से क़त्ल करने के लिए गये मगर वह जद से बच निकल गये।

(2) ग़ज़वए ओहद 3 हिजरी में वाक़ेअ हुआ। जब मुसलमानों की ही गलत फहमी से इस ग़ज़वा में उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा और यह कयामत खेज खबर कुफ्फ़ार ने मशहूर कर दी कि अल्लाह के रसूल शहीद कर दिये गये तो जो मुसलमान जहाँ थे घिर कर रह गये। उस वक्त हजरत तलहा और हजरत सअद के सिवा आपके पास कोई न था। फिर थोडी देर के बाद दीगर सहाबा अल्लाह के रसूल के पास पहुँच गये। इनमें सबसे पहले पहुँचने वाले सैयदना सिद्दीक़ अकबर ही थे।

(3) ग़ज़वए एहज़ाब जो ग़ज़वए खन्दक़ के नाम से मशहूर है इस में ख़न्दक़ के एक तरफ की मोहाफिजत सैयदना सिद्दीक़ अकबर ही के सुपुर्द थी और इस तरफ से कोई काफिर अबूर न पाता।

(4) ग़ज़वए खैबर में एक रोज़ सिद्दीक़ अकबर सरदारे लश्कर बना कर बाज क़िलों की फतह के लिए भेजे गये। इस रोज की

लड़ाई ने यहूदियों का गुरूर एक हद तक तोड़ दिया।

(5) सरया बनी फजारह मे अल्लाह के रसूल ने आपको अमीर-ए-लश्कर बना कर भेजा जिसमे शानदार फतह हुई और बहुत से कैदी हाथ आये।

(6) फतह मक्का मे अपने वालिदे मोहतरम को मुसलमान कर के हुजूर की खिदमत मे लाये तो आपने फ़रमाया तुमने उन्हें बुढापे मे क्यों तकलीफ दी। मैं खुद आ जाता।

फ़ायदा : सहाबए केराम रिजवानुल्लाहो अलैहिम मे सिर्फ हजरत सिद्दीक ही की जात है जिनके चार पुश्त सहाबी हैं यानी माँ बाप भी और बेटे पोते भी।

(7) 9 हिजरी मे रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको अमीरे हज बना कर भेजा और आप ही ने खुतबए हज भी पढा।

(8) जंग-ए-तबूक में तमाम लश्कर का जायज़ा लेना और इमामते लश्कर दोनों ही का काम आप ही के मोतअल्लिक थे। वह ग़जवा था जिसमें सिद्दीक अकबर ने अपना कुल मालजेहाद के सामान दुरूस्त करने के लिये दिया था।

कुछ अहम उमूर

☆ जब सैयदुल मुर्सिलीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मर्ज़े वफ़ात मे थे तो सिद्दीक अकबर पर खास एनायात व अल्ताफ थे। वफात के पॉच दिन पहले खुतबा पढ़ा और उसमें जनाब सिद्दीक के फज़ायल बयान फरमाये और हुक्म सादिर फरमाया कि मस्जिद मे जिन जिनके दरवाज़े हैं बन्द कर दिये जाएं सिवाए अबू बकर के। फिर रहमते आलम ने उनको अपनी जगह इमाम मोकर्रर फ़रमाया जिसमें आपकी ख़ेलाफ़त क़ी तरफ खुला हुआ इशारा था।

☆ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रूबरू सहाबा आपका अदब व एहतराम करते थे और अगर किसी से खिलाफे अदब कोई बात सादिर हो जाती तो अल्लाह के रसूल को नगवार गुज़रती और मना फ़रमाते। एक बार ऐसा हुआ कि

Scanned by CamScanner

एक बदवी सहाबी सिद्दीक़ अकबर के आगे आगे जा रहे थे तो रहमते आलम ने फरमाया। تمشى بين يدي من هو خير منك तुम उसके आगे चल रहे हो जो तुमसे बेहतर है।

खेलाफते सिद्दीकी़ का बयान

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वेसाल पुर मलाल के बाद सकीफा बनी साएदा मे अन्सार जमा हुए ताकि किसी को खलीफा मोक़र्रर करें। उनका मन्शा यह था कि दो खलीफा बनाये जाएं। एक अन्सार में से हो और दूसरा मोहाजिरीन मे से। लेकिन ज़ाहिर है कि दो ख़लीफा बनाना जाहिर था कि इस क़दर इफ़्तिराक व इन्तिशार का बाइस़ था। इसी वजह से सैयदना सिद्दीक अकबर व फ़ारूक आज़म रजिअल्लाहो अन्हा ने इन्तिजामे ख़िलाफत को सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तदफ़ीन पर मोकद्दम जाना और यही होना भी चाहिए था। चुनान्चे यह दोनों हजरात और चन्द मोहाजिरीन वहाँ तशरीफ ले गये और अन्सार को समझाया। यहाँ तक कि सैयदना सिद्दीक अकबर पर सबका इत्तेफ़ाक़ हो गया और तमाम मौजूदा हजरात ने सिद्दीक अकबर के दस्ते हक परस्त पर बैअत कर ली। और बैअत की इब्तिदा एक अन्सार से हुई। *(तारीखुल खोलफा)*

और दूसरे दिन बैअ़त आम हुई जिनमे तमाम मोहाजिरीन व अन्सान ने आपको खलीफए रसूलल्लाह तस्लीम कर लिया और एक ज़बरदस्त फ़ित्ना व बला जो दो खलीफा के बनने से पडने वाला था मुसलमानो को उससे रिहाई हो गयी। (फअलहम्दो लिल्लाहे अला ज़ालिक)

☆ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वेसाल सहाबए कराम के लिए एक क़यामते कुबरा थी जिसने उनके होश व हवास बेकार कर दिये थे, कोई कोई आप के वफात ही का इन्कार कर रहा था। किसी के मुँह पर खामोशी की मुहर लग गयी थी, कोई बेताब था। सैयदना सिद्दीक अकबर सबसे पहले हुजरए अकदस मे तशरीफ ले गये और सरकार दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रूख़े अनवर से चादर मुबारक को

हटा कर जबीने अतहर को चूमा और सोज दिल व जिगर ने जवाने मुबारक पर यह कलमात जारी किये وابنياه واخليلاه واصفياه यह कह कर बाहर तशरीफ ले आये और एक खुतबा दिया जिसका एक एक लफ्ज मुसलमानो के लिए आबे हयात से कम न था। इस खुतबा मे आयाते कुरआनिया के हवाले थे। "वमा मोहम्मदुन इल्ला रसूलिंन कद खलत मिन कबलेहिर रसूल" से इस्तेदलाल करते हुए आपने फरमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वफात की खबर कुरआन में मौजूद है। आपने यह भी फरमाया "मन काना याबोदो मोहम्मदन फइन्ना मोहम्मदन कद माता वमन काना याअबोदल्लाहा फ़इन्नल्लाहा हत्ता ला यमूतो"। यानी जो लोग मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इबादत करते हैं उन्हें मालूम होना चाहिये कि उनका वेसाल हो गया लेकिन जो अल्लाह की इबादत करते हैं वह मुतमइन रहे उनका अल्लाह ज़िन्दा है कभी न मरेगा। इस खुतबा ने लोगों को बाहोश कर दिया गोया सोते से जगा दिया।

☆ आपके पास जब बहरैन से माले गनीमत आया तो आपने एलान कराया कि जिसका कर्ज सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जिम्मे हो या कोई वादा आपने किया हो वह हमारे पास आये। चुनान्चे हजरत जाबिर आये और एक वादा उन्होने बयान किया जिसको सिद्दीक अकबर ने पूरा किया। और डेढ हजार दिरहम दिये।

☆ इस बात का बडा एहतमाम किया कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिसके साथ जो बर्ताव करते थे उसको कायम रखा जाय।

☆ जब सैयदतुन्निसा फ़ातिमा ज़ोहरा रजिअल्लाहो अन्हा ने आप से मीरास तलब की तो आप ने उनको वह हदीस सुनाई जिसका मफ़हूम यह था कि नबी के माल में मीरास जारी नहीं हो सकती। लेहाजा मीरास तो नहीं अलबत्ता मेरे पास जिस क़दर माल है वह मैं आप के हुजूर हाज़िर किये देता हूँ। वह आप ही का है।

Scanned by CamScanner

☆ सैयदना अ़ली करमुल्लाह वजहहू के लिये बाज़ रवायत से साबित होता है कि उन्होंने बिला तवक्कुफ इब्तेदा ही में बैअत कर ली थी हाफिज इब्न अब्दुल्लाह ने इस्तीआब में हज़रत अली से रवायत की। عن قیس ابن عباد قال قال لی علی بن ابی طالب ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مرض لیا لی وایاما ینادی بالصلوۃ فیقول مروا ابابکر یصلی بالناس فلما قبض رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نظرت فاذا الصلوۃ علم الاسلام وقوام الدین فرضینا لدیناانا من رضی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لدیننا فبایعنا ابابکر۔ कैस बिन एबादा ने कहा मुझसे हजरत अली ने फ़रमाया रसूलल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कई शब व रोज़ बीमार रहे। इन दिनों अजान होती तो आप फरमा देते अबू बकर से कह दो नमाज पढ़ा दें फिर जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वेसाल हो गया तो मै ने गौर किया तो मालूम हुआ कि नमाज इस्लाम का झण्डा है और दीन का रूक्न है। लेहाजा हमने उन्हें अपने दुनिया की पेशवाई के लिये उस शख्स को पसन्द कर लिया जिसको रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमारे दीन की पेशवाई के लिए पसन्द फ़रमाया। पर हमने अबू बकर से बैअत कर ली।

मुर्तदीन से जेहाद

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वेसाल की खबर सुनकर अरब के बाज कबाएल मुर्तद हो गये थे और तरह तरह की बग़ावतें व साज़िशे रोनुमा होने लगीं। बाज नबूवत के झूठे दावेदार उठ खडे हुए जिसमे मुसीलमा कज़्ज़ाब काबिले जिक्र है। हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने इन सब मुर्तिदीन और नबूवत के झूठे मुद्दईयों से जेहाद के लिये कतई हुक्म सादिर फ़रमाया।

तजहीज़ जैशे ओ़सामा

रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी आखिरी वसीयत में हुक्म दिया था कि ओसामा का लश्कर मुल्क शाम की तरफ रवाना कर दिया जाय। इस लिये सैयदना सिद्दीक अकबर ने उसकी रवानगी का हुक्म दे दिया। अगरचे दीगर सहाबा इस मामला मे आपकी राय के मुखालिफ थे और कहते थे कि ऐसे पुर आशोब वक्त में जबकि अन्दरूनी मुल्क मोतअद्दिद कबाएल बगावत के शोले बुलन्द कर रहे हैं लडाई मे पेश कदमी करना विलफेल मुनासिब नहीं। जिस वक्त हजरत उमर ने राय दी कि खलीफाए रसूलल्लाह यह वक्त सख्ती का नही नरमी से काम ली जिए तो आपको जलाल आया और फरमाया اجبار فی الجاھلیت و خوارٌ فی الاسلام۔ यानी ऐ उमर जाहेलीयत में तो तुम बडे खूँखार थे इस्लाम मे आकर ऐसे नरम हो गये, जब दीन कामिल हो चुका और वही बन्द हो चुकी तो क्या यह हो सकता है कि मेरी जिन्दगी में दीन नाक़िस हो जाय। इस पर हजरत उमर ने समझ लिया कि अल्लाह ने उनका सीना खोल दिया है चुनान्चे एक तवील गुफ़्तगू के बाद आपने फरमाया मेरी नाका (ऊँटनी) लाओ मैं खुद जेहाद के लिए जाऊँगा। और ओसामा का लश्कर अभी रवाना हो। खुदा की क़सम अगर चील कौवे मेरे गोश्त नोच डालें तब भी मैं उस लश्कर को न रोकूँगा जिसकी रवानगी का हुक्म रसूले खुदा ने दिया है। चुनान्चे लश्कर फौरन रवाना हो गया और आप अपनी ऊँटनी पर बैठ गये। सबसे पहले हज़रत अली करमल्लाहो वजहहू ले आप से बढकर आपके ऊँटनी की मेहार पकड ली और कहा। ऐ खलीफ़ए रसूलल्लाह हमारा मकसद यह था कि हुक्मे अजली करें। जो कुछ अर्ज़ किया गया बतौर मशवरे के था वरना जो भी आप हुक्म देंगे एताअ़त की जायेगी। *(माखूज़ अज तारीखुल खोलफा)*

हर तरफ फ़ौजें रवाना की गयीं। जो फौज जिस तरफ जाती फतह व नुसरत कामयाबी व कामरानी से वापस होती। हर तरफ से कामयाबी की ख़बरें आने लगीं और इस तरह इस्लाम में जो मोहलिक वबा फैलने वाली थी ख़त्म हो गयी। साल के अन्दर ही मुद्दईयाने नबूवत भी जहन्नम पहुँचा दिये गये। मुर्तदीन का ख़ातमा कर दिया गया। हजरत ओसामा का लश्कर भी दुश्मन की बडी बहादुर फौजो को तह व बाला कर के बडी कामयाबी के साथ वापस आ गया। नतीजा को देख कर सब की आँखें खुल

Scanned by CamScanner

गई। चुनान्चे अबू हुरेरह रजिअल्लाहो अन्हो ने सिद्दीक अकबर के इस कारनामें को इन अल्फाज से बयान किया। "कामा फ़िर्रदते मकामल अम्बिया" यानी सिद्दीक अकबर मुर्तिदों के मामले मे इस मकाम पर खड़े हुए जो नबियो के खड़े होने का था। हज़रत इब्न मसऊद रजिअल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया "हुना फ़िल इब्तेदा व हमदनाहू फ़िल इन्तिहा"।

फ़तूहे शाम व ईराक़

हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने खेलाफत की क़लील मुद्दत में जहाँ और भी बहुत से काम किये वहाँ यह भी किया कि कैसर व किसरा की फतह की बुनियाद डाली जिसकी तकमील सैयदना फ़ारूक आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो के दस्ते हक परस्त पर हुयी। फितनए इर्तेदाद को कुचलने के बाद 12 हिजरी में आप ने इस्लामी फौजों को बजानिबे ईराक रवाना किया। शुरू में हजरते मुसना बिन हारेसा को इस काम पर मोकर्रर किया। फिर हजरत ख़लिद बिन वलीद को उनके इमदाद के लिए भेजा। ईराक मे कई लड़ाइयाँ हुईं। शहर हैरह मुसलमानों के कब्जे में आ गया।

इस्लामी फौजें ईराक में मसरूफ जंग थी कि हज़रत सिद्दीक़ के दिल में जेहादे शाम व रोम का ख़याल पैदा हुआ और तमाम सहाबा को जमा फरमा कर आपने एक नेहायत ही मोअस्सिर बलीग खुतबा पढ़ा। जो जेहाद की तरगीब पर मुश्तमिल था और हुक्म दिया कि रोमियों से जेहाद की तैयारी की जाय। फिर जो फौज मौजूद थी उसको चार हिस्सों में तकसीम फरमाया। एक हिस्सा पर हजरत उमर इब्न आस को सरदार बना कर फिलिस्तीन की जानिब रवाना किया। एक हिस्सा पर अमीनुद्दमता हज़रत अबू उबैदा को सरदार बनाया। और हम्स की तरफ रवाना किया और एक हिस्सा पर शरजील बिन हसीना को सरदार मुन्तखब फ़रमा कर उर्दुन की तरफ भेजा और एक हिस्सा पर यजीद इब्न अबू सुफ़ियान को सरदार बना कर दमिश्क की तरफ रवाना फरमाया। और इरशाद फरमाया कि जब तुम सब एक जगह जमा हो जाओ तो पूरे लश्कर की सरदारी अबू उबैदा को हासिल

होगी इसके बाद हुक्म भेजा हजरत खालिद के लिए कि आप ईराक की मुहिम मुसना इब्न हारसा के सुपुर्द कर के खुद जल्द से जल्द मुल्क शाम पहुँचें और उनको कुल अफवाजे शामिया का सिपेसालारे आजम मोकर्रर फरमा दिया। हरकुल शाहे रोम ने भी अपनी सारी ताकत मुसलमानो के मुकाबले मे जमा कर दी और जमादिल अव्वल 13 हिजरी में वह कयामत खेज़ जंग हुयी जो जगे यरमूक के नाम से मौसूम है। इस लडाई में मुसलमानो को ऐसी अजीमुश्शान फ़तह हासिल हुयी कि रोमियों के हवास बाख्ता हो गये। इस फतह की खुशखबरी सैयदना सिद्दीक़ अकबर को उस वक्त पहुँची जब आप जिन्दगी के आखिरी वक्त में थे।

तदवीने कुरआन

हज़रत सिद्दीक़ अकबर के अहदे हुकूमत का सब से बड़ा और अहम कारनामा यह है कि आप ही के जमाने में क़ुरआन मजीद के मुन्तशिर मज़ामीन को किताब की सूरत दी गयी। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमानए हयात मे तो सहाबए कराम ने कुरआन मजीद को यकजा तौर पर जमा करने की इस लिए ज़रूरत नही समझी क्योंकि उनके पास खुद हादिए कुरआन मौजूद था। चुनान्चे कुरआन करीम की जिस आयत और जिस हुक्म के बारे मे वह इस्तेफ्साद करते थे उनको शाफी व काफी जवाब मिल जाता था लेकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफात के बाद फौरन ही यह महसूस किया जाने लगा कि कुरआन करीम के मुन्तशिर जखीरा को जमा कर लिया जाय। चुनान्चे जगे यमामा मे जब ऐसे बहुत से सहाबा शहीद हो गये जिन्हे कुरआन मजीद की आयते हिफ्ज़ थी। तो हजरत उमर फारूक आजम ने हज़रत सिद्दीक अकबर से अर्ज किया कि कश्त व खून का सिलसिला अगर ऐसे ही जारी रहा तो अन्देशा है कि कहीं कुरआन मजीद का कोई हिस्सा ज़ाया न हो जाय। इस लिए मुनासिब यह है कि आप कुरआन मजीद की तमाम आयते यकजा कराकर तहरीर करा ले। पहले तो इस तजवीज पर हजरत सिद्दीक़ अकबर ने कुछ ताम्मुल किया और

Scanned by CamScanner

फ़रमाया कि जो काम न अल्लाह के रसूल ने किया और न हम को हुक्म दिया। उसे मैं कैसे करूँ लेकिन जब बाद में हजरत अबू बकर ने इस अहम ज़रूरत को महसूस फ़रमाया तो इसके लिये आमादा हो गये और रसूलल्लाह के कातिबे वही हज़रत ज़ैद इब्न साबित रजिअल्लाहो अन्हो को बुला कर सारा कुरआन यकजा कर के एक जगह लिखने का हुक्म दिया। हजरत जैद इब्न साबित ने पत्थर के टुकड़ो ऊँट की हड्डियो हिरन की झिल्लियों और खजूर के पत्तों पर लिखी हुई तमाम आयाते कुरआनी को जमा किया। इसके अलावा हुफ़्फ़ाज के सीने मे जो आयतें महफूज थीं उनको भी सुपुर्दे क़लम किया और इसके बाद रसूलल्लाह के कायम करदा तरतीब के मुताबिक कुरआन की किताबत शुरू कर दी। जहाँ तक कुरआन मजीद के तरतीब का तअल्लुक़ है अल्लाह के रसूल अपनी जिन्दगी ही मे उसे पायए तकमील तक पहुँचा चुके थे। चुनान्चे जब कोई वही नाजिल होती थी तो आप फरमा दिया करते थे कि इस आयत को फ़लॉ सूरत की फलॉ जगह लिख लो। आप ने सूरतो के नाम तजवीज़ कर दिये थे। इस लिये हजरत जैद इब्न साबित को कुरआन की तरतीब क़ायम करने मे कोई दुश्वारी पेश नही आयी और उन्होंने बड़ी एहतियात व तजस्सुस से इस कारनामें को अन्जाम दिया। जब पूरा कुरआन मजीद ज़ब्त तहरीर में आ गया तो यह नुस्खा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को दे दिया गया। उनके वफ़ात के बाद यह गंजे गेरा नुमाया हज़रत फ़ारूक़ आजम के सुपुर्द हुआ। और उनके बाद उनकी बेटी उम्मुल मोमिनीन हजरत हफ़्सा की तहवील में रहा।

अव्वलियात

1. सबसे पहले इस्लाम लाने वाले।
2. सबसे पहले कुरआन को जमा फ़रमाने वाले।
3. सबसे पहले कुरआन को मुसहफ़ के नाम से मौसूम करने वाले।
4. सबसे पहले ऐसे ख़ेलाफ़त के वाली जिनके वालिद बा हयात थे।

5. सबसे पहले बैतुल !ल बनाने वाले।
6. इस्लाम में सबसे ५ ने अतीक़ के लक़ब से मोलक़्क़िब होने वाले।

मरज, वफ़ात, वसीयत आर हज़रत उमर को ख़लीफ़ा बनाना।

हज़रत इब्न उमर से मरवी है कि अबू बकर की मौत का सबब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात थी। आप की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर का जिस्म पिघलता रहा यहाँ तक कि आपका वेसाल हो गया। इब्न सअद इब्न अबी दुनिया ने अबू सफ़र से रवायत की। उन्होंने कहा कि लोग अबू बकर पर उनकी हालते अलालत में दाखिल हुये और अर्ज़ किया। ऐ खलीफ़ए रसूलल्लाह क्या हम आपके लिए कोई तबीब न बुला दें जो आपकी देख भाल करे। आपने फरमाया तबीब ने मेरी देख भाल की। तो लोगों ने कहा "क्या कहा उसने"? आपने फ़रमाया कि उसने कहा "इन्नी फ़आलुल लेमा ओरीद" आपका मकसद यह था कि तबीब अल्लाह तआला है और उसने अपनी किताब में फ़रमाया है "इन्नी फ़आलुल लेमा ओरीद" हम दूसरे तबीब को क्यो तलब करें जबकि वह हर अलील का तबीब है।

वाकेदी ने चन्दतरीक़ से रवायत की कि सैयदना अबू बकर का मर्ज़ जब बढा तो आपने अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ को बुलाया और हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब के बारे में पूछा तो अब्दुर्रहमान ने जवाब दिया कि वह सबसे पहले अफ़्ज़ल है इस मामले में फिर हज़रत उस्मान बिन अफ्फान, सईद इब्न ज़ैद, असीद इब्न हैफर वग़ैरह चन्द मोहाजेरीन व अन्सार से मशविरा फ़रमाया। कुछ लोगो ने यह भी कहा। अपने रब को आप क्या जवाब देगे जब वह आपसे पूछेगा हज़रत उमर को खलीफा बनाने में। दराँहालके कि आप उनकी सुस्ना को देख रहे हैं। हज़रत अबू बकर ने फरमाया खुदा की कसम तुम मुझे खौफ़ दिलाते हो। मैं यह अर्ज़ करूँगा। ऐ परवरदिगार इनमें से सबसे बेहतर को खलीफा बनाया और जो मैं कह रहा हूँ उसे लोगों तक पहुँचा दो। फिर आपने हज़रत उस्मान को बुलाया और फ़रमाया लिखो।

Scanned by CamScanner

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ هذا ما عهد ابو بكر ابن ابى
قحافه اخر عهده بالدنيا خارجا منها وعند اول عهد
بالاخرة داخلا ينها حيث يوئن الكافرويوقن الفاجر ويصدق
الكاذب انى استخلفت عليهكم يعدى عمر بن اكخطاب
فاسمعوالهٗ واطيعواوانى لم ال الله ورسوله ودينه ونفسى
اياكم خيرا فان عدل فذالك طنى به علمى فيه وان بدل ولكل
امرا ما اكسب والخير اردت ولا اعلم الغيب وسيعلم الذين
ظلموا اىّ منقلب منقلبون والسلام عليكم ورحمة الله وبركاة۔

तर्जमा :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह सब से आखिरी अहद है जो अबू बकर इब्न कहाफा ने दुनिया से निकलते वक्त की और आखिरत का पहला अहद है जो आखिरत में दाखिल होते वक्त की। जिस वक्त काफिर ईमान लाता है फाजिर यक़ीन कर लेता है झूठा तस्दीक कर देता है बेशक मैने तुम पर अपने बाद उमर बिन खत्ताब को खलीफा बनाया। उनकी सुनो और उनकी एताअत करो और मैं खुदा, रसूल, दीन और अपने हक मे और तुम्हारे हक मे भलाई से हटना नही चाहा (यानी हत्तल इम्कान तुम्हारे खैर का इरादा किया है) तो अगर उन्होंने अद्ल किया तो यही मेरा इल्म है उनके बारे मे और अगर बदल दिया तो हर आदमी को उसकी कमाई की जजा मिलेगी और मैंने खैर का इरादा किया और मुझे गैब नहीं मालूम।

"वसयअलमुल लज़ीना जलमू अैया मुनकलेबी यनकलेबून। वस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे वबरकातोहू।"

फिर आपने इस मकतूब पर मोहर सब्त करने के बाद हज़रत उस्मान को हुक्म दिया वह इस मक्तूब को लेकर बाहर तशरीफ़ ले गये और लोगों ने आपसे बैअ़त कर ली और इस पर राजी हो गये। फिर हज़रत अबू बकर ने हज़रत उमर को तन्हाई में बुलाया और उन्हें चन्द वसीयते फ़रमाई। और जब वह निकल गये तो आपने दोनों हाथ दुआ के लिए उठाए और अर्ज़ की।

اللّٰهم ان لم ارد بذالك الا صلاحهم وخفت عليهم الفتنة

فاعلمت فيهم بما انت اعلم به وجهدت لهم رأيا فوليت عليهم
خيرهم واقواهم عليهم واحرمهم على ما ارشدهم وقد حضرنى
من امرت ما حضرنا خلفنى فيهم لهم عبادك ونواصيهم بيدك
اصلح اللهم ولانهم واجعله من خلفائك الراشدين واصلح له
رعيته۔

और इब्न असाकर ने यसार बिन हमजा से रवायत की है कि जब हजरत अबू बकर बीमार हुए तो आपने लोगो से कहा ऐ लोगो मै तुमसे एक अहद चाहता हूँ। तो तुम उसे पसन्द करो। तो लोगो ने कहा हम राजी है ऐ खलीफए रसूलल्लाह तो हज़रत अली खडे हुए और उन्होने कहा हम राजी नही होगें मगर यह कि वह हजरत उ़मर हो। आपने फरमाया कि वह हजरत उ़मर ही हैं। अरवह और कासिम इब्न लहद ने रवायत की कि हजरत अबू बकर सिद्दीक़ ने हजरत आयशा को वसीयत फरमायी कि मुझे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पहलू मे दफ्न किया जाय और मेरा सर रसूलल्लाह के शाना के पास हो और लहद को रसूल की क़ब्र से मिला दिया जाय। आपको रात में दफ़्न किया गया। हजरत उमर, तलहा, उस्मान और अब्दुर्रहमान इब्न अबी बकर रिजवानुल्लाहो अलैहिम अजमईन ने क़ब्र मे उतारा।

(माख़ूज अज तारीखुल ख़ोलफ़ा)

अहदे सिद्दीक़ पर एक नज़र

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफात के बाद नक़ली नबियो, मुर्तिदीन और कुफ्फार ने मिल कर इस्लाम की बुनियाद को हिला दिया था और लोग यह समझ रहे थे कि अब इस्लाम का सर जमीने अरब में क़ायम और बरक़रार रहना आसान नही लेकिन इस्लाम दुनिया मे क़ायम रहने ही के लिए आया था। इसे भला कौन सी दुनियावी ताक़त नुकसान पहुँचा सकती थी। चुनान्चा रब्बुल आलमीन ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और सहाबा कराम मे इस तूफान के मुकाबला का हौसला पैदा कर दिया जिस की बदौलत कुफ्र व इलहाद का सैलाब खस व ख़ाशाक की तरह रास्ता से हट गया और इस्लाम

Scanned by CamScanner

फिर एक बार पूरे जाह व जलाल के साथ रौशन व दरख़्शाँ दिखाई देने लगा। इस हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस नाजुक दौर में सैयदना सिद्दीक़ अकबर ने जिस हौसला मन्दी और बेजिगरी का सबूत दिया है वह ताईदे ग़ैबी थी वरना ऐसे मवाकेअ़ पर किसी इन्सान का साबिते क़दम रहना कोई आसान काम नहीं।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने अन्दरूनी फ़ित्नों और बग़ावतों को दबाने के बाद जब बैरूनी फ़तूहात की जानिब रूख़ किया तो इसमें भी आपको नेहायत शान्दार कामयाबियाँ हासिल हुयीं कि आप ने बयक वक्त दुनिया की सबसे बड़ी दो ताक़तें यानी सल्तनते रोम और सल्तनते ईरान से टक्कर ली और सिर्फ टक्कर ही नहीं ली बल्कि उनको तक़रीबन हर मोरचे पर शिकस्त दे कर ममलुकते इस्लामिया के हुदूद को ईराक और शाम तक फैला दिया। कुरआन पाक और सुन्नते रसूल चूँकि हम मामला में अपनी जगह मुकम्मल दस्तूर है इस लिए हजरत अबू बकर सिद्दीक को अपने दौरे हुकूमत में किसी दुनियावी दस्तूर के तरतीब देने की कोई ज़रूरत पेश न आयी। और आपने इसी दस्तूर के मातहत मुख़्तसर अर्सा में ममलुकते इस्लामिया मे वह तरक्कियाँ कर के दिखा दीं जो साल हा साल मे भी मुमकिन न थीं। ममलुकते इस्लामिया के नये नये सूबे मे गये जिसमे बाकायदा शरई नेजामे हुकूमत और शरई एहकामात जारी हो गये। इन सूबों में जो भी हुक्काम मोकर्रर किये जाते थे उनका कुरआन और सुन्नते रसूल की रोशनी में पहले इम्तिहान लिया जाता था। जब वह हुकूमत करने की सलाहियतों में पूरे उतरते थे तो उनको हुकूमत सुपुर्द कर दी जाती थी। मुल्की बाशिन्दों को पूरी आजादी दे दी गयी थी। यहाँ तक कि गैर मुस्लिमों को भी हर किस्म के पूरे हुकूक हासिल थे। ग़रज़ कि आपके अहदे हुकूमत में गो ममलुकते इस्लामिया नौजाइदा थी लेकिन इसमे इस बला की जाज़बीयत और कशिश थी जो पुरानी से पुरानी हुकूमतों में नापैद थी। हजरत सिद्दीक अकबर के दौरे हुकूमत में चूँकि बैरूनी मुमालिक की फतूहात का सिलसिला शुरू हो गया था और बड़ी बडी रक़में

ख़ेराज और माले ग़नीमत के ज़रिए ख़ेलाफ़ते इस्लामिया को मौसूल होने लगी थीं। इस लिए रूपये पैसे की भी कमी नहीं थी लेकिन यह रूपया नेज़ामे हुकूमत, फौजी अख़राजात और अ़वाम की ज़रूरतों के लिए वक़्फ़ था। चुनान्चा हालत यह थी कि आमदनी की एक एक पाई हुकूमत व रेआ़या के फ़लाह व बहबूद पर सर्फ कर दी जाती थी जिसका नतीजा यह निकला कि मुल्क में फ़ारेगुल बाली और खुशहाली बढ़ती चली गयी और अवाम के दिलों मे ममलुकते इस्लामिया का इस क़दर एतक़ाद पैदा हो गया कि हर शख़्स इसे अपनी हुकूमत समझने लगा। जनाब सिद्दीक अकबर के दौरे हुकूमत की मुद्दत कुल सवा दो साल है। यह सवा दो साल का ज़माना क़ौमों की तारीख़ में सवा दो लम्हों के बराबर भी हैसियत नहीं रखता लेकिन हज़रत सिद्दीक अकबर ने इस मुख़्तसर से वक़्फ़ा में न सिर्फ ममलुकते इस्लामिया की बुनियादों को मुस्तहकर कर दिया बल्कि एक ऐसा कामयाब दस्तूरुल अ़मल मुसलमानों के लिए तजवीज किया जिसपर अ़मल पैरा होने के बाद मुसलमान तरक्की के मैदान में बराबर आगे बढते चले गये।

जामेआ दारूस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।

उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना करैली इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुजाहिदीन

सैयदना हज़रत उमर फ़ारूक़

रज़िअल्लाहो अन्हो

१३ हिजरी ता २४ हिजरी

अज़

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

मोसीस जामेआ दारूस्सलाम
इलाहाबाद

हज़रत उमर फ़ारूक़ का अहदे हुकूमत

रज़िअल्लाहो अन्हो

हजरत अबू बकर सिद्दीक की वफ़ात के बाद 23 जमादिस्सानी 13 हिजरी को तमाम सहाबा और मुसलमानों ने बगैर किसी इख़्तिलाफ के हजरत उमर फ़ारूक के हाथ पर बैअत कर ली। इसकी वजह यह थी कि रहमते आलम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़मानए हयात ही से तमाम सहाबा कराम मे हजरत उमर को गैर मामूली इज्जत व अजमत हासिल थी। सब ही आपका एहतराम करते थे और सब ही आपके तकद्दुस तदब्बुर और होशमन्दी के कायल थे।

बोखारी शरीफ़ और सहीह मुस्लिम की रवायत से पता चलता है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुद हजरत उमर फ़ारूक का खेलाफ़त के बारे मे बशारत फ़रमायी थी। चुनान्चे सैयदना अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना एक ख्वाब बयान करते हुए फरमाया कि मैंने अपने आप को एक ऐसे कुएँ पर देखा जिस पर एक डोल पडा था मैने कुछ डोल पानी के खींचे, मेरे बाद अबू बकर ने डोल ले लिया। एक दो डोल खींचने के बाद वह थक गये। फिर उमर आये और फिर इस तरह डोल पर डोल खींचने शुरू किये कि मैंने किसी जवाँ मर्द को इस तरह खींचते हुए नहीं देखा। यहाँ तक कि हर चहार तरफ से प्यासे आये और खूब सैराब हुए। इस हदीस के बारे मे आईमा की राय यह है कि यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के बाद हजरत उमर फ़ारूक के खेलाफ़त के बारे में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशाद था।

हज़रत उमर की इब्तिदाई ज़िन्दगी

अल्लामा नूदी ने कहा कि हज़रत उमर आम्मतुल फ़ील के

Scanned by CamScanner

तेरह साल बाद पैदा हुए। आप कुरैश के अशराफ़ में से थे। ज़मानए जाहिलियत में जब कभी कुरैश और दूसरे क़बीला के दरम्यान लडाई वग़ैरह होती थी तो आप ही ओहदए सेफ़ारत पर मोक़र्रर किये जाते थे। आपने चालीस मर्द और इक्कीस औरतों के बाद या उन्तालीस मर्द और तेईस औरतों के बाद या पैंतालीस मर्द और ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम कुबूल फरमाया। आपके इस्लाम लाने से मक्का में इस्लाम ग़ालिब होता चला गया और मुसलमानों को बहुत ज़्यादा खुशी हासिल हुयी। आप साबेक़ीन अव्वलीन में से एक हैं और अशरए मोबश्शिरा में से, यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दामाद और कुब्बार उलमाए सहाबा और ज़ोहहाद सहाबा में से हैं। आपसे जो हदीसें मर्फूअ मरवी हैं उनकी तादाद पाँच सौ पैंतीस हैं।

हज़रत उ़मर फ़ारूक का इस्लाम

तिर्मिज़ी ने इब्न उ़मर से रवायत की, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया

اللّٰهم اعز الاسلام یاحب هذین ان الرجلین الیك بعمر بن الخطاب اوبابی جهه بن هشام-

इब्न सअ़द और अबू यअला और हाकिम और बहीक़ी ने दलाएल में हजरत अनस रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि हजरत उमर तलवार सोत कर निकले। रास्ते में क़बीलए ज़ोहरा के एक मर्द से मुलाक़ात हुयी, उसने पूछा कहाँ का इरादा है ऐ उमर। कहा, मोहम्मद के कत्ल को जा रहा हूँ। कहा कि तुम मोहम्मद के कत्ल के बाद बनी हाशिम व जोहरा से कैसे बच सकोगे। कहा शायद तुम भी सहाबी हो गये हो। कहा क्या मैं तुम को एक अ़जीब बात बताऊँ। बेशक तुम्हारे बहनोई और बहन मुसलमान हो चुके हैं तो हज़रत उमर उनके पास गये और उन दोनो के पास हज़रत खुबाब मौजूद थे। जब उन्हें हजरत उ़मर का एहसास हुआ तो घर में छुप गये। जब वे घर में दाख़िल हुए तो कहा यह आवाज कैसी थी, कहा ताहा पढ रहे थे। दोनों ने अभी तजकेरा ही किया था कि उ़मर ने कहा शायद कि तुम दोनों

अपने दीन से फिर गये। तो इस पर बहनोई ने अर्ज़ किया कि अगर हक़ इसके ग़ैर ही में था तो क्या मुज़ायक़ा हुआ। इतना कहना था कि हज़रत उ़मर ने बहुत मारा और उनकी बहन छुड़ाने के लिए आयीं तो इतने ज़ोर से उन्हें तमाचा मारा कि उनका चेहरा खून आलूद हो गया और वह गुस्सा मे हो कर बोलीं कि तुम मारते हो हालाँकि हक़ तुम्हारे दीन के ग़ैर ही में है। "इन्नी अशहदो अन लाइलाहा इल्लल्लाहो वअन्ना मोहम्मदन अब्दोहू वरसूलोहू।" फिर उ़मर ने कहा वह किताब लाओ जो पढ रहे थे। हज़रत उमर ने पढ़ना चाहा तो उनकी बहन ने फ़रमाया कि चूँकि आप ताहिर नहीं हैं और इसको सिर्फ ताहिर लोग ही छुयेंगे। इस लिए गुस्ल की जिये या वजू की जिये। तो खड़े हुए और वजू किया, फिर किताब लिया और पढा यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचे "इन्ननी अनल्लाहा लाइलाहा इल्ला इन्ना फ़अबुदनी वअकिमिस्सलाता लेजिकरी।" तो उमर ने कहा मुझे मोहम्मद पर राह बताओ तो जब खुबाब ने उ़मर की बात सुनी तो निकले और फ़रमाया ऐ उ़मर तुम्हें बशारत हो। मुझे उम्मीद है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ जो तुम्हारे हक़ में जुमेअरात को फ़रमायी कुबूल की गयी जो आपने इन लफ़्ज़ों से फ़रमायी। "अल्लाहुम्मा अअज्ज़ल इस्लाम बेउमर बिन अलखत्ताब अव बेअबी जहल बिन हशाम।" और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सफ़ा के क़रीब एक घर में थे तो उमर चले यहाँ तक कि उस घर तक पहुँचे और उसके दरवाज़े पर हमज़ा व त़लहा और कुछ लोग थे। हज़रत हमजा ने फ़रमाया। यह उ़मर हैं अगर इरादा ख़ैर है तो ठीक है वरना उनका क़त्ल करना हमारे लिए आसान है और नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अन्दर थे। आप पर वही का नुजूल हो रहा था। तो आप निकले यहाँ तक कि उ़मर आ गये। आप ने उनका दामन पकड कर फ़रमाया कि क्या तुम्हारे फ़साद का ज़माना ख़त्म न होगा यहाँ तक कि अल्लाह तुम पर रूसवाई व सजा नाजिल फ़रमा दे जैसे कि वलीद बिन मुग़ीरह पर नाजिल फ़रमायी। तो इस पर हज़रत उ़मर ने फरमाया "अशहदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाहो वइन्नका अ़ब्दुल्लाहे वरसूलेही।" आप

Scanned by CamScanner

नबूवत के छठे साल माह ज़िल हज्जा में छब्बीस साल की उम्र में इस्लाम लाये।

हिजरत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो

इससे क़ब्ल जितने भी मोहाजिर थे उन्होंने छुप छुप कर हिजरत की लेकिन हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने जब हिजरत का इरादा किया तो तलवार व कमान लेकर कअबा में तशरीफ़ ले गये और अशराफ़े कुरैश फ़ेनाए कअबा में बैठे हुए थे। आपने सात तवाफ़ किया। फिर मक़ामे इब्राहीम पर दो रेकअत नमाज पढी। फिर आये और ऐलान किया। जो चाहे कि उसकी माँ उस पर रोये उसके बच्चे यतीम हो जायँ, उसकी बीवी बेवा हो जाय वह आकर मेरा रास्ता रोके। चुनान्चे आपने हिजरत फ़रमायी और किसी में आपका रास्ता रोकने की हिम्मत न हुयी।

फ़ज़ायले उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो

(अहादीस की रोशनी में)

बोख़ारी व मुस्लिम ने अबूहुरैरह से रवायत की रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं सो रहा था कि मै ने देखा कि जन्नत में एक औरत एक महल के किनारे वजू कर रही है। मैं ने पूछा यह किसका महल है लोग बोले उमर के लिए फिर मुझे ऐ उमर तुम्हारी ग़ैरत का ख़याल आया तो मैं पीछे मुड कर चला आया (यह सुनकर) हजरत उमर रो पडे और अर्ज़ की क्या आप से ग़ैरत करूँगा या रसूलल्लाह।

और इब्न उमर से शेख़ैन ने रवायत की कि रसूलल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि मैं सो रहा था मैं ने दूध पिया यहाँ तक कि आसूदगी मेरे नाखून में बहने लगी। फिर मैं ने उसको उमर को दे दिया। लोगों ने अर्ज की आपने उसकी क्या तावील फ़रमायी। फ़रमाया इल्म से।

शेख़ैन ने सअद बिन वक़ास से तख़रीज की रसूलल्लाह ने फ़रमाया ऐ इब्न खत्ताब उस ज़ात की क़सम जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है न मुलाक़ात करेगा तुझसे शैतान मगर तुम्हारा

रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ता पर चला जायेगा।

और तिर्मिजी ने इब्न उमर से रवायत की कि रसूलल्लाह ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने उमर के ज़बान व दिल पर हक़ जारी फ़रमाया।

और तिर्मिजी ने और हाकिम ने उक़बा बिन आमिर से रवायत की कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होते।

बज़ार ने इब्न उमर से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर अहले जन्नत सेराज व चिराग हैं।

और शेख़ैन ने इब्न उमर व अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो अन्होमा से तखरीज की। फरमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कि मैं सो रहा था कि अपने को एक कुएँ पर देखा जिस पर डोल रखा हुआ था। तो जो अल्लाह ने चाहा उसमें से निकाला। फिर मुझसे अबू बकर ने ले लिया और एक डोल या दो डोल उससे निकाला और उनके खीचने में जोअफ़ था और अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे फिर उमर आये और कुएँ से पानी खींचा तो उनके हाथ में वह बडा डोल हो गया तो मैंने लोगो में इतना कवी मर्द और जीहोश किसी को न देखा कि मुनकतेअ हुआ उनका अमल यहाँ तक कि तमाम लोग उससे सैराब हो गये और ऊँटों को भी सैराब कर लिया। नूदी ने तहज़ीब में कहा है कि उलमा ने फ़रमाया कि इसमे इशारा है अबू बकर व उमर रज़िअल्लाहो अन्हो की खिलाफत की तरफ और कसरते फतूह और इस्लाम के ग़लबा की तरफ दौरे फ़ारूकी मे और तिबरानी ने अवसत में अबू सईद ख़दरी रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया जिसने उमर से बोग्ज़ रखा उसने मुझसे बोग्ज़ रखा, और जिसने उमर से मोहब्बत की उसने मुझसे मोहब्बत की। और तिबरानी ने ओबई इब्न कअब से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि मुझसे जिबरईल ने कहा कि चाहिए कि इस्लाम उमर की मौत पर रोए।

Scanned by CamScanner

हज़रत उमर की राय और मुवाफ़ेक़त-ए-कुरआन

शेखैन ने हजरत उमर से रवायत की है कि मैंने अपने रब की मुवाफेकत की तीन बातों मे (यानी जैसे मैंने चाहा मेरे रब ने वैसे ही किया) (1) मैने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह काश हम मकामे इब्राहीम को मुसल्ला बना लेते इस पर ये आयत नाज़िल हुयी। "वत्तख़जू मिम् मक़ामे इब्राहीमा मुसल्ला" (2) और मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आप की अज़वाज के पास नेक व बद सभी आते हैं तो आप उन्हें परदे का हुक्म फ़रमाते तो यह आयते हेजाब नाज़िल हुई। (3) नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की औरतें ग़ैरत में इकटठा हुयीं तो मैंने कहा अगर वह तलाक देदे तो उनका रब उनसे बेहतर अज़वाज उन्हें अता कर दे चुनान्चे इसी तरह की आयत नाजिल हुई। (4) मुस्लिम ने एक रवायत नकल की है जिसमे यह है कि बद्र के कैदियो के बारे में भी मेरे ही राय ही की मवाफेक़त फरमाई गयी। (5) अल्लामा नूदी ने तहजीब में तहरीम ख़म्र यानी शराब की हुरमत ज्यादा किया है। (6) और इब्न अबी हातिम ने अपनी तफ़सीर में हजरत अनस रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की है कहा कि उमर ने कहा मेरे रब ने चार बातों में मवाफेक़त फरमाई। यह आयत नाज़िल हुई। "वलक़द ख़लक़नल इन्साना मिन सुलालतिम मिन तीन।" तो जब इसका नुजूल हुआ तो मैंने कहा "फ़तबारकल्लाहो अहसनल ख़ालेक़ीन"। (7) आपकी मर्ज़ी यह थी कि आप अब्दुल्लाह इब्न ओबई के जनाज़े की नमाज न पढ़ें चुनान्चे आयत नाज़िल हुई "वला तुसल्ले अला अहदिम मिनहुम माता अबदा"। (8) ये आयत "या अइयोहल लज़ीना आमनू ला तकरबुस्सलात"। (9) "सवाउन अलैहिम अस्तग़फ़रता लहुम"। (10) बद्र की लड़ाई में आपने खुरूज का मशविरा दिया तो यह आयत नाजिल हुई। "कमा अखरजका रब्बोका मिम बैतेका"। (11) किस्सये अफक में जब आपने फरमाया "सुबहानका हाज़ा बोहतानुन अज़ीम" चुनान्चे इस

तरह की आयत नाज़िल हुई। (12) "ओहिल्ल लकुम लैलतस सेयामिर रफस" (13) इब्न अब्दुर्रहमान बिन इब्न लैला से रवायत है एक यहूदी ने उमर से मुलाकात की और कहा जिब्रईल जिनका तजकेरा तुम्हारे साहब करते हैं तो वह हमारे दुश्मन हैं तो आप ने उस से फरमाया "मन काना अदूवल्लाहे वमलाएकतेही वरोसोलेही वजिबरील मीकाल फइन्नल्लाहा अदूवल काफ़िरीन" तो इस आयत का नजूल उमर की ज़बान पर हुआ। (14) दो आदमी नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास मोकदमा लाये। आपने फैसला फरमा दिया। इसमें एक शख्स को यह फैसला नागवार हुआ और वह अपना मोकदमा उमर इब्न ख़त्ताब के पास ले गया। जब यह दोनों वहाँ पहुँचे तो दूसरे साथी ने कहा, ऐ उमर मेरे लिए अल्लाह के रसूल ने फैसला फरमा दिया तो उमर ने कहा क्या ऐसा हुआ। उसने कहा हाँ, फरमाया ठहरो यहाँ तक मैं आता हूँ और तलवार ले कर आये और उसकी गरदन उडा दी और इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। "फ़ला वरब्बोका लायूमेनून"। (15) आयते इस्तीजान भी आप ही की राय के मवाफ़िक़ नाजिल हुई। (16) सुल्लतुम मिनल अव्वलीना व सुल्लतुम मिनल आख़िरीन। (17) الشيخ و الزيخته اذا زينا की तिलावत का उठ जाना।

हज़रत उमर फ़ारुक़ की खे़लाफ़त

जमादिल आख़िर 13 हिजरी मंगल के दिन आप खलीफ़ा हुए और दस साल छः महीने पाँच दिन तख़्ते ख़िलाफत को जीनत दी। फज्र की नमाज में अबू लूलू मजूसी गुलाम के हाथ से शहीद हुए और यकुम मोहर्रम 24 हिजरी को इस दारे फानी से रेहलत फ़रमाई। आपकी उम्र भी तिरसठ बरस की हुई।

आपकी खेलाफत परवर दिगारे आलम की कुदरते कामेला और रहमते वासेआ का एक अजीब नमूना थी। जो बशारतें और पेशन गोइयाँ अल्लाह के रसूल ने जुहूरे इस्लाम और कसरते फतूह की मुसलमानो को दी थी वह बहुस्न वजूह आप ही की खेलाफत में मोकम्मल हुई।

अगर आप के अदल व इन्साफ़ और मुल्की इन्तेज़ामात

और फ़ुतूहात पर नजर डाली जाती है तो हैरत होती है कि वह वह काम आपसे जाहिर हुए जिनका कोई नमूना दुनिया मे पहले से मौजूद नहीं था और अगर उनकी दीनी खिदमात और रूहानी कमालात को देखा जाता है तो ऑखे खीरा हो जाती है और सफ़हाते तारीख़ में इसकी जामेईयत की मिसाल नही मिलती।

फतूहात

दुनिया की दो जबरदस्त और मुसल्लह हुकूमतें – सलतनते रोमा और सलतनते ईरान – जिन की कूवत व ताकत पूरी दुनिया में मुसल्लम थी। जो हर तरह की फौजी साज व सामान से लैस थीं। रोम की सलतनत तकरीबन चार सौ साल से क़ायम थी और ईरान की हुकूमत क्यूमरस के वक्त से कायम थी जिसको हजारो साल से इस्तेहकाम हासिल था लेकिन चन्द अरबों के साथ से दौरे फ़ारूक़ी मे यह दोनों सलतनतें ज़ेर व ज़बर हो कर पाश पाश हो गयीं।

फ़तह ईरान

खुसरो परवेज बादशाहे ईरान ने रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़त जो आपने उसके नाम बग़रज दावते इस्लाम भेजा था चाक कर दिया था। इसलिए कौन मुसलमान ऐसा था जिसके दिल में ईरानियों से इन्तिकाम लेने का जज़्बा न था। 13 हिजरी मे हजरत उमर रजिअल्लाहो अन्हो ने मस्नदे खेलाफ़त को आरास्ता करने के बाद ही मुल्के ईरान के फ़तेह तदबीरें शुरू की।

पहले आप ने मुसलसल चन्द रोज़ तक खुतबा पढे जिनमें मुसलमानो को ईरानियों से जेहाद करने की तरग़ीब होती थी। कुरआन अजीम की आयतें पढ पढ कर और अहादीसे नबविया सुना सुना कर फ़तह ईरान के वादे खुदा और उसके रसूल के मुसलमानों को याद दिलाये जिसके मुसलमानों के दिलों में एक आग सी लग गई।

सब से पहले अबू उबैदा सक़फ़ी ने आप की आवाज़ पर

लब्बैक कही। आप ने उनके इस सबक़त की बड़ी कद्र की और फौरन ही एक फौज मुरत्तब कर के रवाना की जिसमे सहाबा भी थे। यहाँ तक कि एक बद्री सहाबी यानी हज़रत सलीत इब्ने कैस भी इस मे शरीक थे। इस फ़ौज का अफसर अबू उबैदा सक़फ़ी को मोकरर्र किया और फरमाया कि कोई काम बग़ैर सहाबा के मशवरे से न करना।

मुसना बिन हारेसा को जो पहले ही से बहुक्मे हज़रत सिद्दीक़ अकबर रजिअल्लाहो अन्हो ईरान की मुहिम पर मामूर थे हुक्म दिया कि वह भी अपनी फौज लेकर रवाना हों। यह दोनों ही सिपेह सालार अपनी अपनी फौज लेकर ईरान की तरफ रवाना हो गये। ईरानी बहुत पहले ही से जग की तैयारियों में मसरूफ थे। रुस्तम बिन फ़रख़ ज़ार ने जो ईरानी फौज का सिपेहसालारे आजम था फौरन जाबान को हुक्म दिया कि एक लश्करे जर्रार ले कर अरबों के मुकाबला के लिए जाये। चुनान्चा दोनों फौजों में मुकाबला हुआ और जग–ए अज़ीम के बाद मुसलमानों को फतह मिली और बेशुमार माले गनीमत हाथ आया। अभी माले गनीमत तकसीम न हुआ था कि नरसी शाहे ईरान का ख़ालाज़ाद भाई एक अज़ीम फौज लेकर मुसलमानो के मुकाबले को पहुँच गया। इधर रुस्तम ने एक दूसरे सरदार जालबूस को एक बडे लश्कर के साथ भेज दिया। मगर अबू उबैदा ने इससे क़ब्ल कि नरसी और जालबूस जमा हो तेज़ी के साथ हमला कर दिया और उसको भागने पर मजबूर कर दिया जिससे कि दोनों की कूवत टूट गयी। माले ग़नीमत भी काफ़ी हाथ आया। इन तीनो लड़ाइयों के ख़त्म होने के बाद माले ग़नीमत का खम्स और कैदियो को दारूल खेलाफ़ा भेज दिया बाकी माले ग़नीमत ग़ाज़ियो पर तक़सीम फरमा दिया।

जब इस शिकश्त की खबर मुल्के फारस पूराने दुख्त को मिली उसने बहमन जाज़विया को तीस हज़ार फौज और तीस हाथियों के साथ भेजा। उसमें जो सफेद हाथी था वह खुसरू परवेज़ के वक्त से बहुत मुबारक समझा जाता था। यानी वह जिस मारका में जाता था फतह मिलती थी। दरफश कादियानी भी इस

Scanned by CamScanner

फौज के साथ था जो फरीदों के वक्त से खजाना शाही में रखा हुआ था और फतह व कामयाबी के लिए बहुत बड़ी चीज ख़्याल किया जाता था। फिर रुस्तम ने कुछ और मजीद फौज बहमन जाजविया के साथ की।

हज़रत अबू उबैदा सकफ़ी इस मर्तबा शुजाअत से गुज़र कर तहूर की हद तक पहुँच गये और फोरात के पुल को अबूर कर के दुश्मन से मसरूफ़ कारज़ार हुए। इब्तेदाअन मुसलमानो मे कुछ तजलजुल पैदा हुआ और इसी हालत मे एक मुसलमान ने पुल को तोड़ दिया ताकि खुदा न खास्ता मुसलमानों को शिकस्त हो तो पीछे न भाग सकें। ईरान के फौजी हाथियों की वजह से मुसलमान बहुत परेशान थे। अरब में हाथी नहीं होता था। लेहाज़ा घोड़े और ऊँट भी उनको देख कर बिदकते थे। बिल आख़िर हज़रत अबू उबैदा और उनके साथ चन्द लोग अपने घोड़ों से उतर लिए और तलवारों से उनकी सूँड़ें काटना शुरू करीं। खुद हज़रत अबू उबैदा ने सफेद हाथी की सूँड काटी मगर पीछे लौटने में उनका पैर फिसल गया और वह गिर पडे। सफ़ेद हाथी ने फौरन लपक कर अपने पैर से उनको कुचल दिया। उनकी शहादत के बाद यके बाद दीगरे सात आदमियों ने झण्डा उठाया और सब शहीद हो गये। आखिर में हज़रत मुसना ने अपने हाथ में झण्डा लिया और ईरानियो को शिकश्त हुई। और मुसलमान उस टूटे हुए पुल को दुरूस्त करके फिर वापस इस पार आ गये। इस लड़ाई में चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए। क़रीब था कि फौज में बद दिली पैदा हो जाय मगर खुदा ने दिल क़वी कर दिये और चन्द रोज़ के लिए लड़ाई भी बन्द हो गयी।

इसी अस्ना में 14 हिजरी शुरू हो गयी और रोमियों ने इस मौके को देख कर कि मुसलमानों की पूरी कूवत इस वक्त ईरान मे सर्फ हो रही है जंग शुरू कर दी जिसको बाद में बयान किया जायेगा। हज़रत फ़ारूक आज़म ने बे तरद्दुद इधर का भी इन्तेजाम शुरू कर दिया। इसी दरम्यान में हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह अबजली रज़िअल्लाहो अन्हो चार हज़ार फौज के साथ यमन से आ गये। हज़रत उमर फारूक आज़म ने उनको फौरन

हुक्म दिया कि बजानिब ईरान रवाना हो जायें और मुसना बिन हारसा की मातहती में काम करें और मसना को फरमान लिखा कि जरीर बिन अब्दुल्लाह सहाबी हैं उनके एकराम व एहतराम का पूरा लेहाज़ रखना।

ईरानियों ने अब की मरतबा मेहरान-ए-हमदान को सरदारे फौज बना कर मुकाबला के लिए भेजा। बडी ही सख़्त जंग हुई जो तारीखे इस्लाम में "यौमुल आशार" के नाम से मौसूम है इस लिए कि इसमें सौ ऐसे मुसलमान थे कि उनमें से हर एक ने दस दस काफ़िरों को मारा था। महरान भी एक ग़ुलाम के हाथ से मारा गया इस लड़ाई में मुसलमानों को इस कद्र माले ग़नीमत मिला था कि उससे पहले कभी नहीं मिला। इसी असना में हजरत मुसना ने ईरान के दो बाजारों पर हमला किया। सोना और चाँदी और कीमती जवाहरात बकसरत आये। अब 15 हिजरी शुरू हुआ और उस क़यामत खेज लड़ाई की तैयारी होने लगी जिसका नाम जंगे कादसिया है। ओलमा ने लिखा है कि हज़रत फारूक आजम रज़िअल्लाहो तआला अन्हो की कोशिश से इस लड़ाई में कुफ्र व इस्लाम के दरमयान फुरकाने अकबर का ज़हूर हुआ।

हज़रत सअ़द इब्न अबी वक़ास ईरान के फौजी गवर्नर

बुवैब के मैदान में मुसलमान मुजाहिदीन के तकरीबन एक लाख ईरानियों का कत्ले आम एक ऐसा वाकेआ था जिसकी बिना पर सारे ईरान में कोहराम मच गया। ईरानी जो मुद्दत से खाना जंगी में मुब्तेला थे इस शिकश्त के बाद तमाम इख्तिलाफात बालाये ताक़ रख कर मुसलमानो के खिलाफ मुत्तहिद हो गये। और ईरान के कोने कोने मे मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए फौजें भर्ती होने लगीं। इनके अलावा जिन इलाक़ों पर मुसलमानों को कब्ज़ा था वहाँ ईरानियों ने बग़ावते बरपा करनी शुरू कर दीं ताकि अन्दरूनी बगावतें मुसलमानों की ताकतों कमज़ोर कर दें। ग़रज़ यह कि सारे ईरान में मुसलमानों के मुकाबले की ऐसी जबरजस्त

Scanned by CamScanner

तैयारियाँ शुरू हो गयीं जो इससे पहले कभी नहीं हुई थीं।

सैयदना फ़ारूक़ आजम को जब इल्म हुआ कि हुकूमते ईरान मुसलमानों पर ताज़ा हमले की तैयारियाँ कर रही हैं तो आप ने भी अरब के तमाम आमिलो के नाम एहकामात जारी किये कि तमाम क़बाएल से जंगजू मुजाहिदीन जेहाद फी सबीलिल्लाह के लिए भेजे जायें। आप का हुक्म पाते ही आमिलो ने मुजाहिदीन की एक बड़ी तादाद को मदीना रवाना करना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि मदीना का सारा मैदान चंद ही रोज़ में हजारों इस्लामी सरफरोशों से भर गया।

हज़रत उमर को ईरानियों की जंगी तैयारियों की जो इत्तेलाआत मिली थी एक तरफ तो वह बेहद परेशान कुन थीं। दूसरे जानिब ईरानियों के मुकाबले के लिए कोई लायक अफसर भी मौजूद नहीं था। इन तमाम हालात के पेशे नजर मजबूरन हजरत फारुक़ आज़म को यह तय करना पड़ा कि वह खुद ही ईरान की जंग मे फौजों की क़यादत करेंगे। यहाँ तक कि आप ईरान जाने लगे। बिल्कुल तैयार हो गये। आखिर सहाबए केराम ने बड़ी मुश्किल से आप को इस इरादे से बाज रखा और यह अहम काम मशहूर सहाबिए रसूल और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के करीबी अजीज़ सैयदना सअ़द बिन अबी वकास के सुपुर्द किया गया। हजरत फारुक़ आज़म ने इन्हें ईरान के फौजियों का गवर्नर बना कर इस जग के लिए खुद मुकम्मल हिदायतें दीं और एक नक्शा भी बना कर दे दिया ताकि इस नक्शे को सामने रखकर ईरान में जदीद फतूहात का सिलसिला शुरू किया जावे। और हिदायत की कि उन्हें हर छोटे बड़े वाक़ए से बराबर मतलअ़ किया जावे।

सअ़द बिन वक़ास जब मदीने से रवाना हुए तो उनके साथ सिर्फ चार हज़ार मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर था। लेकिन इनकी रवानगी के फौरन ही बाद हज़रत फारूक़ आजम ने चार हज़ार का मजीद लश्कर ईराक के लिए रवाना कर दिया था। जो इनसे रास्ते ही में आ मिले।

इधर मुसना बिन हारिसा जिनके पास आठ हज़ार का

लश्कर था इनकी आमद का बडी बेचैनी के साथ इन्तिज़ार कर रहे थे। आपको जब हारिस इब्न मुसना के इन्तेक़ाल की ख़बर मिली तो आपको बेहद अफसोस हुआ।

शाह ईरान को दावते इस्लाम और जंगे क़ादसिया

हज़रत सअ़द इब्न वक़ास ईराक के इस्लामी कैम्प में पहुँचने के बाद सब से पहले यह काम किया कि आप ने ईरान पर हमला करने से कब्ल शहेन्शाह ईरान यजदजर सोम को मुस्लिम वफ़द के ज़रिया इस्लाम की दावत दी। जिस वक्त इस्लामी मुजाहिदीन ने यजदजर सोम को इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी। यह मुश्तइल होकर आग बगूला हो गये। और मुस्लिम वफद के नुमाइन्दो के साथ बडी गुस्ताख़ी से पेश आये। मुस्लिम वफ़द के नुमाइन्दा अगरचे इस वक्त मौत के मुँह में थे लेकिन फिर भी वह शाह ईरान के जाह व जलाल और गुस्से से जर्रा बराबर भी मुतास्सिर न हुए और उन्हों ने इससे कहा कि ऐ बादशाह! तेरे लिए यही बेहतर है कि या तो तू इस्लाम कुबूल कर ले या एताअ़त अख्तियार कर ले वरना तुझे ऐसी कौम से वास्ता पड़ने वाला है जिसे दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा मौत अजीज़ है।

वफ़द जब इस तरह शाह ईरान को मुतनब्बह कर के रूख्सत हुआ तो बादशाह इनकी जुर्रात देखकर दंग रह गया। इस्लामी वफ़द के वापस आने के बाद हमला की तैयारियाँ शुरू हो गयीं और लश्करे इस्लाम आगे बढ़कर क़ादसिया के मक़ाम पर खेमाजन हो गया। मुसलमानों के क़ादसिया मे क़दम रखने के बाद गर्द व नवाह के बाशिन्दे भागने लगे। उन्हों ने दरबारे ईरान से यह कहना शुरू किया कि या तो मुसलमानों का कोई इलाज किया जाये या फिर हम मजबूरन उनकी एताअ़त करेंगे और अपनी जान व माल महफूज करा लेंगे।

शाहे ईरान ने अपनी रेआया की घबराहट और परेशानी को महसूस करते हुए अपने वज़ीरे देफ़ाअ़ रूस्तम को हुक्म दिया कि

Scanned by CamScanner

वह खुद एक लश्करे अज़ीम लेकर कादसिया की जानिब रवाना हो जाये और मुसलमानो का मामला हमेशा के लिए ख़त्म कर दे। बादशाह का हुक्म पाते ही रूस्तम मदाएन से रवाना हो गया और उसके साथ एक लाख अस्सी हजार का लश्करे जर्रार था। जिस की कमान कई बड़े बडे ईरानी सिपेह सालार कर रहे थे। इसके अलावा सैकडो जंगी हाथी भी थे। यह तमाम लश्कर आकर इस्लामी लश्कर के मुकाबले मे डट गये। बावजूद यह कि दोनों लश्कर आमने सामने थे लेकिन कई माह तक किसी ने जंग की पहल नहीं की। इस दरम्यान में रूस्तम ने कई बार सुलह की कोशिश की लेकिन सुलह के शरायत तय न हो सके और जगी हालत बदस्तूर रही। ईरानी लश्कर को मुसलमानों के लश्कर के सामने पड़े हुए जब छः माह गुजर गये तो दरबारे ईरान से जग शुरू करने के पैगामात आने लगे। बिल आखिर रूस्तम ने अपनी फौज नहर से पार करके इस्लामी लश्कर के सामने सफ़आरा कर दिया और दोनों लश्करों में जंग शुरू हो गयी। एक तरफ पौने दो लाख मय हाथियों के लश्करे जर्रार था और दूसरी तरफ तीस हजार से भी कम मुजाहिदीन थे लेकिन इस कसरत व किल्लत के बावजूद पहले रोज़ की जंग बराबर रही। अलबत्ता पहले ही रोज़ हरमज और चन्द बडे बड़े ईरानी सरदार मुसलमानों के हाथों गिरफ़्तार हुए।

दूसरे दिन जब जंग छिड़ी तो मुसलमानों की हिमायत के लिए शाम से एक ताज़ा दम लश्कर भी आ गया जिससे मुसलमानो की हिम्मत और बढ गयी और ईरानी ज़्यादा तर हाथियों पर एतमाद करते थे लेकिन मुसलमान अब हाथियों का मुकाबला करने के आदी हो चुके थे इस लिए हाथियों का गोल मुसलमानों का कुछ न बिगाड सका। दूसरे दिन का मुसलमानों का अहम कारनामा यह है कि इस रोज़ ईरानियों का सबसे बडा सिपेह सालार बहमन जादविया मैदाने जंग में मारा गया जिससे कि ईरानी लश्कर में घबराहट पैदा हो गयी।

तीसरे दिन की जंग गुज़िश्ता दिनों से कहीं ज़्यादा खतरनाक व खौफ़नाक थी क्योंकि दोनों जानिब से पूरी ताक़त के

साथ हमले हो रहे थे। इस तीसरे दिन की जग मे जब ईरानियों ने हाथियों को बढ़ा कर इस्लामी लश्कर को कुचलना चाहा तो मुसलमानों ने ऐसी दीदा दिलेरी के साथ हाथियों पर हमले किये कि हाथियों का गोल उलटा ईरानी लश्कर पर पलट पडा और अपनी ही फौज को कुचलता चला गया। तीसरे दिन सुबह से रात तक लड़ाई बदस्तूर जारी रही। रात के वक्त मुसलमानों ने मुजतमअ़ होकर ऐसी सख़्ती के साथ हमले किये कि मुसलमान ईरानी लश्कर को काटते हुए रूस्तम तक पहुँच गये और रूस्तम को हर चहार तरफ से घेर लिया। रूस्तम ने तो पहले मुकाबला किया लेकिन जब जख़्मी हो गया तो पीठ फेर कर भागा। हेलाल बिन अलक़मा ने बढ़कर भागते हुए उसपर बरछे का वार किया जिससे रूस्तम की कमर की हड्डी टूट गयी और वह नहर में गिर पडा। अलकमा ने झुक कर उसकी टांगें पकड़ लीं और बाहर खींच लिया और उसका काम तमाम करने के बाद लश्कर में बआवाज़े बलन्द कहा "खुदा की क़सम मैंने रूस्तम को क़त्ल कर दिया है।" इस आवाज़ को सुनते ही इस्लामी फौज ने नारए तकबीर बुलन्द किया और ईरानी बदहवास हो कर भागने लगे। चुनान्चे इनमें से बेश्तर सिपाही भागते हुए मारे गये। ग़रज़ ईरानियों को इस जंग मे जो 15 हिजरी में लड़ी गयी बुरी तरह शिकश्त का मुँह देखना पड़ा।

ईरानियों का मुकद्दस झण्डा "दरफ़श कादियाँ" हज़रत ज़र्रार इब्न उलख़त्ताब के हाथ लगा जिसके एवज़ इनको तीस हज़ार दिरहम दिये गये। रूस्तम का लिबास सामान असलहा हेलाल बिन अलक़मा के हवाले किया गया क्योंकि वही उसके मुस्तहिक़ थे। उन्होंने ही रूस्तम का सर क़लम किया।

रूस्तम के लिबास में हज़ार दीनार के जवाहरात लगे हुए थे। जो अलक़मा के कब्ज़े में आये। ईरानियों को अपने मुकद्दस झण्डे के छिनने का बेहद सदमा हुआ। क्योंकि इस झण्डे के छिन जाने के बाद ईरानी अक़ीदे के मुताबिक़ उन्होंने समझ लिया था कि अब ममलुकते ईरान का आतिश परस्तों के हाथ में रहना मुश्किल है। क़ादसिया की इस मश्हूर जंग में छः हज़ार मुसलमान

Scanned by CamScanner

शहीद हुए और तक़रीबन चालीस हजार ईरानी मारे गये। इस जंग के बाद मुसलमानों के हाथ बे अन्दाजा माले ग़नीमत आया जिसका पाँचवाँ हिस्सा फौरन ही खलीफए इस्लाम के पास मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया गया। खलीफए इस्लाम हजरत उमर रज़िअल्लाहो अन्हो इस जंग के नतीजा का बड़ी बेसब्री से इन्तेज़ार फरमा रहे थे जब आपको मालूम हुआ की क़ादसिया में मौला ताला ने मुसलमानों को फतह नसीब फरमाई तो आप बेहद मसरूर हुए और सजदए शुक्र अदा किया। कादसिया की फतह का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि इस फ़तह के बाद मुसलमान ईरान के दारूल सल्तनत मदाएन के दरवाजे पर पहुँच गये थे क्योंकि मदाएन कादसिया से सिर्फ तीस मील के फासले पर था।

शहर बसरा की तामीर

क़ादसिया की फ़तह के बाद सअद बिन वक़ास ने हजरत उमर की हिदायत पर शहर बसरा की बुनियाद उस जगह रखी जहाँ दजला व फोरात मिलते हैं और हुक्म दिया कि बसरा की तामीर फौरन शुरू कर दी जाय। इस जदीद शहर की तामीर का मक़सद यह था कि एक ऐसे शहर की बुनियाद डाली जाय जहाँ से हिन्द और दूर दूर के मुमालिक से तिजारत करने में सुहूलत हो चुनान्चे आगे चल कर बसरा बहुत बड़ा तिजारती मर्कज़ बन गया।

इसी दरम्यान में हज़रत सअद बिन वक़ास को फिर हज़रत उमर की जानिब से हिदायत मिली कि वह क़ादसिया और मदाएन के दरम्यान छोटे छोटे शहरों की फतह की जानिब मोतवज्जह हो जायें और आप हुक्म पाते ही बाबिल की तरफ रवाना हो गये। क्योंकि क़ादसिया से फ़रार होने वाले बाबिल ही में पनाह लिए हुए थे। लेकिन अभी इस्लामी लश्कर बाबिल पहुँच भी न पाया था कि तमाम ईरानी सरदार बाबिल से भी फ़रार हो गये। कुछ तो मदाएन की जानिब और कुछ ने अहवाज व नहाविन्द की जानिब पनाह ली। बाबिल से जाते हुए उन्होने रास्ते

के तमाम पुल तोड दिये और नहरों को नाक़ाबिले अबूर बना दिया। मुसलमानों ने मैदान ख़ाली पाकर बाबिल पर कब्जा कर लिया।

मदायन की फ़तह

ईरानी सरदारों ने बाबिल से फरार होते वक्त दरियाए दजला का पुल तोड दिया था और कश्तियाँ भी हटा ली थीं, ताकि इस्लामी फौज मदायन में दाख़िल न हो सके। हजरत सअद ने फरमाया कोई परवाह नहीं, अल्लाह तआला का नाम लेकर और हजरत फ़ारूक आजम के अद्ल व इन्साफ़ का वास्ता बारगाहे इलाही में पेश कर के उसी बहरे जख्खार में उन्होंने अपना घोडा डाल दिया। उनके घोड़े का दरिया में पड़ना था कि एक दम साठ हज़ार घोड़े दरिया में थे। तरतीब यह रखी गयी थी कि दो दो मुसलमान बाहम मिले जुले हुए चलें। हज़रत सलमान फारसी फरमाते हैं कि साठ हजार इस्लामी शहसवार दरियाए दजला में मोतहर्रिक पानी की सतह पर इस तरह फैले हुए थे गोया कि वह किसी बाग में चहल क़दमी कर रहे हैं और जहाँ घोडे थक जाते थे वहाँ खुश्क टीला या ज़मीन नमूदार हो जाती थी। जिसपर खड़े हो कर घोडे आराम कर लेते थे न कोई शख़्स दरिया में डूबा न किसी की कोई चीज ज़ाया हुई। सब के सब दरिया के पार पहुँच गये। एक सवार का प्याला अलबत्ता दरिया में बह गया था। रस्सी कमज़ोर थी दरिया के मौजों में टूट गई। पार उतर कर उन्होंने कहा कि खुदा की कसम यह नहीं हो सकता कि मेरा प्याला दरिया में रह जाय। यह कहना ही था कि एक मौज आई और उसने वह प्याला दरिया के किनारे पहुँचा दिया।

इस दिन का नाम तारीख–ए–अरब में "यौमुल माअ" रखा गया। इस बईद अज कयास ताईदे रब्बानी को देख कर ईरानियों ने शहर मदायन को खाली कर दिया। और बगैर जंग के मुसलमानों का उस पर कब्जा हो गया।

Scanned by CamScanner

फ़तह रोम व शाम

14 हिजरी से सैयदना फारूक़ आजम रज़िअल्लाहो अन्हो ने रोम व शाम की तरफ तवज्जोह फरमाई और 22 हिजरी तक उसको मोकम्मल फरमा लिया।

ताईदे रब्बानी के अजीब व ग़रीब वाकेआत इन फ़तूहात में भी रोनुमा होते रहे। बाज मकामात बगैर जंग कब्जे में आ गये। बैतुल मोक़द्दस बगैर लड़ाई के इस तरह कब्ज़े में आ गया कि वहाँ के ईसाइयों और यहूदियो के उलेमा ने कहा कि उमर बिन आस बैतुल मोकद्दस को फतह नहीं कर सकते क्योंकि फ़ातेह बैतुल मोकद्दस का हुलिया हमारी किताबों में लिखा हुआ है जो उमर बिन आस पर मुन्तबक़ नही होता। हजरत उमर बिन आस ने इसकी खबर हजरत उमर को दी और आप तशरीफ़ ले गये। जिस वक्त आप बैतुल मोकद्दस पहुँचे और आप को उन लोगों ने देखा, फौरन दरवाज़ा खोल दिया और कहा कि यह वही हैं।

बैतुल मोकद्दस में जाबिया के मक़ाम पर आपने एक दरबार किया और तमाम सरदाराने अफवाज को भी इसमें शरीक फरमाया और शआ़एरे इस्लाम का कमा हक्कहू ऐलान फरमाया।

मिस्र, असकन्दरिया, हल्ब, अहवाज, आज़र बाईजान वगैरह भी बडे मारको के बाद फ़तह हुए और कुस्तुनतुनिया और खुरासान की फतूहात का भी आग़ाज़ हुआ। जिसकी तकमील हज़रत उसमान इब्न अफ़्फ़ान के ज़माने में हुई।

हज़रत उमर का किरदार और मुल्की कारनामे

1. एक हज़ार छत्तीस शहर मआ इनकी मुज़ाफात के फतह किये। जो मकाम कब्जे में आता फौरन आप के हुक्म से वहाँ मस्जिद बनाई जाती और इमाम व मोअज़्ज़िन का तकर्रुर किया जाता।
2. चार हज़ार मस्जिदें नमाज़े पन्जगाना के लिये और नौ सौ जामेअ़ मस्जिदें आपके ज़माने में बनी।
3. मस्जिदे हराम की तौसीअ फ़रमाई।

4. मक्के और मदीने के दरमियान हर हर मन्ज़िल पर सरॉय का इन्तेज़ाम कराया और कुएं बनवाये।
5. हरम के हुदूद पर निशानात लगवाये।
6. मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ फरमाई और मकामे अक़ीक़ से चटाइयाँ मंगवा कर बिछवायीं।
7. अहले किताब की औरत से निकाह की मुमानअत फरमायी मगर साथ ही यह भी फरमा दिया कि ये मुमानअ़त अज़ राहे मसलेहत है। खुदा ने इसको हलाल किया है मैं हलाल को हराम नहीं करता। वाकई किस कदर अन्जाम बीनी थी। इस हुक्म में आज मुसलमानो का इन नस्लो को कोई देखे जिनकी माँए यूरोप के ईसाई या यहूदी हैं। तो उसको इस हुक्म की कदर मालूम होगी।
8. आपका हुक्म था कि मुमालिक इस्लामिया के बाज़ारों में कोई शख्स दुकान नहीं रख सकता जब तक कि मसायले दीनिया का इल्म न रखता हो। यह कितनी जबर जस्त तदबीर थी इल्म दीन के तरवीज की।
9. अपने यहाँ उस की ज्यादा तौक़ीर करते जो इल्मे कुरआन में फौक़ियत रखता। अकसर इल्मे कुरआन में इम्तिहान भी लेते। जो कामयाब होता उसकी बडी इज़्ज़त फरमाते।
10. बड़े दरिया दिल और फैयाज़ थे आप के पास जो भी माले गनीमत आता था उसे गरीबों और मिस्कीनों में तकसीम फरमा देते थे। अपने लिये दूसरे वकत के खाने के बकदर भी न रखते थे।
11. इस्लाम के पुराने खादिमों और रसूलल्लाह के कुन्बा के अफराद के लिये गेराँ कद्र वजायफ मोकर्रर कर रखे थे। चुनान्चे हज़रते अब्बास रजिअल्लाहो अन्हो अ़म्मे रसूलल्लाह का सालाना वज़ीफा दो लाख दिरहम था।
12. जिन मुजाहिदीन ने शाम ईरान और मिस्र में जंगी कारनामे अंजाम दिये थे उनको भी माकूल पेन्शन दी जाती थी।
13. अज़वाज मोताहिरात का वजीफा दस दस हज़ार दिरहम सालाना मोक़र्रर फरमाया था। मुल्की इस्लाहात में भी आपने बड़े बड़े कारनामे अन्जाम दिये। मुल्की कारोबार चलाने के लिए बैतुल

Scanned by CamScanner

माल यानी ख़ज़ाना क़ायम किया।

फ़ौज के लिए दफ्तर कायम किये। रज़ाकारों की तनख़्वाहें मोकर्रर कीं। मुल्क की पैमाइश का क़ायदा जारी किया। मर्दुम शुमारी करायी, नहरें खुदाई, शहर आबाद किये, मकबूज़ा इलाकों को सूबो में तकसीम फरमाया। हर सूबा के लिए गवर्नर और हुक्काम मोक़र्रर फरमाये, जेल और पुलिस का महकमा क़ायम फरमाया। सी आई डी और मुखबिरों को मोक़र्रर फरमाया, सड़कें बनवायीं और मुसाफ़िरों के लिए सडकों पर सरायें तामीर कराये।

आप रात को खुद ही गश्त कर के रेआया के हालात मालूम फरमाते थे। आप ही के दौर में नमाज़े तरावीह बाजमाअत की इब्तेदा हुई। मालूम हुआ कि नमाजे तरावीह बाजमाअत बिदअते हसनह है लेहाजा हर बिदअत गुमराही नहीं। बिदअत गुमराही का सबब है।

आपके जमाना के फ़तूहात पर गौर करने के बाद अक्ल इंसानी हैरान रह जाती है। आपकी फतूहात का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि जो मुल्क आपके दौरे खेलाफत मे फतह हुए उनका रकबा 22 लाख मुरब्बा मील था। जिसके अन्दर 36 हज़ार शहर और क़िले मुसलमानों के कब्ज़े मे आये।

कशफ़ व करामात

☆मदीना मुनव्वरा में जुमा का खुत्बा पढ़ रहे थे। दरम्यान खुत्बा ही दो या तीन बार बुलन्द आवाज से यह जुमला इरशाद फरमाया। या सारियह अलजबल। और इसके बाद फिर खुत्बा शुरू कर दिया। तमाम हाजिरीन को हैरत थी कि दौराने खुत्बा यह बे रब्त जुमला आपकी ज़बान मुबारक से कैसे निकला। सैयदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को बेतकल्लुफ़ी ज्यादा थी। उन्होंने दरियाफ़्त फ़रमाया कि आज दरम्यान खुत्बा "या या सारियह अलजबल" कैसे फ़रमाया। तो आपने एक लश्कर का जिक्र फ़रमाया जो ईराक में था और नहाविन्द में जेहाद में मश्गूल था। इस लश्कर के सरदार सारिया थे। मैंने देखा कि वह पहाड़ के पास लड रहे हैं और दुश्मन की फौज सामने से भी आ रही है

और पीछे से भी आ रही है जिसकी उन लोगो को खबर नहीं। यह देख कर मेरा दिल क़ाबू में न रहा और मैंने आवाज़ दी कि ऐ सारिया पहाड से मिल जाओ। थोड़े दिनों के बाद जब हज़रत सारिया का कासिद आया तो उसने सारा वाक़ेआ बयान किया कि हम लोग लड़ाई में मश्गूल थे कि यकायक यह आवाज़ आई "या या सारियह अलजबल या सारियह अलजबल" इस आवाज़ को सुनकर हम लोग पहाड़ से मिल गये और फतह हुई।

(इस वाकेआ से पता चलता है कि हज़रत उमर को अल्लाह ने कितनी वसीअ नज़र दी थी और उनके इल्म की कितनी विसअत थी और उनकी आवाज़ को हवा ने इतनी दूर पहुँचाया। यह उनके अख़्तियार की एक झलक है। तो जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम एक अदना गुलाम के अख़्तियार का यह हाल है तो फिर नबी के अख्तियार का क्या हाल होगा।)

☆मिस्र के फ़तह होने के बाद अहले मिस्र ने हज़रत उमर बिन आस से कहा कि हम लोगों की काश्तकारी का दारो मदार दरियाए नील पर है और दरियाए नील का यह दस्तूर है कि हर साल एक कुँवारी लड़की जो हुस्न व जमाल में सबसे मुमताज़ होती थी दरिया में डाल दी जाती है अगर किसी साल ऐसा न किया जाय तो दरिया नहीं बढता और कहत पड़ जाता है। आपने यह वाक़ेआ हजरत फारूक आज़म को लिखकर भेजा। आपने तहरीर फरमाया कि इस्लाम ऐसी वहशियाना रस्मों की इजाजत नहीं देता और आपने एक खत दरियाए नील के नाम लिखकर भेजा जिसका मज़मून यह था। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह खत अल्लाह के बन्दे उमर बिन अलखत्ताब की तरफ से नील मिस्र के नाम है। अम्मा बाद ! अगर तू अल्लाह के हुक्म से जारी है तो अल्लाह के हुक्म से जारी रहना। इस खत के डालते ही दरियाए नील बढ़ना शुरू हुआ और सालहाए मा सबक के बनिस्बत छः गज ज्यादा बढा और यह रस्म बद मौकूफ़ हो गयी।(इस वाक़ेआ से हजरत फारूक़ आजम के अख़्तियार का अन्दाजा किया जा सकता है।)

Scanned by CamScanner

☆क़हत के जमाना में हज़रत फारूक आजम ने पानी बरसने की दुआ माँगी। और पानी बरसा तो कुछ बद्दू लोग बाहर आये और उन्होने बयान किया कि अमीरूल मोमिनीन हम लोग फलाँ दिन फलाँ वक्त अपने जंगलों में थे, यकायक एक अब्र उठा और उससे यह आवाज़ आ रही थी "अताकल गौस अबा हफ्स" यानी ऐ अबूहफ़्स (उमर) तुम्हारे लिये बारिश आ गयी।

☆एक मर्तबा आप के ज़माने में जलजला आया। बार बार ज़मीन हिलती थी तो आप ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और एक दुर्रा ज़मीन पर मारा और फरमाया। ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा। क्या मैंने तेरे ऊपर अद्ल नही किया। इसके बाद फौरन ही जलज़ला मौकूफ़ हो गया।

☆हाबिस बिन सअद ताई ने ख्वाब देखा कि आफताब व माहताब में बाहम जंग हुई और हर एक के साथ कुछ कुछ सितारे हैं। यह ख्वाब उन्होंने हज़रत फ़ारूक़ आजम रज़िअल्लाहो अन्हो से बयान फरमाया तो आपने फरमाया तुम किस जमात के साथ थे। उन्होंने कहा कि मैं चांद के साथ था। हजरत फारूक आजम ने फरमाया अब मैं तुमको किसी काम पर मोकर्रर नही करूँगा। तुम तारीक निशानी के साथ थे। चुनान्चे यह बुजुर्ग जंगे सिफैन में हज़रत मआविया के साथ थे और इसी जंग मे शहीद हुए।

☆एक पहाड़ की खोह से आग निकला करती थी और जहाँ तक पहुँचा करती थी जला कर खाकिस्तर कर देती थी। हज़रत फारूक आजम रजिअल्लाहो अन्हो के ज़माने में वह आग नमूदार हुई तो आपने हज़रत अबू मूसा अशअरी या हज़रत तमीम दारी को हुक्म दिया कि जाओ इस आग को इसी खोह में दाखिल कर आओ। चुनान्चा वह गये और अपनी चादर से उस आग को हँकाना शुरू किया यहाँ तक कि वह खोह में चली गयी और फिर कभी वह आग नमूदार न हुई।

☆एक बार एक अजमी शख़्स मदीना मुनव्वरा में आया। हज़रत फारूक आजम को वह तलाश कर रहा था। किसी ने बता दिया कि वह जंगल में सो रहे हैं और वह जंगल की तरफ गया तो देखा कि आप ज़मीन पर दुर्रा सर के नीचे रखे हुए सो रहे

हैं। इस अजमी ने अपने दिल में ख्याल किया कि सारे जहाँ में इस शख्स की वजह से फित्ना बरपा है, इस वक्त इसका कत्ल कर देना बहुता आसान है। यह ख्याल कर के उसने तलवार निकाली। फौरन दो शेर नमूदार हुए और इस अजमी की तरफ लपके। अजमी फरियाद करने लगा। हज़रत फारूक आज़म बेदार हुए। इस अजमी ने सारा किस्सा बयान किया और मुसलमान हो गया।

☆एक मर्तबा आप का एक लश्कर किसी दूर दराज़ मक़ाम पर मशगूल जेहाद था। एक दिन मदीना मुनव्वरा में बैठे बैठे आपने बुलन्द आवाज़ से फरमाया। "या लब्बैकाह" किसी के समझ में न आया कि क्या बात है यहाँ तक कि वह लश्कर वापस आया और सरदारे लश्कर ने फतूहात का बयान शुरू किया तो हज़रत फ़ारूक आजम रजिअल्लाहो अन्हो ने फरमाया। इन बातों को रहने दो। उस शख्स का हाल बयान करो जिसको तुमने जबरन पानी में भेजा था। सरदारे लश्कर ने अर्ज की। अमीरूल मोमिनीन अल्लाह की कसम मैंने उसके साथ बदी का इरादा न किया था। बात यह हुई कि हम लोग एक ऐसे दरिया पर पहुँचे जिसकी गहराई की हद मालूम न थी कि इसे अबूर किया जा सके। लेहाजा हमने उस शख्स को बरहना किया और पानी में भेजा। हवा बहुत ठंडी थी। इस शख्स पर हवा का असर हो गया और उस ने फरियाद की। वा उमराह, वा उमराह। इसके बाद वह शख्स सर्दी की शिद्दत से हलाक हो गया। जब लोगों ने इस वाकेआ को सुना तो समझा कि वह उस दिन की लब्बैक इनकी इसी मज़लूम के जवाब में थी।

हजरत फ़ारूक़ आज़म ने सरकारे लश्कर से फरमाया कि अगर यह अन्देशा न होता कि मेरे बाद एक दस्तूर क़ायम हो जायेगा तो यक़ीनन मैं तेरी गर्दन मार देता। अच्छा जा इस मकतूल के अह्ल व अयाल को खूँबहा अदा कर और अब कभी मुझे अपनी सूरत न दिखाना। एक मुसलमान का कत्ल हो जाना मेरे नज़दीक बहुत से काफिरों के कत्ल से ज़्यादा सख़्त है।

जिस दिन आपका वेसाल हुआ गैब से यह अशआर सुने गये।

Scanned by CamScanner

لبيك على الاسلام من كان باكيا
فقداوشكوا هلكى وما قدم المعهد
وادبرد الدنيا وادبر خيرها
وقد ملها من كان يومن بالوعد

मफ़्हूम यह है कि जिसको इंसलाम पर रोना हो खूब रोये। अभी ज्यादा जमाना नहीं गुज़रा कि लोग हलाकत को पहुँच गये। दुनिया से खैर व बरकत जाती रही। और अपने लोग दुनिया में परेशान हो गये।

हज़रत उमर की शहादत

आपकी शहादत इस्लाम के उन मसायब में से है जिनकी तलाफी न हुई और न हो सकती है। जिस दिन वह इस्लाम लाये दीने इलाही की शौकत व इज़्ज़त बढ़ती चली गयी और अपने अहदे खेलाफत में वह काम किये जिनकी नजीर चश्म फ़लक ने कभी नहीं देखी और जिस दिन से रूख़्सत हुये मुसलमानों का एकबाल भी रूख़्सत हुआ।

एक रोज़ अपने मामूल के मुताबिक बड़े सवेरे नमाज़ फज्र के लिए मस्जिद तशरीफ ले गये। उस वक्त दुर्रा आपके हाथ में होता था और सोने वालों को अपने दुर्रे से जगाते जाते थे। मस्जिद पहुँच कर सफें दुरुस्त करने का हुक्म देते थे। इसक बाद नमाज शुरू फरमाते थे और नमाज़ में तवील सूरतें पढते थे। इस रोज़ भी आप ने ऐसा ही किया। नमाज शुरू की थी, सिर्फ तकबीर तहरीमा कहने पाये थे कि एक मजूसी काफिर अबू लूलू ने जो मुग़ीरा का गुलाम था एक जहर आलूद खन्जर लिये हुए मस्जिद की मेहराब में छुपा हुआ था आपके शिकम मुबारक में तीन ज़ख़्म कारी उस खन्जर से लगाये जिससे आप उसी वक्त बेहोश हो कर गिर गये और हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आगे बढ कर बजाये आपके इमामत की और मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाकर सलाम फेर दिया।

अबू लूलू ने चाहा कि किसी तरह मस्जिद से निकल कर

भाग जाये मगर नमाज़ियों की सफों से जो मिस्ल दीवार के हायल थीं निकल जाना आसान काम न था। लेहाजा इसने और सहाबियों को भी जख्मी करना शुरू किया। इसी तरह तेरह सहाबी और जख्मी हुए जिसमें से सात जाँ बहक भी हो गये। इतने में नमाज़ खत्म हुई और अबू लूलू पकड़ लिया गया। जब इसने देखा कि मैं गिरफ्तार हो गया हूँ तो उसी खन्जर से उसने अपने को भी हलाक कर लिया।

हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने दरियाफ्त फरमाया। मेरा कातिल कौन है ? हज़रत इब्न अब्बास ने कहा। अबू लूलू मजूसी काफिर। यह सुनकर आपने तकबीर इतनी बुलन्द आवाज़ से की कि बाहर तक आवाज गयी और फरमाया कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने एक काफिर के हाथ से मुझे शहादत अता फरमाई। यह अबू लूलू एक मर्तबा अपने मौलवी का शिकायत लेकर आया था कि वह मौसूल ज्यादा लेता है लेकिन जब आपने पूछा तू काम क्या करता है ? उसने कहा ! चक्की बनाता हूँ। तो फरमाया इतना मौसूल ज़्यादा नहीं है। फिर इस वाकये के बाद ही इसने खन्जर जहर में बुझाना शुरू कर दिया और आप के कत्ल की फिक्र में था।

दवा इलाज की कोशिश की गयी मगर कोई तदबीर काम में न आयी। सहाबा अजीब हसरत से आपको देखते थे और आप सब ने कहा अमीरूल मोमिनीन ! आपने किताबुल्लाह की पैरवी की और सुन्नत पर अमल किया। अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर दे।

फिर आपने अपने साहबजादे हज़रत अब्दुल्लाह को भेज कर अमीरूल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका से हुजरए अक़दस में दफन होने की इजाज़त चाही। अमीरूल मोमिनीन हजरत आयशा ने फरमाया कि वह जगह मैंने अपने लिए रखी थी मगर मैं उनको अपने ऊपर तरजीह देती हूँ। जिस वक्त आपको यह खुशखबरी मिली आप बहुत खुश हुए कि अल्लाह तआला ने यह आखिरी सबसे बड़ी खुशी भी पूरी फरमा दी।

27 ज़िल हज्जा को बरोज़ चहार शम्बा ज़ख़्मी हुए और पाँचवें दिन यकुम मोहर्रमुल हराम बरोज़ यकशम्बा बउम्र तिरसठ

Scanned by CamScanner

साल रेहलत फरमायी। रज़िअल्लाहो अन्हु वरज़ाहो अन्ना।

हज़रत सुहैब ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और खास रौज़ए नबवी में हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़िअल्लाह अन्हो के पहलू में आपकी क़ब्र मुबारक बनायी गयी।

☆☆☆

शफीक–ए–मिल्लत की

"औलियाए केराम"

की तारीख पर एक अहम किताब

तारीखे औलिया

मन्ज़रे आम पर आ चुकी है।

☆☆☆

दारूलउलूम अफ़जलुल मदारिस

आपका महबूब इदारा है।

उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

इमाम अहमद रज़ा रोड

करैला बाग, इलाहाबाद

इमामुल मोतसद्देक़ीन व जामेउल कुरआन

सैयदना हज़रत
उस्मान ग़नी

जुन्नूरैन रज़िअल्लाहो अन्हो

२४ हिजरी ता ३५ हिजरी

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

Scanned by CamScanner

सैयदना उस्मान ग़नी जुन्नूरैन

रज़िअल्लाहो अन्हो

इब्तेदाई ज़िन्दगी व सिलसिलए नसब

आपका सिलसिलए नसब मर्रह में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मिल जाता है। उस्मान बिन अफ्फ़ान बिन अबिल आस बिन उमैया बिन अब्द शम्श बिन अब्द मनाफ बिन कैसी बिन कलाब इब्न मर्रह बिन कअ़ब बिन लुई इब्न ग़ालिब अलकरशी।

आमतुल फ़ील के छठे साल पैदा हुए। आप उन कुदमा सहाबा में से हैं जो हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो की तरग़ीब व तबलीग़ से मुशर्रफ बा इस्लाम हुए। आपने हिजरते ऊला जो हबशा की तरफ हुई थी और हिजरते सानिया दोनों में शिरकत की। ऐलाने नबूवत से कब्ल हज़रत रोक़ैया बिन्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपका निकाह हुआ था जिनका वेसाल ग़ज़वए बद्र के मौके पर हुआ। हज़रत रोक़ैया ही की बीमारी के सबब आप ग़ज़वए मज़कूर में शिरकत न कर सके थे लेकिन अल्लाह के रसूल ने आप को एजाज़त भी दे दी थी और आप के लिए मुजाहिदीन का हिस्सा भी दिया और आपको बद्र बीन में से शुमार किया गया।

इसके बाद फिर आपसे हजरत उम्मे कुलसूम बिन्त रसूलल्लाह का अक्द हुआ जिनका वेसाल 9 हिजरी में हुआ।

उलेमा का कहना है कि यह फजीलत सिर्फ आपके लिए है एक ही नबी की दो बेटियाँ आपकी जौजियत में आईं और इसी वजह से आपका नाम जुन्नूरैन पड गया। आप साबेक़ीन अव्वलीन और अव्वलुल मुहाजिरीन से हैं और अशरए मोबश्शिरा में से और इन सहाबा मे से एक हैं जिन्होंने कुरआन अजीम की तदवीन कराई।

आपकी फज़ीलत अहादीस़ की रौशनी में

हज़रात शेख़ैन ने हजरत आयशा से रेवायत की रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने कपडे को यकजा कर लिए जिस वक्त हज़रत उस्मान दाखिल हुए और कहा क्यों ना ऐसे शख्स से हया फरमाऊँ जिससे फ़रिश्ते हया करते हैं।

तिरमिजी ने अब्दुर्रहमान इब्न खुबाब से तखरीज की। कहा मैं नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ हाज़िर था। आप लोगों को जैसुल उसरा पर बर अंगेख्ता फ़रमा रहे थे तो हजरत उस्मान बिन अफ्फान खडे हुए और अर्ज़ की। या रसूलल्लाह मैं फी सबीलिल्लाह सौ ऊँट मय साज़ व सामान पेश कर रहा हूँ। फिर रसूलल्लाह ने तरगीब फ़रमाई तो उस्मान बोले दो सौ ऊँट साज व सामान के साथ हाजिर हैं। फिर रसूलल्लाह ने तरगीब फरमाई तो उस्मान ने अर्ज की। तीन सौ ऊँट साज व सामान के साथ फी सबीलिल्लाह हाजिर हैं। تنزل رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو يقول ما على عثمان ما عمل بعد هذه यानी अब उस्मान कुछ भी न करें उनका कोई नुकसान नहीं होगा।

हाकिम और तिर्मिजी ने तख़रीज की है عن عائشه ان النبی صلی الله علیه وسلم قال یا عثمان انه لعل الله یقمص قمیصا فان ارادك المنافقون علی خلعه فلا تخلعه حتی تنفانی۔

यानी नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया। ऐ उस्मान अनक़रीब अल्लाह तआला तुमको एक कमीस पहनायेगा तो मुनाफिकीन तुमसे उसको उतरवाना चाहेंगे, तो तुम उसको न उतारना यहाँ तक कि मुझसे तुम मुलाक़ात करोगे।

तिबरानी ने अस्मा बिन मालिक से रवायत की कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहबजादी जो आपकी ज़ौजियत में थी का इन्तिक़ाल हुआ तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया।

Scanned by CamScanner

زوجوا عثمان لو كان لى ثالثة لزوجته وما زوجة الا بالوحى من الله۔

ऐ लोगो उस्मान से शादी कर दो क्योंकि अगर मेरे पास तीसरी लडकी होती तो ज़रूर उनसे निकाह कर देता और यह हुक्मे खुदा है।

और इब्ने असाकर ने हजरत अली से तख़रीज. की

عن على سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول لعثمان لوان اربعين ابنة زوجتك واحدة بعد واحدة حتى لا يبقى من هن واحدة۔

यानी अगर मेरे चालीस बच्चियाँ होतीं तो मैं यके बाद दीगर तुम्हारी जौजियत में देता रहता यहॉ तक कि एक भी इनमें से न बाकी रहतीं

और इब्ने असाकर ने ज़ैद इब्न साबित से तखरीज की।

قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول مربى عثمان وعندى ملك من الملائكة فقال شهيد يقتلة قومة ان نستحى منه۔

यानी उस्मान का गुज़र मेरे पास हुआ और एक फरिश्ता जो मेरे पास बैठा हुआ था बोला कि यह शहीद हैं उन्हे कौम कत्ल कर देगी। हम इनसे हया करते हैं।

हज़रत उस्मान का दौरे खे़लाफ़त

सैयदना फ़रूक आज़म ने वेसाल से कब्ल छ. मुक्तदिर हज़रात की मजलिसे मशाविरत क़ायम कर दी थी और अरकाने मजलिस को ताकीदी वसीयत फरमाई थी कि मेरे वफ़ात के तीन रोज़ के अन्दर मजलिस के अराकीन इन छः मोअज़्ज़ीन में से जिसको मुनासिब समझें मुसलमानों के लिए ख़लीफ़ा मुन्तखब कर लें। इन छः आदमियो के अस्माये गेरामी यह हैं। हज़रत उस्मान ग़नी, हजरत अली, हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर बिन अलअवाम, हज़रत सअद बिन अबी वकास।

हजरत फ़रूक आज़म की तजहीज़ व तदफ़ीन से फ़रागत के बाद मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन सिवाए हजरत तलहा के

जो मदीना तैयबा से बाहर थे हज़रत सिद्दीका तैयबा ताहेरा सैयदतेना आयशा के मकान में मुजतमेअ़ हुए और जदीद इन्तेख़ाब पर ग़ौर व ख़ौज हुआ।

इस मौके पर हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ ने फरमाया कि हम को खलीफ़ा के इन्तेखाब के लिए कोई मुनासिब तरीका अख़्तियार करना होगा। मेरी राय में इन्तेखाब के सिलसिले का बेहतर तरीका यह होगा कि हज़रत उमर ने इन्तेख़ाब के लिए जिन छः हज़रात के नाम पेश किये थे उनमे जो हज़रात हके खे़लाफत से दस्त बरदार हो जायं उन्हीं को नया ख़लीफ़ा के इन्तेखाब का हक दे दिया जाय, और जिसको अफ़ज़ल व बेहतर जानें उसको खलीफ़ा मुन्तखब करें।

थोडी देर तक तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपनी इस तजवीज के जवाब का इन्तेज़ार किया लेकिन जब किसी ने जवाब न दिया तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने खुद ही एलान फरमाया कि मैं खेलाफ़त के हक से दस्त बरदार होता हूँ और चूँकि कोई दूसरा इस हक से दस्त बरदार होने के लिए तैयार नहीं है इस लिए मेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि जदीद ख़लीफा के इन्तेखाब की ज़िम्मेदारी अपने सर ले लूँ। मौलाए कायनात हज़रत अली के सिवा तमाम अराकीन ने इस तजवीज की ताईद की और उन्हें ख़लीफा के इन्तेखाब का हक दे दिया। हज़रत अली इब्तेदा में तो ख़ामोश रहे लेकिन बाद में जब खास तौर पर उनकी राय तलब की गयी तो उन्होंने फरमाया कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन औफ की राय से पूरा इत्तेफ़ाक है बशर्ते कि वह इस बात का इक़रार करे कि जो भी फैसला करेंगे ईमान व दयानत और गैर जानिबदारी पर मामूल होगा। हजरत अब्दुर्रहमान ने इकरार किया कि वह जदीद ख़लीफा के इन्तेख़ाब में पूरी ईमानदारी और गैर जानिबदारी से काम लेंगे फिर आपने तमाम उम्मीदवाराने खेलाफत से कहा कि अब आप सब भी इकरार करें कि जिसको खलीफा मोकर्रर करूँगा आप सब उस इन्तेखाब को तस्लीम कर लेंगे। हज़रत उस्मान, हज़रत अली और तमाम अराकीन ने इक़रार कर लिया कि वह आपके मुन्तखब खलीफ़ा को बे चूँ व चेरा तस्लीम

Scanned by CamScanner

कर लेगे और इस कार्यवाई के बाद यह मजलिस मुन्तशिर हो गयी।

मजलिसे शूरा ने इन्तेखाब का हक हासिल करने के बाद हजरत अब्दुर्रहमान तकरीबन तमाम अरबाब हल व अक्द से राय हासिल करते रहे और बराबर साहिबे फहम हजरात से इस ममाले मे मशवरे करते रहे। हजरत अब्दुर्रहमान को इस काम मे आगे चल कर सहूलत इस लिए भी पैदा हो गयी क्योकि दो दिन के अन्दर हज़रत उस्मान और हजरत अली के अलावा मजलिसे शूरा के बाकी तमाम अराकीन हके खेलाफत से दस्त बरदार हो गये क्यो कि उन्हें मालूम हो गया था कि अकसरियत हजरत उस्मान व अली के हक में है और ऐसी हालम किसी दूसरे के लिए इन्तेखाब में कामयाब होना तकरीबन ना मुमकिन है।

अब मैदान में चूँकि सिर्फ दो उम्मीदवार ही थे इसलिए दोबारा हज़रत अब्दुर्रहमान ने साहिबे फहम हज़रात से मशविरा करनी शुरू की। तमाम मोक्तदिर हजरात से तबादलये खयाल के बाद यह अन्दाजा हुआ कि हजरत उस्मान गनी की तरफ लोगों का रूझाने तबअ ज्यादा है लेहाजा काफी गौर व खौज के बाद उन्होने यह तय किया कि हजरते उस्मान गनी के इन्तेखाब का मजमए आम में एलान कर दिया जाय।

हजरत उमर की वसीयत के मुताबिक चूँकि तीसरे दिन खलीफा के इनतेखाब का एलान होना जरूरी था। इस लिए सुबह की नमाज के बाद ही से मस्जिदे नबवी में मुसलमान जमा होने शुरू हो गये और मस्जिद में तिल रखने की जगह बाकी न रही। यहाँ तक कि खरिजे मस्जिद भी हजारो की तादाद में मुसलमान मौजूद थे और एलान का बडी बेताबी से इन्तेजार कर रहे थे। मस्जिदे नबवी में हजरते तलहा के अलावा जो बाहर गये हुए थे सब ही अराकीन मजलिस मौजूद थे। हज़रत अब्दुर्रहमान ने अरकाने मजलिस और मजमए आम के सामने खलीफा के इन्तेखाब के सिलसिला में एक मुख्तसर सी तकरीर करते हुए कहा कि मै ने खलीफा का इन्तेखाब अपनी जाती राये से नहीं किया है बल्कि जहाँ तक मेरी ताकत मे था मैंने हर तबका हर गिरोह और हर

क़बीला से राय मालूम कर ली है मै समझता हूँ कि मैं ने अपने फर्ज की अन्जाम दही में पूरी जिम्मादारी से काम लिया है आप हजरात को मालूम है कि तमाम अराकीन मजलिस शूरा ने जिन्हे फारूक आजम ने ख़लीफा के लिए नामजद किया था उन्होने बरज़ा व रगबत मेरे फैसला को नातिक़ तस्लीम कर लिया है इस लिए अब किसी को भी एतराज की गुन्जाइश बाकी नहीं है। मुझे उम्मीद क़वी है कि इस ओहदा के लिए जो भी नाम पेश करूँगा उसे पसन्द किया जायेगा और मुझे मुस्लिम अवाम की पूरी ताईद हासिल होगी।

इस मुख्तसर तकरीर के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ने हजरत उस्मान ग़नी के ख़लीफा मुन्तखब किये जाने का एलान कर दिया। आप ने मजमए आम में हज़रत उस्मान को अपने पास बुलाया और कहा कि सुन्नत रसूल और खुदा व रसूल के एहकाम और सुन्नते शेखैन पर चलने का इकरार करो। हज़रत उस्मान ने बावाज़े बुलन्द इकरार किया कि मै खुदा व रसूल के हुक्म के मुताबिक अमल करूँगा और सिद्दीक व फारूक के नक़्शे कदम पर चलने की पूरी कोशिश करूँगा।

उस्मान गनी के इस इकरार के बाद हजरत उस्मान ग़नी के हाथ पर सब से पहले हजरत अब्दुर्रहमान ने बैअत की। उसके बाद दूसरे लोग बैअत करने पर टूट पडे। अभी हज़रत अली ने बैअत न किया था लेकिन जब हज़रत अली ने देखा कि एक जमात सिर्फ इस लिए पस व पेश कर रही है कि मैने बैअत नही की है तो आपको खानाए जंगी का ख़तरा महसूस हुआ तो आप फ़ौरन ही बड़ी तेजी के साथ पलटे और सफों को चीरते हुए हजरते उस्मान ग़नी के हाथ पर बैअत कर ली। आपका बैअत करना था कि मस्जिदे नबवी अल्लाहो अकबर के नारों से गूँज उठी।

फुतूहाते इस्लामिया

हज़रत उमर रजिअल्लाहो अन्हो की वफात के बाद रोमियों के हौसले नेहायत बुलन्द हो गये थे और वह यह समझने

Scanned by CamScanner

लगे थे कि मुसलमानो से शदीद इन्तेक़ाम लेने का वक्त आ गया है। इस जमाना मे हरकुल के बाद उसका बेटा कुस्तुनतीन रोम पर हुकूमत कर रहा था। उसका कामिल यकीन था कि वह आसानी से मुल्क मिस्र को मुसलमानों के कब्जे से निकाल लेगा। चुनान्चे उसने बजरियए जहाज़ एक लश्करे अज़ीम को इस्कन्दरिया के लिए रवाना कर दी। जब यह फौज इसकन्दरिया के साहिल पर उतरी तो मुसलमानों के हलीफ मक़ूकस साबिक हाकिमे मिस्र और इस्लामी लश्कर ने मुत्तहिद होकर ऐसी मजबूती के साथ रोमी ईसाइयों का मुकाबला किया कि इनके पाँव उखड़ गये और रोमियों को महसूस हो गया कि उमर बिन आस जैसे लायक गवर्नर की मौजूदगी मे मिस्र का मुसलामनों से वापस लेना नामुमकिन है और वह बेहद नुकसान उठाने के बाद 25 हिजरी में नाकाम व नामुराद वापस चले गये।

ईरान के बाग़ियों की सरकूबी

ईरान में भी आतिश परस्तो के हौसले बढे हुए थे। इसी लिए हमदान, रै, और चन्द दूसरे मकामात पर ईरानी इलाक़ों में मुसलमानो के ख़िलाफ़ मुनज्जम बग़ावतें शुरू कर दी थीं। जब इन बग़ावतो का इल्म हजरत उस्मान को हुआ तो आपने हज़रत अबू मूसा अशअरी औरं चन्द दूसरे सरदारों को इन बागियों की सरकूबी के लिए भेज दिया जिन्होने जल्द ही इन बग़ावतो को दबा दिया और खुरासान और फिरोजाबाद और शीराज़ और तूस और नीशापुर और हेरात और बल्ख वगैरह फ़तेह हो गये।

आज़रबाएजान में बग़ावत

हज़रत फारुक आज़म के इन्तेकाल के वक्त सैयदना मुग़ीरा बिन शोअबा कूफा के गवर्नर थे। हज़रत उस्मान रजिअल्लाहो अन्हो जब मस्नदे खेलाफत पर बैठे तो आपने सअद बिन अबी वक़ास को जिन्हें हज़रत उमर ने माजूल कर दिया था दोबारा कूफा का गवर्नर मोकर्रर कर दिया और मुग़ीरा माजूल कर दिये गये। लेकिन अभी चन्द ही माह गुजरे थे कि हजरत उस्मान

ने सअ़द बिन अबी वक़ास और उनके मातहत अफसर उत्बा को भी माजूल कर दिया और हजरत वलीद इब्न मुगीरा को जो हजरत उस्मान के रजाई भाई भी थे कूफा और आजरबाईजान का गवर्नर मोकर्रर कर दिया। इन तब्दीलियों का नतीजा यह हुआ कि 26 हिजरी में आजरबाइजान में सख्त बगावत फैल गयी जिसको वलीद बिन मगीरा ने बड़ी मुश्किल से दबाया।(खुरासान, फिरोजाबाद, शीराज़, तूस, नीशापुर, हेरात और बल्ख वगैरह फ़तह हो गये।)

अफ्रीका पर यूरिश

अब्दुल्ला इब्न सअद अफ्रीका के सरहदी इलाकों की जानिब मोतवज्जा हुए। उन्होंने दस हजार का लश्कर लेकर 26 हिजरी मे इलाका बरका के सरदारों पर हमला कर दिया और इन सरदारों ने फौरन एताअत कर ली। उमर इब्न आस के जमाना में भी यह मग़लूब हो चुके थे और बराबर जुजिया अदा करते थे लेकिन जब बाद मे हुकूमते इस्लामिया की गिरफ्त ढीली पड़ गयी तो यह मौक़ा से फायदा उठाते हुए खुद मुख़्तार बन गये। अब फिर उनपर दोबारा हमला किया गया तो उन्होंने फिर एताअत क़ुबूल कर के जुजिया देना शुरू कर दिया।

हजरत उस्मान ग़नी ने यह समझते हुए कि मिस्र में फौज इस वक्त मौजूद है वह अफ्रीका जैसे वसीअ मुल्क के लिए नाकाफी है एक बहुत बड़ी फौज अब्दुल्लाह इब्न सअद के लिए मदीना से रवाना कर दी। इस फौज में हज़रत इमाम हसन इब्न अली, हजरत इमाम हुसैन, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर, हजरत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास, हजरत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर और हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जअफर तेयार जैसे मुक्तदिर हजरात भी शामिल थे इनके अलावा हज़रत उमर बिन आस साबिक़ गवर्नर मिस्र को भी इस फौज के साथ शामिल कर दिया गया था ताकि अब्दुल्लाह इब्न सअ़द को उनके साबेक़ा तजुर्बात से पूरी मदद मिल सके।

इस फौज के पहुँचने के बाद हजरत अब्दुल्लाह इब्न

Scanned by CamScanner

सअद ने तराबलस पर हमला कर दिया अगरचे नौ मुस्लिम बूकना की कोशिशों से हजरत उमर के अहदे खेलाफत में पहले ही जेर हो चुका था लेकिन बाद मे वह खुद मुख्तार बन गया था। अब इस्लामी लश्कर ने जब दोबारा तराबलस पर हमला किया तो वहॉ का हाकिम मुकाबला की ताब न ला सका और उसने 26 हिजरी में एताअत कुबूल कर ली।

तराबलस की फतह के बाद हजरत उमर बिन आस और दूसरे सरदाराने लश्कर तो मदीना वापस आ गये मगर लश्करे इस्लामिया अफ्रीका के मज़ीद इलाको की फतह के लिए आगे रवाना हो गया।

खूँरेज़ जंग के बाद अफ्रीका की फ़तह

इस वक्त अफ्रीका पर ईसाई बादशाह जरजीस की हुकूमत थी। यह कैसरे रोम का बाजगुज़ार था। जब उसको मालूम हुआ कि इस्लामी लश्कर अफ्रीका के फतह के लिए आ रहा है तो वह एक लाख बीस हजार का लश्करे जर्रार लेकर मुसलमानो के मुकाबले पर आ गया और दोनो लश्करों मे घमसान की लडाई छिड गयी। हजरत उस्मान गनी बड़ी बेचैनी के साथ अफ्रीका की फ़तेह के मुन्तजिर थे। जब उनको अफ्रीका से कोई खबर न मिली तो उन्होने हजरते जुबैर बिन अलअवाम की सरकर्दगी मे एक ताज़ादम फौज अफ्रीका के लिए और रवाना कर दी। हजरत जुबैर ने अफ्रीका पहुँच कर देखा कि इस्लामी लश्कर बडी बेदिली से लड़ रहा है और फौज के सिपेहसालार अब्दुल्लाह बिन सअद लश्कर से गायब हैं आपने इसका सबब पूछा तो बताया गया कि शाह अफ्रीका ने यह एलान कर दिया है कि जो शख्स अब्दुल्लाह बिन सअद का सर काट कर लायेगा उससे बादशाह की लडकी की शादी कर दी जायेगी और एक लाख दीनार ईनाम में दे दिये जायेंगे। इस एलान के बाद अब्दुल्लाह बिन सअद ने मैदान आना बन्द कर दिया है और खेमा मे ही हैं।

हजरत जुबैर ने जब देखा कि अफ्रीका की जंग तवालत पकडती जा रही है तो आपने यह जंगी चाल चली कि आधी फौज

को तो अपने कमान मे लेकर रोक लिया और आधी फौज को अब्दुल्लाह इब्न सअद की सरकर्दगी में लडने के लिए भेज दिया। यह फौज तमाम दिन लडती रही, जब दोपहर हो गयी और दोनो फरीक की फौजे थक कर अपने अपने खेमो मे वापस चली गयी तो हजरत जुबैर ने इस ताज़ा दम फौज को लेकर जो उन्होने रोक ली थी अफ्रीका की थकी हुयी फौज पर टूट पडे। अफ्रीकी फौज जो थकान से फौरन ही चूर थी मुसलमानों की ताजा दम फौज के अचानक हमला से घबरा गयी। मुख्तसर यह कि अफ्रीकी फौज में अबतरी फैल गयी और अफ्रीकियों शिकस्त फाश हुई। मुसलमानों के हाथो उनके बेशुमार सिपाही मारे गये। अफ्रीका का बादशाह जरजीस हजरत जुबैर बिन अलअवाम के हाथों कत्ल हुआ और शाह अफ्रीका की खूबसूरत बेटी जो बाप के दोश बदोश लड़ रही थी गिरफ्तार हो गयी और इस तरह हजरत जुबैर की इस जंगी तदबीर की बदौलत 26 हिजरी मे अफ्रीका फतह हो गया

इस मारका से फराग़त के बाद इस्लामी लश्कर ने अफ्रीका के बाज़ दूसरे इलाकों को फतह किया और हज़रत जुबैर बिन अलअवाम अफ्रीका की तस्खीर के बाद मदीना वापस चले गये और अब्दुल्लाह इब्न सअ़द ने यह सोचते हुए कि इस्लामी फौज कम रह गयी है दस लाख दीनार पर अफ्रीकियों से 27 हिजरी में सुलह कर ली और मिस्र वापस चले गये और अफ्रीका पर मुसलमानो का कामिल तसल्लुत न हो सका।

कब्रस और रोड्स की फ़तह

कैसरे रोम कुस्तुनतीन ने 28 हिजरी में एक बहरी फौज साहिले अफ्रीका पर उतार दी और अफ्रीकियो से इस खेराज का मोतालबा किया जो रोमी सल्तनत अफ्रीका से मुसलमानो के हमला से कब्ल वसूल किया करती थी। अफ्रीकियों ने कहा कि जब मुसलमानों ने हम पर हमला किया तो कैसरे रोम ने हमारी खबर नही ली। ऐसी हालत मे वह किसी खेराज का हकदार नही है। इस इन्कार के बाद रोमी और अफ्रीकी फौजों में जंग छिड़

Scanned by CamScanner

गयी। और अफ़्रीकियों को शिकस्त हो गयी यानी मुसलमानों के बाज गुज़ार मुल्क पर कैसरे रोम का दोबारा कब्ज़ा हो गया।

अफ़्रीका की फतह के बाद रोमी अफवाज इस्कन्दरिया की तरफ बढ़ी। इधर कैसरे रोम कुस्तुनतीन भी छः सौ कश्तियों में ताज़ा दम लश्कर लेकर इस्कन्दरिया आ पहुँचा और इस्लामी लश्कर के साथ उसकी जंग छिड़ गयी लेकिन जब रोमियों को शिकश्त हुई तो कुस्तुनतीन अपनी फौज लेकर कश्तियों के ज़रिए फ़रार हो गया ओर जज़ीरए कब्रस पर जा उतरा।

कब्रस रोमी फौजों का हेडक्वार्टर था लेकिन रोमियों की बदकिस्मती कि एक तरफ तो मिस्र का इस्लामी मिस्र लश्कर कश्तियो में सवार होकर उसका तअ़कुब करता हुआ क़ब्रस जा उतरा और दूसरी जानिब सैयदना अमीर मआविया हाकिमे शाम का भेजा हुआ बहरी लश्कर कश्तियों के ज़रिए कब्रस आ पहुँचा।

शाम व मिस्र के इस्लामी लश्करों की कैसरे रोम की बहरी फौज के साथ कब्रस के लिए खूँरेज मारका शुरू हो गया। अमीर मआविया उस वक्त पूरे शाम के गवर्नर थे चूँकि हज़रत उस्मान ने हम्स व फिलिस्तीन के इलाके भी उन्हीं की हुकूमत मे शामिल कर दिये थे इस तरह वह 27 हिजरी मे पूरे मुल्क शाम के गवर्नर हो गये थे।

शाम के इस बहरी लश्कर ने जब मिस्र के बहरी के साथ मिलकर जज़ीरए कब्रस पर हमला किया तो कैसरे रोम इस हमले की ताब न ला सका और जान बचाकर कब्रस से कुस्तुनतुनिया भाग गया और मुसलमानों ने जजीरए कब्रस पर कब्ज़ा जमा लिया। यह पहली बहरी फतह थी जो मुसलमानों को जजीरए कब्रस पर हासिल हुई। कब्रस की फतह के बाद खुद अमीर मआविया भी इस जजीरा में आ पहुँचे। उनके आने के बाद दूसरा बहरी हमला जजीरा रोड्स पर किया गया। यह जजीरा कब्रस के मगरिब में था। रोड्स वालों ने खूब जमकर इस्लामी लश्कर से मुकाबला लिया लेकिन कई खूँरेज जंगों के बाद मुसलमानो ने रोड्स भी फतह कर ली। इस तरह 28 हिजरी में इस्लामी फौजें इन दो अहम जजीरों पर कब्ज़ा जमाने के बाद कुस्तुनतुनिया के

दरवाज़े पर जा पहुँची।

चूँकि इन दोनो जजीरो की फतह पहली बहरी फतह थी इस लिए इसकी वजह से हजरत अमीर मआविया की शोहरत बहुत ज़्यादा बढ़ गयी थी।

तदवीने कुरआन

कुरआन पाक लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ था। इरशादे रब्बानी है "कुरआनुन मजीदुन फी लौहिम महफ़ूज़" फिर वहाँ से पहले आसमान पर लाया गया। फिर वहाँ से 23 साल में आहिस्ता आहिस्ता हुजूर अलैहिस्सलाम पर नाज़िल होता रहा। मगर यह नाज़िल होना इस लिखे हुए की तरतीब के मवाफ़िक न था क्योंकि यह नजूल बन्दों की जरूरत के मुताबिक होता था। जिस आयत की ज़रूरत हुई वही आ गयी। मसलन अगर अव्वल ही से शराब के हराम होने की आयते उतर आतीं तो यक़ीनन अरब के नये मुसलमानों को दुशवारी वाकेअ़ होती क्योंकि वहाँ आम तौर पर शराब पी जाती थी। इस तरह सारे एहकाम को समझ लीजिए लेकिन चूँकि हुजूर अलैहिस्सलाम की निगाहे पाक लौहे महफ़ूज़ वगैरह पर थी इस लिए आप हर आयत के नजूल के वक्त उसको तरतीब से जमा करा देते थे कि यह आयत फलॉ सूरत में फलाँ आयत के बाद रखो और यह तरतीब लौहे महफ़ूज़ की तरतीब के मवाफिक थी और तरीका उस वक्त यह था कि हज़रत जैद इब्न साबित व दीगर बाज़ सहाबा रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम इस ख़िदमत को अन्जाम देने के लिए मोकर्रर थे। जिस वक्त जो आयत नाजिल होती थी हुजूर अलैहिस्सलाम के हुक्म के मुताबिक़ ऊँट की हड्डियों पर खजूर के पुटठों पर और मुख़्तलिफ़ कागजों पर लिख लेते थे और यह चीजें मुतफर्रिक तरीका पर लोगों के पास रहीं लेकिन इन हज़रात को ज़्यादा एतमाद हिफ़्ज़ पर था यानी आम सहाबा कराम रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हुम पूरे कुरआन के हाफ़िज़ थे। तो इस तरह कुरआन पाक की तरतीब खुद हुजूर अलैहिस्सलाम ने दी थी लेकिन एक जगह किताबी शक्ल में जमा न फरमाया था। इसकी तीन वजह थीं एक तो

Scanned by CamScanner

सदहा हुफ्फाज इसको इसी तरतीब से याद कर चुके थे जो आज तक चली आ रही है और नमाज में पढना फर्ज था और नमाज के अलावा भी सहाबा कराम बरकत के लिए इसको अकसर औक़ात पढते ही रहते थे इस लिए इसके ज़ाया होने का कुछ अन्देशा न था।

दूसरे यह कि जेहाद और दीगर ज़रूरियात दीनिया की वजह से इतना मौका न मिल सका कि इसको एक जगह जमा किया जाता और तीसरे यह कि जब तक पूरा कुरआन न उतर आता इसको जमा करना गैर मुमकिन था क्योंकि हर सूरत की कुछ आयात उतर चुकी थीं कुछ उतरने वाली होती थीं। हुजूर की वफ़ात से कुछ रोज कब्ल नुजूल कुरआन की तकमील हुई। गरज यह कि हुजूर अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी पाक मे कुरआन करीम किताबी शक्ल मे एक जगह जमा न हो सका अलबत्ता मुरत्तिब हो गया। अल्लाह तआला की शान कि हजरत सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हो के जमाने में भी यानी हुजूर अलैहिस्सलाम की वफात ही के साल मुल्के यमामा के झूठे मुद्दई नबूवते मुस्लिमा कज्जाब और उसके साथियो से सहाबा कराम को सख्त जंग करनी पडी और इस जंग में तकरीबन सात सौ हाफिजे कुरआन भी शहीद हो गये तब हजरत उमर बारगाहे सिद्दीक मे हाज़िर हुए और अर्ज किया कि अगर इसी तरह हाफिजे कुरआन शहीद होते रहे तो बहुत जल्द कुरआन पाक ज़ाया हो जायेगा।

हजरत सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हो ने उन सहाबा कराम को जमा फरमाया जिन्होंने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाने पाक मे वही लिखने की खिदमत अन्जाम दी थी और उसका मोहतमिम हजरत जैद बिन साबित रज़िअल्लाहो अन्हो को करार दिया कि तुम तमाम जगह से कुरआन पाक की आयतें जमा कर के किताबी शक्ल में तैयार करो। ज़ैद इब्न साबित कहते थे कि आप वह काम क्यो करते हैं जो हुजूर अलैहिस्सलाम ने न किया। हजरत सिद्दीक अकबर ने फरमाया यह काम अच्छा है। हज़रत जैद इब्न साबित ने नेहायत मेहनत व जाँफिशानी से उन तमाम आयतों को यकजा जमा किया जो लोगों

के सीनों और खजूर के पुटठों और हड्डियों मे लिखी हुयी थीं। और तरतीब वही रही जो हुजूर अलैहिस्सलाम ने फरमाई थी। यह नुस्खा कुरआन पाक सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हो की हयात तक हजरत सिद्दीक ही के पास रहा फिर हज़रत फारुक़ आजम के पास रहा फिर उनके बाद हज़रत फ़ारूक आजम की बेटी और उम्मुल मोमिनीन जौजए रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हजरत हफ़्सा रजिअल्लाहो अन्हा के पास महफूज रहा। दौरे खेलाफत हजरत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो में हजरते हजैफ़ा इब्नुलयमान रजिअल्लाहो अन्हो जो कि आरमीनिया और आज़र बाइजान के कुफ्फ़ार से जंग फरमा रहे थे वहाँ की मुहिम से फारिग हो कर हाजिर बारगाह हुए और अर्ज़ किया। ऐ अमीरूल मोमिनीन ! लोगो में कुरआन पाक के मोतअल्लिक इख़्तेलाफ़ शुरू हो गये हैं अगर यह इख्तेलाफ बढते रहे तो मुसलमानो का हाल यहूद व नसारा की तरह हो जायेगा, लेहाजा इसका जल्द कोई इन्तेज़ाम कीजिए। वजह इख्तेलाफ यह थी कि बाज सहाबा कराम के नुस्खो मे हुजूर अलैहिस्सलाम के वह अल्फाज भी लिखे थे जो आपने बतौर तफसीर इरशाद फरमाये थे वह हजरात उसको कुरआन का ही जुज समझते थे हालाँकि वह अल्फ़ाज कुरआन न थे। जैसे कि मुसहफ इब्न मसऊद वगैरह नीज एक नुस्खा तमाम मुल्क के लोगों के लिए अब काफ़ी न था। नीज हाफिज सहाबा कराम को जो लुकमा कुरआन मजीद मे लगता था उसको निकालने में बहुत दुशवारी होती थी। इन वजूह की बिना पर हजरत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो ने फिर हज़रत ज़ैद इब्न साबित रज़िअल्लाहो अन्हो को हुक्म दिया और उनकी मदद के लिए अब्दुल्लाह इब्न जुबैर और सईद इब्न आस और अब्दुल्लाह इब्न हारिस इब्न हेशाम वगैरह को मोकर्रर फरमाया।

इन हज़रात ने हज़रत हफ्सा के पास से पहले जमा किये हुए कुरआन को मंगाया और फिर उनका मुकाबला हुफ्फ़ाज़ के हिफ्ज कुरआन से नेहायत तहकीक से कर के छ या सात नुस्खे नकल किये और यह नुस्खे ईराक, शाम, मिस्र वग़ैरह इस्लामी मुमालिक मे भेज दिये और असल नुस्खा हजरत हफ्सा

Scanned by CamScanner

रजिअल्लाहो अन्हा को वापस फरमाया और जिन सहाबा के पास तफ्सीर से मिले हुए नुस्खे मौजूद थे उनको मंगा कर जलवा दिया गया क्योंकि इन नुस्ख़ों का बाकी रहना आइन्दा फित्नो का दरवाजा खोल देता कि आइन्दा लोग इसको कुरआन पाक ही समझने लगते।

सैयदना उस्मान को जामेउल कुरआन इसी मानी करके कहा जाता है कि जामेउल उम्मते अला कुरआनिन वाहिदिन बेहरफिन वाहिदिन, यानी पूरी उम्मत को एक ही लोग़त पर कुरआन पढ़ने पर इकट्ठा किया।

शोरिश का आग़ाज़

जब तमाम इलाकों के अमीर मदीना मे मशविरा के लिए आये हुए थे फित्ना के सरग़नों ने तमाम इलाकों में एकदम बग़ावत करने का फैसला किया। लेकिन सिवाय कूफ़ा के वह कही अपने इरादों मे कामयाब न हो सके। अहले कूफ़ा यह बहाना बना कर कि वह मदीना अपने आमिल सईद बिन आस को तब्दील कराने की नियत से जा रहे हैं। मदीना वाले रवाना हो गये। जरआ के मकाम पर जो मदीना और कूफ़ा के दरम्यान वाके है उनकी मुठभेड़ सईद से हुई और सईद को मदीना वापस होना पडा। अहले कूफ़ा ने सईद की जगह अबू मूसा अशअरी को आमिल बनाने का मोतालबा किया जिसको हज़रत उस्मान ने मन्जूर कर लिया।

जब तमाम उमरा अपने अपने इलाको में पहुँच गये तो फित्ना परदाज़ों के बग़ावत बरपा करने का कोई इमकान न रहा। उन्होने मुख़्तलिफ़ शहरों में अपने हम ख़्याल लोगों से इस सिलसिले में खत व किताबत शुरु की और फैसला किया गया कि तमाम इलाकों से कुछ लोग एक वफ़्द की शक्ल में मदीना पहुँचें और वहाँ अपने आइन्दा तरीक़ कार के मोतअल्लिक़ सलाह व मशविरा करें। लोगों पर यह ज़ाहिर किया जाये कि वह इस्लाम की फ़लाह व बहबूद के लिए मदीना जा रहे हैं। मदीना पहुँच कर वह हजरत उस्मान से चन्द सवाल करें। ओम्माल और उमरा की

बेराह रवी और जुल्म व सितम की उनसे शिकायत की जाय। फिर इन बातो को बिलादे इस्लामिया में फैला दिया जाय कि हजरत उस्मान और ओम्माल के खिलाफ जो इल्जाम लगाये जाते हैं वह सब दुरूस्त हैं। चुनान्चा तीन शहरों कूफ़ा, बसरा, और मिस्र से तीन वफ़्द इस ग़रज़ के लिए मदीना की तरफ चले। जब वह मदीना पहुँचे तो उनके आमद का इल्म होने पर हजरत उ.मान ने दो आदमियों को भेजा कि उनकी गर्ज व ग़ायत का पता लगाया जाय। फित्ना के सरग़नों ने उनको देख कर यह ख्याल किया कि यह भी उन्हीं में से हैं चुनान्चा उन्होंने जो कुछ उनके दिल में था बिला कम व कास्त उनपर ज़ाहिर कर दिया कि खलीफ़ा से इन उमूर के सिलसिले मे बात चीत करने मदीना जा रहे हैं। जिनको वह पहले ही मुख़्तलिफ़ शहरो और इलाको में फैला चुके हैं। इसके बाद वह अपने इलाकों में वापस जाकर लोगो को यह बतायेगे कि हमने खलीफा से इन उमूर में बात चीत की। खलीफ़ा ने इन्कार तो नहीं किया लेकिन इनसे तौबा भी नही की। इसके बाद हम अगले साल हज के महीना में बतादाद कसीर मक्का में जमा होगे और यह जाहिर करेंगे कि हम हज के लिए आये हैं। मक्का पहुँच कर हम हज़रत उस्मान का मोहासरा करेगे। उन पर तर्क खेलाफ़त के लिए ज़ोर देंगे और अगर उन्होंने इन्कार किया तो उनको कत्ल कर देगे। इन दोनों आदमियों ने वापिस जाकर हज़रत उस्मान के पास सारी बातें दुहरायीं।

फिर आपने तमाम सहाबा केराम से मशविरा लिया। इस पर तमाम सहाबा ने मुत्तफेका तौर पर हज़रत उस्मान को यह सलाह दी कि इन सबको कत्ल करा दीजिए लेकिन हजरत उस्मान ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और फरमाया कि हम अफ़ू व दरगुजर से काम लेगे। उनके उज़्र कुबूल और उनको राह रास्त पर लाने की पूरी कोशिश करेगे। जब तक इनमें से कोई किसी हदे शरई को न तोड़े, या कुफ़्र का इज्हार न करे उसकी मुख़ालेफ़त न करेगे।

अहले मिस्र के उमरा मुन्दरजा जैल थे।

Scanned by CamScanner

1. अब्दुर्रहमान इब्न अदलीस अलबलवी।
2. कनाना इब्न बशरूल लैसी।
3. सौदान इब्न हमरान अलसकूनी।
4. कैसरा अलसकूनी।

इन सबका अमीर गाफ़की इब्न हरबुल अकी था। इनके साथ इब्नुस्सौदा अब्दुल्लाह भी था।

अहले कूफ़ा के सरदार मुन्दरजा जैल थे।

1. ज़ैद बिन सौमानुल अबदी। 2 अश्तर नख़ई।
3. जयाद इब्न नज़र हारसी। 4. अब्दुल्लाह इब्न असम आमरी।

इनका सरदार आमिर इब्न असम था।

अहले बसरा भी चार गिरोहो मे निकले। उनके सरदार मुन्दरजा ज़ैल थे।

1. हकीम इब्न जबलहुल अबदी।
2. ज़रीह इब्न एबादुल अबदी।
3. बशर इब्न शरीहुल कैसी।
4. इब्नुल महरश अलखनी।

इन सब का सरदार हरकूस बिन जुबैर अलसअदी था।

हज़रत उस्मान और सफ़रे आख़िरत

सैयदना उस्मान गनी की शहादत अपनी मज़लूमियत और मुसीबत के लेहाज से इस उम्मत मे पहली और बेनजीर शहादत है। मुसलमान मुत्तहिद व मुत्तफिक होकर कुफ़ व शआएर कुफ़ को फ़ना कर रहे थे और नबूवत की बरकते उनमें मौजूद थीं।

लेकिन हज़रत उस्मान की शहादत के बाद वह तमाम बरकतें ले ली गईं और जो तलवार काफ़िरों के कत्ल के लिए थी आपस में चलने लगी और इख़्तेलाफ व इफ़्तेराक का दायरा वसीअ से वसीअ तर होता चला गया। हजरत उस्मान की शहादत की ख़बर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पहले ही से दी थी। जो मुतवातिरुल मानी की हद तक पहुँच चुकी हैं।

तिर्मिजी ने इब्ने उमर से रवायत की है कि रसूले खुदा

सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने एक फित्ने का जिक्र फरमाया और हजरत उस्मान की तरफ इशारा कर के फरमाया। यह इस फित्ने में जुल्मन कत्ल किये जायेंगे। मुस्तदरिक में हाकिम ने रवायत की हजरत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद से कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाय" कि इस्लाम की चक्की पैंतीस साल के बाद अपने जगह से हट जायेगी। हज़रत उस्मान की शहादत ठीक 35 हिजरी में हुई।

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि खुदा की तलवार म्यान में रहेगी जब तक कि उस्मान जिन्दा हैं और जिस वक्त उस्मान शहीद कर दिये जायेंगे वह तलवार म्यान से निकाल ली जायेगी और फिर क़यामत तक म्यान में न जा सकेगी।

शहादत क्यों और कैसे ?

इब्तेदा यूँ हुई कि अंगुश्तरी मुबारक जो हुज़ूर के बाद सिद्दीक़ अकबर के हाथ मे रही और उसके बाद फ़ारूक आजम के हाथ में रही और उनके बाद हज़रत उस्मान के हाथ में आयी। एक रोज़ हज़रत उस्मान अरीस नामी कुएँ पर बैठे हुए थे और वह अंगूठी हाथ में थी। हाथ से उस कुएँ में गिर पडी। तीन दिन तक वह अंगूठी तलाश की गयी। तमाम पानी कुएँ से निकाला गया। उसकी बालू देखी गयी मगर कहीं अंगूठी का पता न चला। इस अंगुश्तरी का गुम होना था कि सारा निजाम दरहम बरहम हो गया। और हजरत उस्मान पर नुक्ता चीनियाँ शुरू हो गयीं। आप पर सबसे बडा एतराज़ यह था कि अपने ख़ानदान के लोगों को बड़े बडे ओहदों पर मोक़र्रर कर रखा था। इसी तरह और भी एतराज़ात थे मगर कोई भी एतराज़ ऐसा न था जो शरई तौर पर काबिले गिरफ्त हो सके। एक बार हाकिम मिस्र अब्दुल्लाह बिन सरह की शिकायत आयी कि वह बहुत ज़ुल्म करता है हज़रत उस्मान ने उसको एक फरमान तहदीद आमेज भेजा मगर बजाय इसके कि वह उसपर अमल करते शिकायत करने वालों को खूब पीटा यहाँ तक कि उनमें से एक आदमी मर भी गया।

Scanned by CamScanner

फिर सात सौ आदमी मिस्र से आये और मस्जिदे नबवी में सहाबा केराम से उन्होंने अपने मजालिम की दास्तान बयान की। हज़रत अली, तलहा, उम्मुल मोमिनीन हजरत आयशा ने हजरत उस्मान से इसके मोतअल्लिक बहुत कुछ कहा। हज़रत उस्मान ने अब्दुल्लाह इब्न सरह को हुकूमत से माजूल कर दिया और अहले मिस्र से दरियाफ्त किया तुम किसको अपना हाकिम पसन्द करते हो ? सबने कहा मोहम्मद इब्न अबी बकर को तजवीज किया। चुनान्चे हजरत उस्मान ने उनको फरमान लिख दिया और मुहाजिरीन और अन्सार की एक जमाअत को उनके साथ कर दिया कि मिस्र पहुँचकर अब्दुल्लाह इब्न सरह के मामलात की तहक़ीकात करें। यह सब लोग बजानिब मिस्र रवाना हो गये।

तीन मन्जिलें तय कर चुके थे, चौथी मन्जिल में देखते क्या हैं कि एक हब्शी गुलाम एक ऊँट पर सवार चला जा रहा और उसकी हालत ऐसी है जैसे कोई भागा हुआ हो। इन लोगो ने उस से पूछा तू कहाँ जा रहा है उसने कहा अमीरूल मोमिनीन ने मुझे हाकिम मिस्र के पास भेजा है लोगो ने कहा हाकिम मिस्र तो मोहम्मद इब्न अबी बकर यहाँ मौजूद है। उसने कहा मैं उनके पास नहीं भेजा गया हूँ। यह सुनकर मोहम्मद इब्न अबी बकर ने उसको गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछा तू किसका गुलाम है तो कभी कहता अमीरूल मोमिनीन का गुलाम हूँ कभी कहता मरवान का गुलाम हूँ। उससे पूछा गया तेरे पास कोई तहरीर है उसने साफ इन्कार कर दिया। तलाशी ली गयी तो एक खत निकला। वह ख़त खोला गया तो उस्मान की तरफ से अब्दुल्लाह इब्न सरह की जानिब यह मज़मून था कि मोहम्मद इब्न अबी बकर और उनके साथ जो लोग आ रहे हैं उन्हें किसी हीले से क़त्ल करा दो और जो तहरीर मेरी उनके पास है उसपर अमल न करो बदस्तूर तुम हुकूमत मिस्र पर क़ायम रहो और जो लोग मेरे पास तुम्हारी शिकायात लेकर आना चाहें उन्हें मत आने दो और मेरे हुक्म सानी का इन्तेजार करो।

इस खत को देखकर मोहम्मद इब्न अबी बकर और उनके साथियों के ग़ैज व गज़ब की कोई इन्तेहा न रही। सब लोग

मदीना वापस आ गये और हज़रत अली, तलहा, जुबैर, सअद रजिअल्लाहो अन्हुम को जमा करके उनके सामने वह ख़त पेश किया। उस ख़त को देखकर नेहायत ग़म हुआ और हज़रत अली और उनके साथ सहाबा केराम वह ख़त और गुलाम लेकर हजरत उस्मान के पास तशरीफ ले गये और उनसे पूछा यह गुलाम आप का है, उन्होंने फरमाया हाँ। फिर ख़त पढकर मज़मून सुनाया और पूछा यह ख़त आपने लिखवाया है तो आपने क़सम खाकर कहा नहीं। तमाम सहाबा को उनकी क़सम का यक़ीन हो गया कि उस्मान झूठी कसम नहीं खा सकते।

खत पहचाना गया तो मालूम हुआ कि मरवान का लिखा हुआ है। लोगों ने कहा कि मरवान को हमारे हवाले कीजिए ताकि हम इस मामला की तहकीकात करें। मगर उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो ने मरवान के हवाले करने से इन्कार कर दिया। आपने यह चाहा था कि किसी मुनासिब तदबीर से उसको अलाहेदा कर देंगें।

सहाबा केराम तो जाकर अपने घर बैठ रहे और अहले मिस्र ने हजरत उस्माने के घर का मोहासरा कर लिया और उन पर पानी बन्द कर दिया। जब हज़रत अली को इसकी इत्तेला मिली तो उन्होने थोड़ा सा पानी भेजा जो बमुश्किल तमाम हज़रत उस्मान तक पहुँचा और कई आदमी पानी ले जाने की वजह से ज़ख़्मी हुए। हज़रत अली ने यह फरमाया कि हम सिर्फ यह चाहते थे कि मरवान हमारे हवाले कर दिया जाय लेकिन हज़रत उस्मान का क़त्ल करना हम किसी तरह ग़वारा नहीं कर सकते और हज़रत हसनैन को हुक्म दिया कि तुम दोनों तलवार लेकर हजरत उस्मान के दरवाजे पर खड़े रहो किसी को अन्दर न जाने देना। हज़रत तलहा व जुबैर और चन्द दूसरे सहाबा केराम ने भी अपने साहबज़ादों को हिफ़ाज़त के लिए भेज दिया। बलवाइयों ने तीर अन्दाज़ी शुरू कर दी। एक तीर मरवान को लगा। बक़िया तीर मुहाफ़िज़ीन को लगे। हज़रत इमाम हसन खून में नहा गये। मोहम्मद इब्न तलहा भी ज़ख़्मी हुए। हज़रत अली के गुलाम कनबर को भी जख्म लगा। यह हाल देखकर मोहम्मद इब्न अबी

Scanned by CamScanner

बकर ने कहा यह बात अच्छी न हुयीं। अन्देशा है कि बनी हाशिम हमारे मुकाबले पर आ जायें लेहाज़ा जल्दी करो। और उनके साथ दो आदमी दीवार से मकान के अन्दर फाँद पडे। मोहम्मद इब्न अबी बकर हज़रत उस्मान के पास गये और रेश मुबारक पकड़ ली। हज़रत उस्मान ने फरमाया ऐ मोहम्मद ! तुम्हारे वालिद सिद्दीक अकबर अगर तुमको मेरे साथ यह बर्ताव करते देखते तो खुदा की कसम उनको बडा रन्ज होता। यह सुनकर मोहम्मद इब्न अबी बकर के हाथों मे लरजह पड़ गया। फौरन ही वह पीछे हट गये। मगर वह दोनों शख़्स जो उनके साथ थे उन्होंने अमीरूल मोमिनीन को ज़बह कर दिया. रज़िअल्लाहो अन्हो व अरजाहो अन्हा। उनकी बीवी हज़रत नायला ने बहुत शोर किया मगर उनकी आवाज़ बाहर तक नहीं जा सकी। आखिर कोठे पर चढ़कर उन्होंने आवाज़ दी। ऐ लोगो ! अमीरूल मोमिनीन शहीद कर दिये गये।

यह आवाज़ सुनकर लोग अन्दर दाख़िल हुए तो देखा कि आप शहीद हो गये और कातिल पुश्त की दीवार कूदकर भाग गये। हजरत अली आये और अपने दोनों साहब जादो को मारा कि तुम दोनो दरवाज़ों पर खड़े रहे और अमीरूल मोमिनीन शहीद कर दिये गये। हसनैन ने कहा। हम लोग क्या कर सकते थे। क़ातिल दरवाज़े से नहीं गये बल्कि मकान की पुश्त से घर के अन्दर दाख़िल हुए। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन"

जिस वक्त हज़रत उस्मान शहीद किये गये तिलावते कलाम पाक में मशगूल थे। उनका खून बहा तो कुरआन पाक की इस आयत पर गिरा "फसयकफ़ीकहोमुल्लाहो वहोवस्समीउल अलीम।"

शहादत से कुछ पहले हज़रत उस्मान बाला खाना पर तश्रीफ़ लाये। और चन्द सहाबा केराम को आपने पुकारा। वह बुला दिये गये। आपने बतौर इतमामे हुज्जत के चन्द अहादीस पढीं और सहाबा कराम से पूछा यह हदीसें आप लोगों ने भी रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुनी हैं या नहीं। सब ने तस्दीक़ की। उसके बाद अन्सार ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन।

आपकी मजलूमियत अब इन्तेहा को पहुँच गयी। हमसे नहीं देखी जाती। अगर आप हुक्म दे तो हम इन बागियो को तहे तेग कर दें। आपने फरमाया मैं इसको पसन्द नहीं करता कि मेरे हुक्म से किसी लाइलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाले का खून बहाया जाय।

लोगों ने कहा फिर आप खिलाफ़त से दस्त बरदार हो जायें। आपने फरमाया मैं यह भी नहीं कर सकता इसलिए कि रसूले खुदा ने मुझसे फरमाया था कि ऐ उस्मान ! अल्लाह तुमको एक कमीज़ पहनायेगा। लोग उसको उतारना चाहेंगे। अगर तुमने लोगों के कहने से उतार दिया तो जन्नत की खुशबू तुमको नसीब न होगी। लेहाजा मैं उसपर कायम रहूँगा। लोगो ने कहा फिर इस जुल्म से आपको किस तरह निजात मिलेगी।

बलवाई हजरत उस्मान को शहीद करने के बाद हजरत अ़ली के पास दौड़े गये और कहा हम आपसे बैअत करते हैं। आप ने कहा यह काम तुम्हारा नहीं है। अहले बद्र जिसके हाथ पर बैअत करेगे वही खलीफ़ा होगा। वह लोग असहाब बद्र को बुलाकर लाये। सबने बिल इत्तेफाक कहा कि अब आपसे ज्यादा कोई मुस्तहिक़ ख़ेलाफ़त नहीं। आपने फ़रमाया मुझे अल्लाह से हया आती है कि उस्मान शहीद कर दिये गये और अभी दफ़्न भी न हुए और मैं बैअ़त ले लूँ। आपके इस फरमाने से लोगों ने दफ़्न की इजाज़त दे दी।

सहाबा के अक़वाल

मोहम्मद इब्न हातिब कहते हैं मैं मदीना आने लगा तो मैंने हज़रत अली से कहा कि अगर हमसे लोग उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो के बारे में दरियाफ़्त करेंगे तो हम क्या जवाब देंगे। हज़रत अली ने फरमाया तुम यह कह देना कि अल्लाह की क़सम उस्मान इस आयत के मिस्दाक़ थे। "अल्लज़ीना आमनू सुम्मत्तक़ौ वअहसनू वल्लाहो योहिब्बुल मोहसेनीन।"

हज़रत सईद बिन ज़ैद कहते थे कि ऐ लोगो! तुमने जो जुल्म उस्मान पर किया अगर उसकी वजह से ओहद पहाड़ हट जाता तो हक़ बजानिब था।

Scanned by CamScanner

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद फरमाते थे कि लोग अगर उस्मान को शहीद कर देंगे तो उनका बदला न पायेंगे।

हज़रत हुज़ैफह से लोगों ने पूछा यह मिस्री लोग जो हज़रत उस्मान पर बग़ावत करके आये हैं क्या करेंगे ? हज़रत हुज़ैफ़ह ने कहा क़त्ल कर देंगे मगर वह जन्नत में जायेंगे और उनके क़ातिल दोज़ख़ में जायेंगे।

हज़रत अबूजर ग़फ़्फ़ारी फरमाते थे कि अगर उस्मान मुझे सर के बल चलने का हुक्म देते तो मैं सर के बल चलता।

हज़रत ज़ैद इब्न साबित हज़रत उस्मान की शहादत के दिन बहुत रोये। हजरत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास फरमाते थे अगर सब लोग हज़रत उस्मान के क़त्ल पर मुत्तफ़िक हो गये होते तो यक़ीनन आसमान से पत्थर बरस पडते।

यज़ीद इब्न हबीब कहते हैं जिस कदर लोग मिस्र से हज़रत उस्मान पर बग़ावत करके आये थे उनमें एक भी ऐसा न था जिसको जुनून न हो गया हो।

हज़रत उस्मान का सरापा

क़द मोतवस्सित और रंग सफेद माएल ब ज़र्दी था। चेहरा मुबारक पर चेचक के चन्द निशानात थे। सीना कुशादा था। दाढ़ी घनी थी। सर में बाल रखते थे। अख़ीर उम्र में ज़र्द ख़ेज़ाब बालों में लगाते थे। और दॉतों को सोने के तार से बंधवाया था।

हज़रत उस्मान के दौरे हुकूमत पर एक नज़र

हज़रत उस्मान गनी की नेकी व पाकबाज़ी मुसल्लमह है। आप एक नेहायत ही सीधे साधे और सच्चे पक्के मुसलमान थे लेकिन कुछ ऐसे भी हुकमरान मरवान बिन अलहिकम जैसे आप की दौरे हुकूमत व खेलाफत में आ गये थे जो खुद गर्ज़ व इब्नुल वक्त थे जिन की वजह से हज़रत उस्मान के खेलाफ बुरी नागवारी फैल गयी थी। जिसका इख़्तेताम हज़रत उस्मान की शहादत पर भी न हुआ बल्कि हजरत अली को इसी तलवार को जो मुश्रेकीन पर चला करती थी अपनों पर चलानी पडी।

हजरत उस्मान ने एशाअत इस्लाम के लिए मुख़्तलिफ मुमालिक में तबलीगी वफ़ूद भी रवाना किये थे जिसमे एक वफ़द मुगीरा बिन शोअबा साबिक गवर्नर कूफा की सरकर्दगी में बज़रिए जहाज हिन्दुस्तान भी आया था। और मालाबार में उसने एशाअते इस्लाम के लिए बड़ा काम भी किया था। राजा ज़मूरन ने अमीर वफ़द की ज़बानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हालात सुनने के बाद इस्लाम क़ुबूल कर लिया था।

आजरबाइजान और ईरान में बग़ावत को खत्म किया गया। अफ़्रीका पर हमला करके उसको फतह कर लिया गया।

हज़रत उस्मान पर जो एतराज़ात किये गये उनके जवाबात

(रज़िअल्लाहो अन्हो)

आप पर जिस कदर एतराज़ात किये गये हैं उनमें मशहूर इल्जामात यह हैं।

(1) पहला इल्जाम यह है कि आपने कुब्बार सहाबा को उनके ओहदों से माजूल कर दिया।

इसका जवाब यह है कि अगर इस एतराज़ को दुरुस्त मान लिया जाय तो फिर कौन है जो इससे बचा हुआ है। क्या आदलुल असहाब उमर फारूकुल आज़म जिनकी फेरासत दूर अन्देशी और अद्ल व इन्साफ दुनिया भर में ज़र्बुलमिस्ल है यह इल्ज़ाम आयद नहीं होता ? आपने हजरत खालिद बिन वलीद जैसे लायक सिपेहसालार जिनको रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सैफुल्लाह का खिताब दिया था, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द इब्न वक़ास फ़ातेह ईरान को माजूल कर दिया था। फिर क्या यह इल्ज़ाम असदुल्लाहुल ग़ालिब हजरत अ़ली पर आयद नहीं होता जिन्होंने खिलाफ़त सभालते ही हजरत उस्मान के तमाम ओम्माल को माजूल कर दिया, और उन माजूलीन में तराबलस आरमीनिया और कब्रिस के फातेहीन भी शामिल थे।

Scanned by CamScanner

हजरत उस्मान ने जिन हज़रात को माजूल फ़रमाया उनके इस्माये गिरामी मुन्दरजा ज़ैल हैं।

(1) हज़रत उमर बिन आस फ़ातेह ईरान। (2) हजरत सअद बिन अबी वक़ास गवर्नर कूफ़ा। (3) हज़रत अबू मूसा अशअरी वालिए बसरा। (4) हजरत मग़ीरा बिन शोअबा। (5) हजरत अब्दुल्लाह इब्न अरक़म मोहतमिम बैतुल माल।

1. हज़रत उमर बिन आस के माजूल करने की वजह यह थी कि उन्होंने स्कन्दरिया की बगावत फ़ुरू करने में जिम्मियों के साथ ग़ैर मुन्सिफ़ाना सुलूक किया था लौंडी गुलाम बना लिया था। नीज नई नहरें जारी होने के बावजूद वह मिस्र के मालियात में इजाफ़ा न कर सके। लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह इब्न सरह रजिअल्लाहो अन्हो के तक़र्रुर के बाद मालिया बहुत ज़्यादा आना शुरू हो गया था।

2. सअ़द इब्न वक़ास ने बैतुल माल से एक बड़ी रक़म कर्ज ली लेकिन उसको वक्त पर अदा न कर सके। इसी वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअ़द मोहतमिम बैतुल माल से तनाज़अ भी हुआ।

3. अबू मूसा अशअ़री के माजूली का सबब यह हुआ कि वह वहाँ की रेआ़या को खुश न रख सके और लोगों ने उनकी माजूली का मोतालबा किया।

4. मुग़ीरा बिन शोअ़बा पर रिश्वत सतानी का इल्ज़ाम लगाया गया अगरचे यह सरासर बोहतान था। लेकिन हज़रत उमर ने उनकी जगह सअ़द इब्न वकास के तक़र्रुर की वसीयत की थी। इस लिए माजूल कर दिया गया।

5. अब्दुल्लाह इब्न अरक़म के माजूल की वजह उनका बुढापा था इसलिए इस खिदमत को ज़ैद इब्न साबित के सुपुर्द किया गया। जाहिर है कि ओ़म्माल और दूसरे ओहदेदारो के माजूल करने के जवाब ऊपर लिखे गये उनपर किसी भी दानिशमन्द को एतराज नहीं हो सकता फिर यह कैसे माना जा सकता है कि हज़रत ने महज़ ज़ाती एनाद की वजह से इन बुजुर्गों को माजूल कर दिया।

(2) दूसरा इल्जाम यह है कि आपने नाअहल और ना तजुर्बाकार लोगों को बडे बडे ओहदों पर मोक़र्रर कर दिया।

अगर ऐसा है और आपके मोक़र्रर करदा अ़माल बेराह रू होते तो जब तफ़तीश अहवाल के लिए हजरत उस्मान ने अपने कलमरो में मदीना से लोगों को भेजा तो वह लोग हरगिज हरगिज़ यह रिपोर्ट न लाते कि तमाम ओ़म्माल बहुत अच्छे काम कर रहे हैं। उनसे रेआया के किसी फर्द को शिकायत नहीं है और उन्होंने अद्ल व इन्साफ को पूरी तरह मुल्क में कायम रखा है अगर वह नाअह्ल व ना तजुर्बेकार होते तो रेआया का एक बड़ा हिस्सा उनसे खेलाफ़ हो जाता और शोरिश बर्पा कर देता। लेकिन हेम देखते हैं कि सिवाय चन्द फित्ना पर्दाजों के जिन्होंने महज़ अपनी ज़ाती अगराज़ हासिल करने के लिए ओ़म्माल के खिलाफ शोर व ग़ोगा बुलन्द किया था बाकी रेआया इस फित्ना से बिल्कुल अलाहेदा रही। बेशक वलीद इब्न उकबा, सईद इब्न आस, अब्दुल्लाह बिन सरह और अब्दुल्लाह इब्न अ़ब्बास इस बुलन्द हैसियत के मालिक न थे जो सहाबा कराम को हासिल थी लेकिन इनके इन्तेजामी कारनामे और बड़ी बड़ी फतूहात जो अहदे उस्मान में उन्होंने कीं किसी तरह भी नज़र अन्दाज़ नहीं की जा सकतीं। उन्हीं की हिम्मत व दिलेरी और जुर्रात से तिब्रिस्तान, आरमीनिया, तराबलस, कब्रस, हेरात, सजिस्तान और नीशापुर इस्लामी हुदूद में शामिल हुए और इस्लामी हुकूमत वसीअ़ से वसीअतर होती चली गयी। क्या यह सब फ़तूहात ना अहल और ना तजुर्बाकार अ़माल के हाथ से अन्जाम पाती रहीं।

(3) यह इल्जाम भी बहुत मशहूर है कि आपने रिश्तेदारों और खानदान के लोगों को बड़े बड़े ओहदों पर मोकर्रर किया। इस इल्ज़ाम का जवाब खुद हज़रत उस्मान ने मजमए आ़म में दिया था। जिसमें बाज़ सहाबा भी मौजूद थे। आपने फ़रमाया "लोग मुझ पर ऐतराज़ करते हैं कि मैं अपने खानदान के लोगों को कलीदी ओहदे देने में दूसरे लोगों पर तरजीह देता हूँ मगर क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कुरैश को बाकी अरब वालो पर तरजीह न देते थे ? और क्या कुरैश में से बनू हाशिम

Scanned by CamScanner

का सबसे ज्यादा ख़्याल नहीं रखते थे ?

देखने की बात यह है कि जिन लोगों को हज़रत उस्मान ने अहम ओहदों पर मोकर्रर किया वह दर हक़ीक़त इन ज़िम्मेदारियों के पूरा करने के अहल भी थे या नहीं ? अगर वह लोग अहल थे और अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाते थे तब यह एतराज़ सरासर बातिल हो जाता है कि आपने अपने रिश्तेदारों को बड़े बड़े ओहदे दिये। वाक़ेआ यही है कि आपने जिन लोगों को बड़े बड़े ओहदे दिये बिल उमूम वह उमूरे मुमलिकत को सर अन्जाम देने की पूरी सलाहियत रखते थे जब ही यह बात थी कि ग्यारह बरस की तवील मुद्दत मे सल्तनत के कामों मे किसी तरह का कोई जोअफ़ नहीं आया और हर काम खुश उस्लूबी के साथ अन्जाम पाता रहा। फ़तूहात भी होती रहीं और मुल्की इन्तेजाम में भी किसी तरह की कोई खराबी वाकेअ नहीं हुई और यह सूरत उस वक्त तक नहीं हो सकती जब तक अ़माल, हाकिम और कारकुन लायक, क़ाबिल और फ़र्ज शनास न हों।

(4) यह एतराज़ भी किया जाता है कि आपने बैतुल माल से अपने अजीज़ व अक़ारिब को कसरत से दौलत अता की और बेजा तसर्रुफ किया। इन ऐतराज के सबूत में जिन वाक़ेआत को पेश किया जाता है वह या तो अज़ सर ता पा ग़लत् हैं या रग आमेज़ कर के उनकी सूरत बदल दी गयी है।

हज़रत उस्मान ज़ाती तौर पर नेहायत मालदार थे। तेजारत से आपको लाखों रूपयों की आमदनी होती थी। आपने एक कसीर रकम खर्च करके मस्जिदे नबवी की तौसीअ की। लाखें रूपये से जैशे इसरत को आरास्ता किया। हज़ारहा रूपये देकर सरे रोमा को एक यहूदी से ख़रीद कर मुसलमानों पर वक्फ कर दिया। ऐसा शख्स जो खुदा की राह में लाखों रूपये खर्च करने से भी दरेग़ न करे अप्ने माल में से अजीज़ व अक़ारिब को कुछ नहीं दे सकता था। हज़रत उस्मान के सामने भी मोअतरेज़ीन ने यही एतराज किया था जिसका जवाब खुद उस्मान रजिअल्लाहो अन्हो ने अपनी तक़रीर में यूँ दिया। यह तक़रीर तिबरी मे भी दर्ज है।

हजरत उस्मान ने फ़रमाया। लोग कहते हैं कि मै अपने ख़ानदान वालों से मुहब्बत करता हूँ और उनके साथ फ़ैयाज़ी करता हूँ लेकिन मेरी मुहब्बत ने मुझे जुल्म की तरफ मायल नहीं किया। बल्कि मै सिर्फ उनके वाजिबी हुक़ूक़ अदा करता हूँ और इसी तरह मेरी फ़ैयाज़ी भी मेरे ही माल तक महदूद है। मुसलमानों का माल न तो मै अपने लिए हलाल समझता हूँ और न किसी दूसरे के लिए। मै रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और अबूबकर व उमर के अहद में भी अपने माल से अज़ीजों को गेराँ कद्र अतिया दिया करता था। और अब जबकि मै तबई उम्र को पहुँच चुका हूँ और मैंने अपना तमाम सरमाया अहल व अयाल के सुपुर्द कर दिया है तो मुफ़सिद ऐसी बातें मशहूर करते हैं। खुदा की कसम मैंने किसी शहर पर ख़ेराज का कोई ऐसा बार नहीं डाला कि इस किस्म का इल्ज़ाम देना जायज हो। जो कुछ वसूली हुआ वह उन्हीं लोगों की बेहतरी और तरक्की पर सर्फ हुआ। मेरे पास सिर्फ ख़ुम्स आता है। और उसमें से भी मेरे लिए कुछ लेना जायज नहीं। खुदा के माल में एक पैसा का भी तसर्रुफ नहीं किया जाता। मैं इसमें से कुछ नहीं लेता। यहाँ तक कि खाना भी खाता हूँ तो अपने ही माल से।

(तर्जमा अज़ तिबरी)

(5) मरवान को तराबलस अलग़र्ब के माले गनीमत का खम्स दिया गया। यह हज़रत उस्मान पर एक अज़ीम बोहतान है। तारीख इब्न ख़ल्दून में लिखा है कि "इब्न जुबैर ने फ़तह की खुश खबरी और माले ग़नीमत का पाँचवा हिस्सा दारूल खेलाफ़ा रवाना किया जिसको पाँच लाख दीनार पर मरवान ने ख़रीद लिया।"

ज़ाहिर है कि किसी शख़्स को अतिया देने और फ़रोख़्त करने मे ज़मीन व आसमान का फ़र्क है।

(6) बैतुल माल से ज़ैद इब्न साबित को एक लाख दिरहम दिये। यह रवायत भी बे बुनियाद है।

हजरत उस्मान ने हुक्म दिया कि इसको रेफ़ाहे आम के काम पर सर्फ किया जाय चुनान्चा उन्होंने इसको मस्जिद की

Scanned by CamScanner

तौसीअ और तामीर में सर्फ़ कर दिया।

(7) यह इल्जाम भी लगाया जाता है कि आपने मदीना के अतराफ़ में बक़ीअ को सरकारी चरागाह करार दिया और अवाम को इसमें जानवर चराने से रोक दिया।

इसका जवाब यह है कि फौजी और कौमी जरूरत के लिए चरागाहे बनवाना हर हाकिम का फर्ज है। खुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत उमर ने ऐसी चरागाहें बनवायीं तो अगर हजरत उस्मान ने बकीअ़ को सरकारी चरागाह क़रार दे दिया तो इसमें एतराज़ की कौन सी बात है। बाकी रहा अवामुन्नास को इससे मुस्तफीद न होने देना तो चूँकि यह चरागाहे सरकारी खर्च पर तैयार हुई थीं और फौजी घोडे और जकात के ऊँट इसमें चरते थे इसलिए अगर अवामुन्नास भी इसे इस्तेमाल करते तो नुकसान का अन्देशा भी था और गड बड़ पैदा हो जाने का भी क़वी एहतमाल था इस लिए रफ़ए शर की खातिर हज़रत उस्मान ने लोगों को अपना जानवर चराने से रोक दिया।

(8) आपने अपने हाशिया नशीनो और क़राबतदारो को अतराफ़े मुल्क में बाज नेहायत वसीअ़ कतआत दिये।

इसका जवाब यह है कि ईराक में बहुत सी ज़मीन ग़ैर आबाद और बन्जर पड़ी हुयी थीं। जिन लोगों ने उन्हें काबिले ज़राअत बनाया आपने वही जमीन उन्हें मरहमत फ़रमा दी। फेकह का भी यही मसला है कि जो शख्स नाकाबिले काश्त ज़मीन को क़ाबिले काश्त बनाये वह ज़मीन उसकी मिल्क तसौवर होगी। इसी तरह ममलुकत में ज़्यादा रक़्बह को क़ाबिले काश्त बनाया जा सकता है और लोग शौक से ज़राअत करते हैं।

लेहाज़ा अगर इन बातों को जो सहाबा केराम की तरफ मनसूब हैं सही तस्लीम कर लिया जाय तो फिर यह मानना पड़ेगा कि नऊज़ बिल्लाह मिन ज़ालिक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तालीम व तरबियत ने उन लोगों के दिल में किसी किस्म का भी तग़ैयुर पैदा नहीं किया बल्कि वह भी दूसरे गिरोहों और दूसरी क़ौमों की तरह महज़ अपना इक्तेदार कायम करने के लिए कोशाँ रहे।

लेकिन इस गिरोह पर जिसके मोतअ़ल्लिक खुदा खुद कहे "रज़िअल्लाहो अन्हुम वरजू अनहो" अगर लाखों मोअ़र्रिख़ीन भी मुत्तफेका तौर पर यह इल्जाम आयद करें कि वह खुदाए तआ़ला के बताये हुए रास्ता से हट गये तो उन लाखों की बातों को खुदाए तआला की एक बात के मुक़ाबले में परकाह के बराबर भी वक़अत नही दी जा सकती।

हजरत अली, हजरत आयशा सिद्दीका, हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ़, हजरत उमर बिन आस, हज़रत सअ़द बिन वक़ास, हजरत अबूज़र, हजरत तलहा, हज़रत जुबैर जैसे जलीलुल क़द्र और पाकबाज़ सहाबा पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि वह हज़रत उस्मान के मुखालिफ़ थे हालाँकि वह नेहायत पाकबाज़ थे। उन्होंने हर मौके पर इस्लाम की अज़ीमुश्शान ख़िदमात अनजाम दी हैं। इनके मोतअ़ल्लिक यह खयाल कैसे किया जा सकता है कि वह ख़लीफ़ा की मोख़ालिफ़त और उससे बुग्ज़ व एनाद रखने के गुनाहे अज़ीम के मुरतकिब हुए होंगे और महज़ इस नाराजी में कि इनमें से बाज को माजूल क्यों कर दिया गया और बाज़ को ओहदे क्यों न दिये गये। उन्होंने ऐन इस मौके पर ख़लीफ़ा का साथ छोड दिया जबकि ख़लीफ़ा का शहीद होना सिर्फ एक फर्द का मारा जाना न था बल्कि तमाम आलमे इस्लाम के लिए हमेशा के वास्ते फित्ना का बाइस था।

कुतुब तारीख व सैर में इन बुजुर्गों की तरफ़ जो एतराज़ मन्सूब किये गये हैं उनका बातिल होना जरा से ग़ौर व फिक्र और तदबीर से मालूम हो जाता है। हैरत की बात है कि चौदह सौ बरस बाद पैदा होने वाले इन्सान तो अक्ल के काम लेकर इन एतराज़ के बातिल होने पर यकीन कर लेते हैं लेकिन सहाबा केराम जिनके सामने तमाम वाक़ेआत रोनुमा हो रहे थे बे धड़क इन इल्ज़ामात पर ईमान ले आते हैं लेकिन जब हज़रत उस्मान इन इल्जामात की तरदीद मस्जिद में खडे होकर करते हैं और सहाबा से अपनी बात की तस्दीक़ चाहते हैं तो सबसे पहले हज़रत उस्मान की तस्दीक करने वाले, उनको इस इल्जामात से बरी करार देने वाले वही लोग थे। जो पहले उनको इल्ज़ामात से

Scanned by CamScanner

मुलव्विस क़रार दे चुके थे। फिर क्या ही अजब बात है कि जब बलवाइयों ने तमाम मदीना पर कब्ज़ा कर के हज़रत उस्मान के घर का मोहासिरा कर लिया तो हज़रत उस्मान की हिफ़ाज़त के लिए अपने लड़कों को भेजने में पेश पेश हज़रत अ़ली, हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर थे जिनके मोतअ़ल्लिक इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह हज़रत उस्मान के अशद तरीन दुश्मनों में से थे। क्या कोई शख़्स अपने दुश्मन की जान बचाने के लिए अपने बेटों को कुर्बान करने के लिए तैयार हो सकता है ? फिर क्या यही तलहा, जुबैर, आयशा सिद्दीका और उमर बिन आस नहीं थे जिन्होंने हज़रत उस्मान की शहादत पर बाद इनका केसास लेने की आवाज बुलन्द की ? क्या किसी दुश्मन का भी केसास तलब किया जाता है ?

फिर क्या हज़रत अ़ली ही नहीं थे जिन्होंने बलवाइयों को समझाने और हजरत उस्मान के घर पानी पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश की और जब वह इसमें कामयाब न हो सके तो अपना अमामा अपने सर से उतार कर हज़रत उस्मान के घर में फेंक दिया ताकि आपको पता चल जाय कि उन्होंने हत्तल मक़दूर कोशिश की मगर कामयाब न हो सके। फिर क्या सहाबा ने हर मक़ाम पर हज़रत उस्मान की तस्दीक न की ? क्या बार बार हज़रत उस्मान को न समझाया कि आप मुफ्सिदीन के साथ नरमी का बर्ताव न करें बल्कि उनको इबरतनाक सज़ाये दे ? क्या अपने दुश्मन को भी कोई ऐसा मशविरा दे सकता है ? रहा यह अम्र कि सहाबा ने बलवाइयों के हमले के वक्त हज़रत उस्मान की मदद क्यों न की और क्यों अपने घरों में बैठे रहे तो इसका जवाब यह है कि बाग़ियों ने जिस तरह मदीना पर कब्जा किया था। उसने सहाबा के लिए कोई मौका ही न छोडा था कि वह बागियों के मुक़ाबले में आते मुफ़्सिदीन ने यकरूख बग़ैर किसी इत्तेला के मदीना पर कब्जा कर लिया और एलान कर दिया कि कोई शख़्स भी हथियार लेकर न निकले। जो बाहर निकलेगा कत्ल कर दिया जायेगा। ऐसे मौके पर मुनज़्ज़िम मुक़ाबला आखिर किस तरह हो सकता है ? लेकिन इसके बावजूद सहाबा कराम ने हजरत उस्मान

से बाग़ियों के ख़िलाफ़ लडने की इजाज़त चाही लेकिन हज़रत उस्मान किसी भी तरह लड़ाई पर राजी न हुए और फ़रमाया मेरी जान बचाने की खातिर इस्लाम मे तलवार कशी और ख़ूँरेज़ी न करो। लेकिन इसके बावजूद सहाबा हज़रत उस्मान की मदद से गाफ़िल न रहे। अकाबिर सहाबा ने अपने अपने लड़को को हजरत उस्मान की हिफ़ाज़त के लिए भेज दिया और खुद मुफ़्सिदीन को समझाने बुझाने में लग गये क्योकि इसके बग़ैर कोई चारा भी न था। मगर खुदाई तक़दीर को कौन रोक सकता है बावजूद सहाबा की कोशिशों और उनके बेटों के मुक़ाबला के हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो शहीद कर दिये गये।

क्या इन उमूर की मौजूदगी में यह साबित नहीं होता कि सहाबा कराम रिज़वानुल्लाहा अलैहिम अजमईन पर हज़रत उस्मान की मुखालिफ़त करने और उनको बेयार व मददगार छोड़ने का जो इल्जाम लगाया जाता है वह सरासर बेबुनियाद और गलत है। सहाबा कराम पूरे तौर पर हज़रत उस्मान के वफ़ादार थे और आपके छोड देने का ख्याल एक लम्हा के लिए भी उनके दिलों में नहीं आ सकता था। सहाबा कराम को हजरत उस्मान की ख़िलाफ़त पर कोई एतराज़ न था।

फ़साद का अस्ल बाइस यह था कि दुश्मनाने इस्लाम ने ज़ाहिरी तदाबीर से इस्लाम को तबाह न होते देखकर ख़ुफ़िया रेशादवानियों की तरफ़ तवज्जह की और बाज अकाबिर सहाबा का आड लेकर चुपके चुपके मुसलमानों में तफर्का पैदा करना चाहा। सज़ा याफ़्ता मुजरिमों को अपने साथ मिलाया। लुटेरो को तहरीस दिलाई। मज़हब के पर्दे में लोगों के ईमान को कमजोर किया और हज़ारों हीलों और तदबीरों से एक जमाअत तैयार की। फिर झूठ, जअ़ल और फ़रेब से काम लेकर ऐसे हालात पैदा कर दिये जिनका मुक़ाबला हज़रत उस्मान और दीगर सहाबा के लिए मुश्किल हो गया।

Scanned by CamScanner

बाबुल इल्म असद उल्लाहिल ग़ालिब

सैयदना हज़रत

अली इब्ने अबी तालिब

रज़िअल्लाहो अन्हो

३५ हिजरी ता ४० हिजरी

शफ़ीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

मौलाए कायनात हज़रत अ़ली की इब्तेदाई ज़िन्दगी

(रज़िअल्लाहो अन्हो)

आपका शजरए नसब यह है – अ़ली इब्न अबी तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मोनाफ़ बिन कसा बिन कलाब बिन मर्रा बिन कअ़ब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फहरा इब्न मालिक बिन नज़र इब्न कनाना।

अबुल हसन व अबू तोराब कुनीयत है जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अता करदा है। माँ का नाम फ़ातमा बिन्त असद बिन हाशिम है। आप बच्चों में सबसे पहले ईमान लाये। अशरए मोबश्शिरा में से एक हैं। सैयदतुन निसा अलआलमीन सैयदा फ़ातमा के शौहर मोहतरम, रसूलल्लाह के दामाद, साबिक़ीन अव्वलीन में से एक। आपने अपने बचपन में भी बुत परस्ती न की। हिजरत की रात अल्लाह के रसूल ने अपनी जगह लिटा दिया कि लोगों की अमानतें वग़ैरह उनके हवाले कर के फिर हिजरत करना।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ तमाम ग़ज़वात में शरीक हुए। सिवाए तबूक के क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस मौके पर उन्हें मदीना का ख़लीफा बना दिया था।

तमाम गज़वात मे नुमायाँ ख़िदमात अन्जाम दीं। मुख़्तलिफ़ मौकों पर लवाए इस्लाम उन्हीं को दिया गया।

आपकी फ़ज़ीलत अहादीस की रौशनी में

हज़रात शेख़ैन ने सअ़द इब्न अबी वकास से रवायत किया कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक में आपको मदीना का ख़लीफा बना दिया तो अ़ली ने अर्ज किया। "तख्लफनी फिन्निसाये वस्सिबयान"। मुझे बच्चो और औरतों में आप छोड़ रहे हैं। فقال اما ترضیٰ ان تکون منی بمنزلة هارون من

موسیٰ غیران لا بنی بعدی۔ क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हारून ने मर्तबा लिया। ऐसे तुम रहो। सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। और बुखारी व मुस्लिम ने तख़्रीज की सहल इब्न सअद से कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खैबर के दिन फरमाया कि कल ऐसे को झण्डा दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह फ़तह देगा। अल्लाह व रसूल उससे मुहब्बत करते हैं वह अल्लाह व रसूल से मुहब्बत करता है। रात भर लोग इस फिक्र में रहे कि सुबह झण्डा किसको दिया जाता है और सब के सब उसकी उम्मीद रखते थे तो आपने फरमाया अइना अली। अली कहाँ हैं। कहा गया कि उनकी आँखें दुख रही हैं तो वह तशरीफ़ लाये तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोआबे दहन उनकी आँखों में डाला और उनके लिए दुआ की तो उन्हें शिफ़ा मिल गयी। गोया उन्हें कोई तकलीफ़ न थी चुनान्चे आपको झण्डा दिया गया और फतह हुई।

मुस्लिम ने सअद बिन वकास से तखरीज की। जब आयत मुबाहिला नाज़िल हुई तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अली, फ़ातमा, हसन व हुसैन को बुलाया। "फ़क़ाला अल्लाहुम्मा हाऊलाये अहली"।

तिर्मिजी ने अबू सरहहा व ज़ैद इब्न अरक़म से रवायत की है कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया "मन कुन्तो मौलाहो फअली मौलाहो"। जिसका मैं मौला हूँ अली उसके मौला हैं। और तिबरानी ने यूँ रवायत की اللهم وال من والاه وعاد من عاداه۔ ऐ अल्लाह जो उनसे मोहब्बत रखे तू उससे मोहब्बत कर और जो उनसे दुश्मनी करे उसको दुश्मन रख।

तिर्मिजी ने इब्न उमर से रवायत की। فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انت اخي في الدنيا والآخرة۔ مذلصا यानी तुम दुनिया व आखेरत में मेरे भाई हो।

मुस्लिम ने हजरत अली से तख़्रीज की। والذی فلق الحبة وبرأ النسمة انه لعهد النبي الامی انه لا یحبنی الامومن ولا یبغضی الامنافق۔ यानी मुझसे मोमिन मोहब्बत रखेगा और

मुनाफ़िक बोग़्ज रखेगा। यह ही नबी उम्मी ने मुझसे फ़रमाया।

तिर्मिज़ी व हाकिम ने अली से रवायत की। قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انا مدينة العلم وعلى بابها۔ मैं इल्म का शहर हूँ। अली उसके दरवाजे हैं।

अबू यअ़ला और बज़ार ने सअद बिन वकास से तखरीज की। من اذی علیا فقد اذانی जिसने अली को अज़ीयत दी उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाया।

दूसरी हदीस में यूँ भी आया हे कि दो जमाअतें अली की मोहब्बत में हलाक होंगी। एक हद से ज़्यादा मोहब्बत करने की वजह से और एक अदावत रखने की वजह से।

तिबरानी औसत ने उम्मे सलमा से तख़रीज की। क़ालत समेअता रसूलल्लाहे सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बक़ौले अली مع القرآن والقرآن مع علی ولا یفترقان حتی یرد علی الحوض۔ अली कुरआन के साथ हैं और कुरआन अली के साथ। दोनों एक दूसरे से अलग न होंगे यहाँ तक कि हौज़ पर मुलाक़ात करेंगे।

(तारीखुल खोलफ़ा)

हज़रत अली की शुजाअत व इल्म व फ़ज़्ल

शुजाअत व दिलेरी में सारे अरब में कोई भी हजरत अली का मुकाबला नहीं कर सकता था। आपकी ग़ैर मामूली जुर्रात ही की बिना पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने असद उल्ला यानी शेरे खुदा का खिताब दिया था। जंगे ओहद में आपके सोलह जख्म आये थे। जंगे खैबर में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको झण्डा देते हुए पेशनगोई की थी कि ख़ैबर अली के ही हाथ फ़तह होगा। और आपकी यह पेशनगोई हर्फ ब हर्फ दुरूस्त साबित हुई.। हज़रत अली की बहादुरी के कारनामों से तारीख़ें भरी पडी हैं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि जंगे ख़ैबर में आपने अपनी पीठ पर ख़ैबर का दरवाज़ा उठा लिया और मुसलमान उसपर चढ़कर क़िले के अन्दर दाखिल हो गये और ख़ैबर को फ़तह कर लिया। जब आपने इस दरवाज़े को फेंक दिया

Scanned by CamScanner

सके। इब्न तो चालीस आदमी उसे घसीट कर दूसरी जगह डाल सके। इब्न असाकर रावी हैं कि हज़रत अली करमल्लाहो वजहहू ने जंगे ख़ैबर में किला ख़ैबर का दरवाज़ा उठाकर बहुत देर तक हाथ में रखा और उससे ढाल का काम लिया। और जिस वक्त किला फ़तह हो गया तो उसे फेंक दिया।

इल्म व फ़ज़्ल

हज़रत अली का दरजा इल्म व फ़ज़्ल में भी बेहद बुलन्द है अभी इससे पहले वह हदीस गुज़री है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मैं इल्म का शहर हूँ अ़ली उसके दरवाज़े हैं।

आप अपने ज़माने के सबसे बड़े सहर बयान, मोक़र्रिर और बेनज़ीर ख़तीब हुए हैं। शरई मसाएल के हल में आप अपना जवाब नहीं रखते थे। सईद बिन मुसय्यिब कहते हैं हज़रत उमर के पास जब पेचीदा मसायल आ जाते थे और हज़रत अ़ली इत्तेफ़ाक से उस वक्त मौजूद न होते थे तो हज़रत उमर फ़ारूक खुदा से पनाह माँगा करते थे। मोबादा कहीं मसला गलत तय न हो जाये।

तिर्मिज़ी ने यह रवायत की है कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबियों में मवाख़ात यानी भाई चारा कराया तो हज़रत अली करमल्लाहो वजहहू रसूलल्लाह के पास रोते हुए आये और अर्ज किया या रसूलल्लाह आपने तमाम सहाबियों में तो भाई चारा करा दिया और मैं यूँ ही रह गया। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तुम दुनिया व आख़िरत मे मेरे भाई हो। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हज़रत अली से बेहद मोहब्बत थी चुनान्चे इरशादे रसूल है जिसका मैं दोस्त हूँ उसके अ़ली भी दोस्त हैं।

हजरत अ़ली इन्तेहाई सादगी पसन्द थे आप ख़लीफ़ा होने के बाद भी ग़रीबाना ज़िन्दगी गुजारने में रूहानी लज़्ज़त महसूस फरमाते थे। आप इन्तेहा दरजा के सदाक़त शआ़र थे। सियासी जोड़ तोड़ से आपको सख़्त नफ़रत थी और सियासी जोड़ तोड़

से गुरेज़ करने ही की वजह से आपको अपने दौरे खिलाफ़त में बडी बड़ी दुश्वारियों का सामना करना पडा।

ख़िलाफ़ते अ़ली

सैयदना उस्मान ग़नी की शहादत के बाद ही बलवाई बुरी तरह से मदीना मुनव्वरा पर छा गये थे। ऐसा लगता था कि मदीना पर उन्हीं की हुकूमत है। बलवाइयों का लीडर ग़ाफ़की बिन हरब ही का हुक्म मदीना पर चलता था और वही इमामत भी करता था। शहर के मोक्तदिर हज़रात अपनी जान व आबरू बचाने के लिए घरों में मोअतकिफ़ थे।

अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी जो इस फित्ना का अज़ीम लीडर भी था मदीना आ पहुँचा था और उसने मज़ीद हंगामें बरपा कराने के लिए बलवाइयों को उभारना शुरू कर दिया था।

मदीना के लोग बलवाइयों की शरारत से तंग आ चुके थे। मोअज़्ज़ीन मदीना बिल आखिर हज़रत अ़ली, हजरत तलहा और हज़रत ज़ुबैर के पास अलग अलग हाजिर हुए और इन बुज़ुर्गों से दरख्वास्त की कि आप ख़िलाफ़त कुबूल फरमाये लेकिन इन सबने खिलाफत कुबूल करने से इन्कार कर दिया। इसी दौरान अब्दुल्ला बिन सबा यहूदी के उकसाने पर बलवाइयो ने यह शरारत आमेज एलान करा दिया! हम बाशिन्दगाने मदीना को मोतनब्बेह करते हैं कि अगर उन्होंने दो दिन के अन्दर नया खलीफा मुन्तख़ब न कर लिया तो हम दो दिन के बाद अ़ली, तलहा, ज़ुबैर तीनों को कत्ल कर देंगे और जिसको चाहेंगे खलीफ़ा बना लेंगे। अब्दुल्ला इब्न सबा ने यह एलान यह सोच कर कराया था कि मुसलमानों के बाहमी इख़्तेलाफ़ की वजह से दो दिन के अन्दर खलीफ़ा का इन्तेखाब नामुमकिन है। जब दो दिन गुज़र जायेंगे तो पहले तो बलवाइयों को उकसा कर उन तीनों मुक्तादिर हज़रात का खात्मा करा देगा। उसके बाद अपने मतलब का ख़लीफ़ा चुन लिया जायेगा जिसे कठपुतली बना कर जिस तरह चाहेंगे नचायेंगे।

इस ख़तरनाक एलान के बाद मुसलमानो में सरासेमगी पैदा हो गयी थी। वह घरों से निकल कर हज़रत अ़ली, तलहा, जुबैर

Scanned by CamScanner

के पास जा पहुँचे और खेलाफत कुबूल करने पर बडा जोर दिया। हज़रत तलहा व जुबैर ने यह सोचकर कि कहीं बलवाइयों के हाथों उनका भी वही अन्जाम न हो जो हज़रत उस्मान का हुआ है ख़िलाफ़त के काटो भरे ताज को कुबूल करने से इन्कार कर दिया। हजरत अ़ली भी शुरू मे इन्कार करते रहे लेकिन जब सहाबा केराम और अहले मदीना ने उन्हे मजबूर कर दिया तो वह इस ज़िम्मेदारी को कुबूल करने के लिए तैयार हो गये।

हजरत अली जब मुसलमानों से बैअ़त करने के लिए 25 जुलहिज्जा 35 हिजरी को मस्जिदे नबवी में तशरीफ ले आये तो मस्जिदे नबवी मुसलमानों से खचा खच भरी हुई थी मगर हजरत तलहा व जुबैर तशरीफ़ न रखते थे। उन्हे बुलवाया गया और मौलाये कायनात ने उन दोनो हजरात से फरमाया कि आप मे से जो भी खिलाफत का ख्वाहिशमन्द हो मैं उनके हाथ पर बैअत करने के लिए तैयार हूँ लेकिन दोनों हजरात इन्कार करते रहे तो फिर लोगों ने उन दोनों से मोतालबा किया कि आप हज़रत अली के हाथ पर बैअत कीजिए। उन्होंने कहा कि हम बैअत करने के लिए तैयार हैं लेकिन अ़ली यह वादा करे कि किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल पर चलेंगे और क़ातिलाने उस्मान से ज़रूर इन्तेक़ाम लेंगे। हजरत अली ने इन बातों का इकरार किया। अब उनके लिए कोई राह मज़र न थी लेहाज़ा पहले हजरत त़लहा ने और उसके बाद हजरत जुबैर ने हजरत अ़ली के हाथ पर बैअत कर ली। फिर क्या था हज़ारों मुसलमान बैअ़त के लिए टूट पडे जिनमें बलवाई भी शामिल थे।

खिलाफ़त के तीसरे दिन हजरत अली ने एलान कराया कि मिस्र, कूफा; बसरा और दूसरे सूबो से आये हुए आराब फौरन ही मदीना से वापस चले जायें। लेकिन अब्दुल्लाह इब्न सबा के कहने पर तमाम बलवाइयों ने इस हुक्म के मानने से इन्कार कर दिया और अब तक जो बलवाई हजरत अली के आशिक बने हुऐ थे अब उनके दुश्मन हो गये और एक नया फित्ना उन्होंने डाल दिया।

चूँकि हज़रत अली की हुकूमत अभी मुस्तहकम न हो सकी

थी और न ही बाहर से फोजें आयी थीं इसलिए हज़रत अली को खामोश होना पडा।

हजरत तलहा व हज़रत जुबैर ने यह चाहा था कि हमें कूफ़ा व बसरा का आ़मिल बना दिया जाय जिसको मसलेहतन हज़रत अली ने नही माना था। इस लिए इन दोनों हजरात को हजरत अली की जानिब से रन्जिश बढ़ गयी थी और दोनों कुबैदा खातिर हो गये थे।

अमीर मआ़विया और शाम

मुल्क शाम में हजरत अमीर मआविया रज़िअल्लाहो अन्हो ने किसी तरह हजरत उस्मान शहीद का खून आलूद पैरहन और आपकी अहलिया की कटी हुयी उंगली मदीना से हासिल कर ली थी और उनको दमिश्क़ की जामा मस्जिद में मिम्बर के ऊपर अवेजाँ करा दिया था, लोग जमाअत दर जमाअत आते थे और इन चीजो को देखकर जार व कतार रोते थे। हजरत अ़ली का क़सिद जब अमीर मआ़विया के नाम ख़त लेकर पहुँचा तो उन्होने तीन माह तक क़ासिद को दमिश्क मे महज़ इस लिए रोक रखा ताकि वह अपनी ऑख से अवाम के इस जोश व खरोश को देख ले जो हज़रत अ़ली के खिलाफ लोगों में पैदा था।

अमीर मआ़विया को हजरत अली ने शाम से माज़ूल करने का परवाना सुहेल इब्न हनीफ के हमराह भेजा था, लिखा था कि मैं तुमको माज़ूल करता हूँ और सुहैल इब्न हनीफ को शाम का गवर्नर बनाता हूँ। लेकिन अ़मीर मआ़विया ने उन्हें शाम मे घुसने नहीं दिया। और वह शाम की सरहद तबूक ही से वापस चले आये।

फिर दुबारा हजरत अली ने जब अपना क़ासिद भेजते हुए एक तरफ तो सैयदना अमीर मआविया से हुंक्म अदूली का जवाब तलब किया था और दूसरी जानिब उनसे बैअ़त का मुतालबा किया गया था।

अमीर मआविया ने इस ख़त की कोई परवाह नहीं की और तीन महीना बाद हज़रत अली के कासिद के हमराह अपने क़ासिद

Scanned by CamScanner

को हज़रत अली के खत का जवाब देकर रवाना कर दिया। इस क़ासिद ने अमीर मआविया का सर बन्द लिफ़ाफ़ा हजरत को पहुँचा दिया और हज़रत अली ने जब लिफाफ़ा खोला तो उसमें कुछ भी न था यानी बिल्कुल खाली था। बस यह ही अमीर मआविया का जवाब था। हज़रत अली सब कुछ समझ गये और उन्हें यक़ीन हो गया कि अब शाम का इलाक़ा जंग के बग़ैर ज़ेर नहीं हो सकता। लेहाजा अमीर मआविया के मुक़ाबले के लिए हजरत अली ने जंगी तैयारियाँ शुरू कर दी।

तारीख के मुताअले से पता चलता है कि हज़रत मआविया को बलवाइयों ने जाकर यह इत्तेला दी थी कि अ़ली ने अपनी खिलाफत के लिए उस्मान गनी को शहीद करवाया है और अमीर मआविया को इस बात का यकीन इस लिए और भी हो गया क्योंकि कातिलाने उस्मान हजरत अली ही के साथ थे। अलगरज़ अमीर मआविया से यह इज्तेहादी खता हुई थी वरना हक हज़रत अ़ली ही के साथ था।

अम्माल की तब्दीली

चूँकि हजरत अ़ली ने खलीफा मुन्तखब होते ही हजरत उस्मान के ज़माना के तमाम अ़माल और वालियो की माजूली के एहकामात जारी कर दिये थे। हालाँकि लोग इसके मुखालिफ भी थे इसलिए आगे चलकर नेहायत ही ख़तरनाक नताएज बरामद हुए। अमीर मआविया का वाक़ेआ माक़ब्ल में आप पढ चुके हैं।

इसी तरह जब अम्मारह बिन शहाब कूफ़ा की गवर्नरी का चार्ज अबू मूसा अशअरी से लेने के लिए रवाना हुए थे तो उनको भी नाकाम व नामुराद रास्ता से ही आना पड़ा। उस्मान बिन हनीफ़ जब बसरा पहुँचे तो बाज लोगों ने उन्हें अपना हाकिम तस्लीम कर लिया और बाज मोखालेफत पर आमादा हो गये। यमन का साबिक़ आमिल यअ़ला पहले ही खज़ाना और रूपया लेकर फ़रार होकर मक्का चला गया था इसलिए अब्दुल्ला इब्न अब्बास वहाँ पहुँचकर आसानी के साथ हुकूमत संभाल ली। कैस इब्न सअ़द जब मिस्र पहुँचे तो बाज ने उनकी एताअत कुबूल कर

ली और बाज ने सुकूत अख्तियार कर लिया।

ग़रज़ हजरत अ़ली को जदीद अमाल के तकर्रुरी में न सिर्फ नाकामी हुई इस कब्ल अज वक्त तब्दीली से अच्छा ख़ासा एक नया हगामा खडा हो गया।

जंग-ए-जमल

यह जग 36 हिजरी जमादिल आखिर में हुयी। हजरत तलहा व जुबैर हजरत अ़ली से बैअ़त करने के बाद मदीना से चल दिये। उम्मुल मोमिनीन हजरत आयशा सिद्दीक़ा इस साल हज को गयी हुई थीं और उस वक्त तक मक्का ही में थीं। हजरत तलहा व जुबैर ने हजरत उस्मान की शहादत का पूरा वाक़या उनसे जाकर बयान किया और यह भी कहा कि बलवाइयो ने हज़रत अ़ली के हाथ पर बैअ़त कर ली है और मदीना में सख़्त फित्ना बरपा है। आप उम्मुल मोमिनीन हैं आपकी पनाह में हमको अमन मिलेगा। आप कोशिश कीजिए कि यह फसाद किसी तरह दफ़ा हो। हजरत अली अभी इसमें मस्लेहत समझते हैं कि अभी क़ातिलाने उस्मान से केसास लेने में सुकूत किया जाय।

हालाँकि इस सुकूत से बलवाइयों की कूवत बढती जा रही है। हजरत आयशा ने इन झगड़ों में पडने से अव्वलन इन्कार किया लेकिन हजरत तलहा व जुबैर ने उस आयते करीमा की तिलावत फरमाई जिसमें मुसलमानों मे इस्लाह की कोशिश का हुक्म दिया है। बिल आखिर हजरत आयशा को उनकी राय से इत्तेफ़ाक करना पडा और यह तय हुआ कि जब तक इन बलवाइयों का जोर कम न हो जाय मदीना हरगिज़ न जाना चाहिए बल्कि अरब से बाहर कोई गोशए आफियत तजवीज करनी चाहिए और किसी तरह हजरत अली को इन मुफ्सिदीन के गिरोह से अलग करके अपने साथ ले लेना चाहिए। फिर तमाम काम बन जायेगा। हजरत उस्मान का केसास भी लिया जा सकेगा और इन बदमाशों की गोशुमाली भी हो जायेगी चुनान्चा इस तजवीज़ के मुताबिक यह हज़रात बसरा की तरफ रवाना हुए। बलवाइयों ने यह सारा वाक़या हज़रत अ़ली से बड़ी रग आमेजियों के साथ

Scanned by CamScanner

बयान किया और कहा कि इन हजरात का मक़सद यह है कि आपको खिलाफत से माजूल कर दिया जाय और जो इन हजरात का अस्ल मकसद था उसका इल्म तक हज़रत अ़ली को न होने दिया।

हज़रत अली भी बसरा की तरफ रवाना हुए। हज़रात हसनैन करीमैन व अब्दुल्लाह इब्न जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन अब्बास इस फौज कशी के मुख़ालिफ थे मगर उनकी कुछ न चली। हज़रत अ़ली की फौज जब बसरे क़रीब पहुँच गयी तो आप ने हज़रत कअ़काअ़ सहाबी को कासिद बना कर हज़रत तलहा व जुबैर के पास भेजा। हजरत कअकाअ पहले उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा से मिले। उन्होने साफ फरमा दिया कि मेरा मकसद सिर्फ इस्लाह है कि किसी तरह भी यह फित्ना व फसाद दूर हो और अमन क़ायम हो जाय। फिर हजरत कअकाअ़ ने हज़रत तलहा व जुबैर से मुलाकात की और पूछा कि आप हजरात ने इस्लाह की क्या सूरत तजवीज फरमायी। इन दोनो ने मुत्तफ़िक होकर कहा कि किसी तरह भी कातिलाने हजरत उस्मान शहीद से केसास लिया जाय। बगैर इसके अमन नहीं हो सकता। इस पर हजरत कअकाअ ने फरमाया यह उसी वक्त हो सकता है जब सब मुसलमान मुत्तफिक़ हो जायँ। लेहाज़ा सबसे पहले आप हज़रात हजरत अ़ली से मिल जायें और बाहम मिलकर इसकी तदबीर की जिए। यह राय हजरत ज़ुबैर व तलहा ने भी पसन्द किया और हजरत अली के पास सुलह की खुशख़बरी लेकर हजरत कअकाअ़ गये। वह भी बहुत ही खुश हुए। तीन रोज़ तक बाहम नामा व पयाम जारी रहा। तीसरे रोज़ शाम को यह बात तय हुयी कि सुबह को हजरत अ़ली की मुलाक़ात हज़रत तलहा व जुबैर के साथ इस तरह से हो कि उन बलवाइयों में से कोई भी शख्स इस मजलिस में शरीक न होने पाये। बलवाइयो को यह सख्त नागवार हुआ क्योकि वह समझते थे कि हजरत अली इस तन्हाई की मुलाकात के बाद हमारे क़ाबू से निकल जायेगे। लेहाजा इन लोगों ने यह तजवीज सोचना शुरू कर दी कि कोई ऐसी बात करो जिससे यह सुलह टूट जाये और

मुलाक़ात न होने पाये।

अब्दुल्लाह इब्न सबा मशहूर मुनाफिक मूजिद मजहबे शिया भी इन्हीं बलवाइयो में न सिर्फ शामिल था बल्कि सबका सरदार था उसने यह राय दी। तुम लोग आज ही रात मे लडाई शुरू कर दो और इसके बाद हजरत अली को इत्तेला दे दो कि इस फरीक ने यह अहद करके जग शुरू कर दी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ और उन मुफ्सिदीन बलवाइयों ने खुद बखुद पिछली रात में जंग शुरू कर दी। इसका फिर दूसरी तरफ से भी जवाब दिया गया। हजरत अ़ली के लश्कर मे यह शोहरत थी कि हजरत तलहा व जुबैर ने बद अहदी की और इस जानिब यह मशहूर हुआ कि हजरत अली की तरफ से बद अहदी हुई। गरज यह कि बड़ी खूँरेज़ जंग हुई और दोनो तरफ से तेरह हजार मुसलमान कत्ल हुए। हजरत तलहा और जुबैर भी इसी जंग मे शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन। हजरत तलहा तो मैदाने जंग में ही शहीद हो गये मगर हजरत जुबैर किनाराकश हो कर वापस जा रहे थे रास्ते मे उनको जरमूज ने शहीद कर दिया।

इब्न जरमूज हजरत जुबैर को शाहीद करके बउम्मीदे ईनाम हज़रत अली के पास आया और कहने लगा कि अमीरूल मोमिनीन मुबारक हो कि मैंने आपके दुश्मन को कत्ल कर दिया। हज़रत अ़ली ने पूछा किसको ? उसने कहा जुबैर को। आपने फरमाया कि तुझको खुशखबरी सुनाता हूँ कि तू दोजख़ मे जायेगा। इब्न जरमूज ने कहा कि आपने खूब ईनाम दिया। आपने फरमाया मैं क्या करूँ, रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया था कि يا على بشر قاتل ابن صفيته بالنار. यह सुनकर इब्न जरमूज ने खुदकुशी कर ली। यह देखकर कि हज़रत अ़ली ने बुलन्द आवाज से तकबीर पढ़ी कि देखो रसूले खुदा ने जो फरमाया था कैसा सच निकला।

फिर हजरत अली का गुज़र हज़रत तलहा के पास से हुआ तो उनकी लाश मुबारक देखकर बैठ गये और फरमाया काश मैं आज से बीस बरस पहले मर गया होता। और हज़रत तलहा के हाथ को लेकर बार बार चूमते थे और फरमाते थे कि यह वह हाथ

Scanned by CamScanner

हैं जिसने रसूलल्लाह के ऊपर से मसाएब को दफ़ा किया है।

हजरत तलहा का जब आख़िरी वक्त था तो एक शख्स उनके पास से गुजर रहा था। उससे उन्होंने दरियाफ्त किया कि तू किस लश्कर का आदमी है उसने कहा अमीरूल मोमिनीन अली के लश्कर का। उससे हजरत तलहा ने कहा अच्छा हाथ लाओ मैं तुम्हारे हाथ पर हज़रत अली के लिए बैअ़त करूँ। चुनान्चा बैअत के बाद वह जॉ बहक़ हो गये। उस शख्स ने यह वाक़या हजरत अली से आकर बयान किया तो आपने तकबीर पढ़ी और फरमाया कि खुदा ने तलहा को जन्नत मे मेरी बैअ़त के बगैर ले जाना नहीं चाहा। *(अजालतुल खोलफा)*

इस जंग में चूँकि हजरत आयशा के जमल को सबसे ज़्यादा अहमियत हासिल है इस लिए तारीख मे यह लडाई जंगे जमल के नाम से मशहूर है। जंग के खात्मा के बाद हजरत आयशा के भाई मोहम्मद इब्न अबी बकर जो हजरत के लश्कर मे थे हजरत अ़ली के हुक्म से कुजावह की रस्सियॉ काट कर और कुजावह उठवा कर अब्दुल्लाह बिन खजाई के महल मे ले गये। हजरत आयशा इस महल में उतर गयी। थोडी देर के बाद हज़रत अली भी हाजिर हो गये और परदा के पास आकर पूछा अम्मा जान ! मिजाज कैसा है ? हज़रत आयशा ने फरमाया "अच्छी हूँ" हजरत अली ने इस तकलीफदेह वाकया पर इज़्हारे अफ़सोस करते हुए कहा। मैं दुआ करता हूँ कि खुदा तआला हमारी हर गल्ती को माफ़ करे। हज़रत आयशा ने फरमाया। बेशक खुदा हम सब की गल्तियों को माफ करे। उसके बाद हजरत अली हजरत आयशा से माजरतख्वाह हुए और हज़रत आयशा ने भी हजरत अ़ली से माजरत का इज्हार किया।

हजरत आयशा सिद्दीका के चन्द रोज आराम करने के बाद हज़रत अली ने मोहम्मद इब्न अबी बकर को हुक्म दिया कि वह इज्जत व एहतराम के साथ आप को मक्का पहुँचा दें। जब हजरत आयशा मक्का जाने लगीं तो हजरत अली ने बसरा की चालीस औरतों को आपके हमरेकाब किया और खुद कई मील तक सवारी के हमरेकाब रहे। हजरत आयशा मक्का होते हुए

मदीना तश्रीफ ले गयीं। इस जंग में अगरचे दोनों ही फरीक बेगुनाह थे फिर भी जो कुछ भी हुआ वह फित्ना परदाज़ों की ग़लतफहमी पैदा कर देने की वजह से हुआ लेकिन हज़रत आयशा को सारी ज़िन्दगी इस वाकया का अफसोस रहा। जब भी इस वाकया का तज़किरा आता था तो आप ज़ार व क़तार रोने लगती थी।

जंग जमल के बाद 36 हिजरी में हज़रत अली ने अपना दारूल खेलाफत मदीना के बजाय कूफ़ा बना लिया। दारूल खेलाफा की यह तबदीली हजरत उस्मान की शहादत के सात माह बाद वुकूअ में आयी।

हज़रत अ़ली और अमीर मआ़विया

अदी इब्न हातिम ने हजरत अ़ली के औसाफ यूँ बयान किये हैं। आप जो बात कहते थे मीजाने इद्ल पर पूरी उतरती थी। जो फैसला करते थे मोहकम दलायल पर मुब्नी होता था। हिकमत आपके घर की लौंडी थी। और इल्म के चश्मे आपके दिल में हमेशा फूटते रहते थे। आप दुनिया और उसकी शान व शौकत से दूर भागते थे और रात और उसकी दहशतनाकी से उन्स करते थे। आप बेहद ऑसू बहाने वाले और खूब गौर व फिक्र करने वाले थे। तन्हाई में अपने नफ्स का मोहासबा किया करते थे और अपने पीछे ज़िन्दगी पर अफ़सोस (अगरचे वह तन्हाई पाकीज़ा थी।)

आपका लिबास नेहायत मामूली और खाना बहुत सादा होता था। गुजारा के लिए इतना ही लेते थे जो आपको बमुश्किल काफी होता था। वह हम लोगो से किसी तरह इम्तियाज़ न रखते थे। अहले इल्म और अहले दीन की बहुत ताज़ीम करते थे। मिस्कीनो और मोहताजो से बहुत मोहब्बत से पेश आते थे। किसी ताकतवर आदमी की शरारतों और जुल्म से डरते न थे। और आप के दरबार से कोई कमजोर आदमी मायूस होकर न लौटता था। मैं एक दिन काफी रात गये आपको मस्जिद की मेहराब में इस हालत मे खड़ा देखा कि आपके आँसू टप टप आपकी दाढ़ी पर गिर रहे थे और उसे तर कर रहे थे। आप ज़ार व क़तार रो रहे थे। और

Scanned by CamScanner

बार बार कह रहे थे ऐ दुनिया मैं ने तुझे तीन तलाक़ें दीं, मैं तेरी तरफ किसी सूरत में भी मायल नही हो सकता।

जहाँ आप अपने नफ्स का शिद्दत से मोहासबा करते थे वहाँ अपने अम्माल की भी सख्ती से बाज़पुर्स करने में ताम्मुल न करते थे।

इब्न अब्बास और मुग़ीरा बिन शोअ़बा ने आपको मशविरा दिया कि मआविया इब्न आमिर और हजरत उस्मान के मोकर्रर किये हुए अम्माल को उस वक्त तक माजूल न करें जब तक वह आपकी बैअत मे शामिल न हो जाये और लोगो का मौजूदा जोश व खरोश ठडा न पड़ जाये लेकिन आपने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया और फरमाया।

"मैं दीन में मोदानेहत से काम नहीं लेना चाहता।"

इसपर उन्होने कहा अगर आपको इसपर असरार है तो कम अज़ कम मआ़विया को उनकी जगह पर रहने दें। बाकी को बेशक माजूल कर दें क्योकि मआविया बड़ी जुर्रात वाले शख्स हैं। शाम पर उनका पूरा तसल्लुत है और शामी उनकी बात बहुत मानते हैं। मजीद बरऑं उन्हे हजरत उमर ने शाम की वेलायत सुपुर्द की थी लेकिन आपने इन सब बातों को नजर अन्दाज़ कर दिया और अपने इरादे पर मजबूती से क़ायम रहे और फरमाया।

"खुदा की कसम मैं मआविया को दो दिन के लिए भी आमिल नही रहने दूँगा।"

आपकी रहमदिली औरं नरमी का यह हाल था कि एक मर्तबा अहले शाम ने आपको दरिया पर उतरने और उसका पानी इस्तेमाल करने से रोक दिया था लेकिन इसके बावजूद जब आप को इसी किस्म का मौका मिला तो आपने उन्हे दरिया से पानी लेने से मुतलकन मना नहीं फरमाया। इसी तरह आपने अपने साथियो को ताकीद कर दी थी कि कोई शख्स भी मआविया और उनके साथियों को गालियॉ न दे।

अम्माल पर भी कडी नज़र रखते थे। यज़ीद इब्न हजमा को रै का हेकम बनाया था। उसने वहाँ का खेराज मामूल से तीन हजार दीनार कम भेजा। हज़रत अ़ली ने उसे खत लिख कर

अपने पास बुलवाया और फरमाया। ग़बन शुदा माल वापस करो। उसने कहा मैंने एक दिरहम भी नहीं लिया। लेकिन हज़रत अली ने उसकी बात का यक़ीन न किया। उसे दुर्रे लगवाये और अपने गुलाम सअद को हुक्म दिया कि इसको कैद कर दो। यज़ीद कैद खाने से किसी तरह छूट कर शाम में अमीर मआविया के पास पहुँचा। हजरत अमीर मआविया ने उसकी बड़ी आवभगत की। वह उस वक्त तक शाम में मुक़ीम रहा जब तक सारा अरब अमीर मआविया के जेरे नग़ीं न हो गया। जब हजरत अमीर मआविया ईराक आये तो उसको भी अपने साथ लेते आये और उसको ईराक का वाली बना दिया।

यज़ीद इब्न सुफियान के वेसाल के बाद शाम की वेलायत उनके भाई हज़रत मआ़विया के हाथ आयी। अमीर मआविया ने वहॉं अपना गलबा व इक्तेदार बढ़ाना और अपनी हुकूमत को मज़बूत करना शुरू किया. |आहिस्ता आहिस्ता शाम का तअल्लुक दारूल खेलाफा से बराए नाम रह गया और अगरचे वह इस्लामी ममलुकत का एक सूबा शुमार होता था लेकिन दूसरे सूबों से उसका इर्तेबात बहुत ही मामूली था। इस तरह अमीर मआविया बिला शिरकत गैरे शाम के मालिक और बअख्तियार हाकिम थे।

अमीर मआ़विया इन्तेहाई जेरक और बुलन्द इन्सान समझे जाते थे। उन्हे यकीन था कि एक दिन ऐसा आयेगा जब उन्हें शाम की वेलायत से माजूल कर दिया जायेगा। इसलिए वह बड़ी एहतियात से तमाम हालात का जायज़ा लेते रहते थे और अपनी अक्ल व फिक्र को काम में लाकर ऐसे ज़राए तलाश करने में लगे रहते थे जिनसे वह अपने दुश्मनों को ज़ेर और उन्हें अपने इरादों में नाकाम कर सके।

हजरत उस्मान की अहदे खेलाफ़त में तो उन्हें कोई खतरा पैदा नही हुआ और वह बडी शान से शाम पर हुकूमत करते रहे लेकिन जब उनकी शहादत के बाद हजरत अ़ली खलीफा हुए तो उन्हें पहली बार ख़तरा का एहसास हुआ कि उन्हें शाम पर काबिज नहीं रहने देंगे बल्कि उन्हें माजूल करके ऐसे को वाली बनायेंगे जिसपर उन्हें मोकम्मल ऐतमाद होगा।

Scanned by CamScanner

चूँकि बलवाई अभी हज़रत अली ही के साथ थे और फ़ित्ना परदाज़ों ने उन्हें जाकर यह इत्तेला दी थी कि हजरत अली का (मआज़ अल्लाह) हाथ हजरत उस्मान की शहादत मे है इस लिए उनसे यह इज्तेहादी गलती हुई और उन्होंने बाज़ सर आवरदा अशखास को हज़रत अ़ली के खिलाफ भडकाना शुरू कर दिया और दूसरी जानिब हजरत उस्मान के इन्तेकाम का मोतालबा शुरू कर दिया। उन्होने हज़रत उमर बिन आस को मिला कर यह प्रोपगण्डा शुरू कर दिया कि हजरत अ़ली ने इन्तेहाई नाजुक मौके पर हजरत उस्मान का साथ छोड दिया जिसका नतीजा बागियो के हाथो उनकी शहादत की सूरत में जाहिर हुआ। यही वजह है कि अ़ली कातिलीने उस्मान से केसास लेते हुए घबराते है (जबकि हज़रत अली खुद मौके की तलाश में थे और अभी बलवाइयों का पूरा तसल्लुत था। केसास लेना नामुमकिन था वरना कोई वजह न थी कि आप केसास लेने में ताखीर फरमाते)। हजरत अमीर मआविया ने हज़रत उस्मान की खून आलूदा कमीज और आपकी अहलिया हजरत नायला की कटी हुई अगुली दमिश्क की जामा मस्जिद मे लटका दी जिसका जबरदस्त असर हुआ। हजारों आदमी मिम्बर के इर्द गिर्द जमा हो कर इन चीज़ो को देखते और दहाढें मार मार कर रोते और क़सम खाते कि जब तक वह हजरत उस्मान का इन्तेकाम न ले लेंगे चैन से न बैठेंगे। इस तरह अमीर मआविया ने अहले शाम और आम्मतुल अरब की ताईद हासिल कर ली।

हजरत अमीर मआविया की सियासत और हिकमते अमली को समझने के लिए उनका यह मकूला काफी है। मैं उस वक्त तक तलवार न उठाऊँगा जब तक मेरा कोडा काम देता रहेगा। उस वक्त तक अपना कोड़ा न उठाऊँगा जब तक मेरी जबान काम देती रहेगी। अगर मेरे हाथ में एक धागा हो जिसका दूसरा सिरा दूसरे लोगों के हाथ में हो तो यह धागा कभी नही टूट सकेगा क्योकि जब दूसरे लोग उसे खींचेगे तो मैं ढीला छोड़ दूगा और जब दूसरे लोग ढीला छोड देंगे तो मैं खींच लूगा। आपके इस कौल से बडी आसानी से यह नतीजा निकाला जा सकता है

कि आप बडे हलीम जेरक सियासत दॉ और मुश्किलात के वक्त अपने आसाब पर काबू पाने वाले शख्स थे।

आप बड़े मर्दुम शनास थे। हर शख्स की फितरी सलाहियतो को पहचान लेने का आप मे बडा मलका था। अपनी सलाहियत से आपने बडा फायदा उठाया। आप अपने मुखालिफ़ीन को ज़ेर करने मे उन्हे इस किस्म की मुश्किलात में मुब्तिला कर देते थे जिनसे निकलना उनके लिए आसान नही होता था। इस तरह वह उनपर फतह पा लेते। आपके हिलम व बुर्दबारी की मिसाले जबान जद खलाएक हैं। हकीक़त यह है कि बुर्दबारी में बहुत कम लोग आपका मुकाबला कर सकते थे। हज़रत अमीर मआविया मुख्तलिफ इलाकों के हाकिम चुनने में भी बहुत अकलमंदी और जकावत से काम लेते थे जैसे हजरत उमर बिन आस, जयाद इब्न अबिया और मुगीरा बिन शोअ़बा। इन वालियों ने हज़रत मआविया की हुकूमत के इस्तेहकाम मे बहुत मदद की। अमीर मआविया के खसायल अख्तियार कर के उन्होंने भी अपने मुखालिफों को ब आसानी जेर कर लिया।

हजरत अली खुद भी अमीर मआविया की जकावत, बेमिस्ल अकलमंदी और लोगो को अपनी तरफ खीचने के खुदा दाद मलका के काएल थे चुनान्चे जयाद इब्न अबिया जबकि आपका फरमाबरदार था उसको एक मकतूब में लिखा था कि

> "मआविया की शख्सियत इतनी जबरदस्त है कि उनके आगे और उनके पीछे उनके दायें और उनके बाये हर चहार तरफ से लोग उनकी तरफ खिचे चले आते हैं।"

हज़रत अ़ली का ख़त अमीर मआ़विया के नाम

सुहैल इब्न हनीफ शाम से वापस आ चुके थे हजरत अली रज़िअल्लाहो अन्हो ने हुज्जाज बिन ग़ज़िया के हाथ एक खत हजरत अमीर मआविया को भेजा जिसमे उन्हें बैअत की दावत दी। हज़रत अमीर मआविया ने इस ख़त का कोई जवाब न दिया।

हज़रत उस्मान की शहादत के तीन माह बाद उन्होने

Scanned by CamScanner

कबीला बनी अबस के एक शख्स को हजरत अली के पास भेजा। उसने आकर कहा –

"मैंने शाम में पचास हज़ार शयूख़ को इस हालत में छोड़ा है कि उनकी दाढ़ियाँ आँसुओ से तर हैं। उन्होने हज़रत उस्मान की कमीज़ जिस पर ख़ून की छीटें पडी हुई है नेज़ो पर उठा रखी हैं और कसम खा रखी है कि जब तक वह कतिलीने उस्मान से बदला न ले लेगे चैन से न बैठेगे।"

इस पर हज़रत अली को पता चला कि अमीर मआविया उनकी खिलाफ़त भी तस्लीम न करेंगे और बग़ैर उनसे लडे उनपर काबू भी नहीं पाया जा सकता।

मारका सफ़्फ़ैन

अमीरूल मोमिनीन हजरत अली रजिअल्लाहो तआला अन्हो अपनी फौज लेकर कूफा से निकले और मक़ामे नख़ीला में कयाम किया। यहीं आपने लश्कर को मुरत्तब किया और जज़ीरा के रास्ते शाम में दाखिल हुए। जब अमीर मआविया को इसकी ख़बर पहुँची तो उन्होने उमर बिन आस से मशविरा किया। उन्होंने राय दी कि दमिश्क से बाहर निकल कर हजरत अली से मुकाबला किया जाय चुनान्चे वह भी फौज लेकर बाहर निकल पड़े।

हजरत अली ने रेक़ा पहुँच कर दरियाए फोरात उबूर किया और आगे बढ़ कर सफ्फ़ीन के मैदान में पडाव डाल दिया। अमीर मआविया का लश्कर वहाँ पहले ही से मौजूद था।

सफ्फैन में मुसलमानों की इस कदर जबर दस्त अफवाज जमा हुयी थीं जिनकी नज़ीर इससे पहले नहीं मिलती। तारीख़ इसलाम पर नज़र डालने से पता चलता है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाने में ग़जवए हुनैन के मौके पर जबकि मुसलमान अपनी कसरते तादाद पर नाज़ाँ थे। इस्लामी फौज की तादाद तकरीबन दस हजार थी। इसके बाद जब

मुसलमान ईरान फ़तह करने और रोमियो से मुकाबला करने निकले तो उनकी तादाद रफ़्ता रफ़्ता बढ़ती रही। जंगे यरमूक़ के मौके पर मुसलमान (46000) छियालीस हज़ार की तादाद में थे। और कादसिया और नेहाविन्द में इनकी तादाद तीस हज़ार थी लेकिन जंग सफ़्फ़ैन में हज़रत अ़ली का लश्कर सत्तर हज़ार और अमीर मआविया का लश्कर नब्बे हजार से कम न था।

हज़रत अ़ली ने अपनी तरफ से तीन अशख़ास को नुमाइन्दा बना कर भेजा ताकि सुलह की बात चीत हो वह अशखास यह थे।

बशीर इब्न उमर अन्सारी, सईद इब्न कैस हमदानी, शबस बिन रबइल तीमी।

इन्हें इसलिए भेज़ा ताकि वह भी आम्मतुल मुस्लेमीन की तरह बैअ़त कर लें। एक तवील गुफ़्तगू के बाद भी सुलह की बात कामयाब न हो सकी और शबस की तेज़ गुफ़्तगू सुनकर अमीर मआविया ने कहा। ऐ सख्त मिज़ाज गँवार ! जाओ तुम्हारे और हमारे दरमियान तलवार ही फैसला करेगी।

चुनान्चे यह वफद नाकाम लौट आया और हजर अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो की ख़िदमत में सब बातें गोश गुज़ार करा दीं। हज़रत अ़ली ने कोई चारा न देख कर अपनी फौज को तैयार होने का हुक्म दिया। चुनान्चे वह साज़ सामान से लैस होकर मैदाने जंग में आगई। ईराक़ियों और शामियों के तसादुम से हर शख्स डरता था क्योंकि सबको यह खतरा था कि इस तरह बड़े पैमाने पर एतलाफे जान होगा। इस नागवार सूरते हाल से बचने के लिए हर लश्कर का एक एक दस्ता बारी बारी लड़ता था। लडाई की यह सूरत ज़िलहज्जा 36 हिजरी तक जारी रही। जब मोहर्रम का चाँद दिखाई दिया तो दोनो फौजों में लड़ाई बन्द हो गयी। अब दोनों फरीकों ने चाहा कि बाहम मुसालेहत की कोई सूरत निकल आये और दोनों तरफ से कासिदों की आमद व रफ़्त का सिलसिला शुरू हो गया।

इस दफा हज़रत अली की तरफ से सुलह की बात चीत करने के लिए यह लोग गये। अदी इब्न हातिम, यजीद इब्न कैस

Scanned by CamScanner

अलअरजई, जयाद इब्न हफ़्सा, शबस इब्न रबई। जब यह लोग अमीर मआविया के पास पहुँचे तो अदी ने बात चीत शुरू की। उन्होंने कहा –

"ऐ अमीर मआविया ! तुम्हारे पास इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक की दावत लेकर आये हैं अगर तुमने इसे कुबूल कर लिया तो मुसलमानों में सुलह हो जायेगी। उनके आपस के झगडे मिट जायेगे और उनमें खून व खराबा न होगा। देखो हज़रत अ़ली तुम्हारे चचाज़ाद भाई, मुसलमानों के सरदार, उम्मत में सबसे अफजल और साबेकूनल अव्वलून में हैं। तमाम लोगों ने उनकी बैअत कर ली है, अल्लाह तआला ने उन्हें सही रास्ता दिखलाया है लेकिन तुमने उसकी दावत कुबूल नहीं की और उन्हें ख़लीफ़ा तस्लीम नहीं किया। ऐ मआविया ! अपनी हट से बाज आ जा। कहीं तुम्हारे साथ भी वही न हो जो अहले जमल के साथ हो चुका है।"

हज़रत अमीर मआविया ने जवाब दिया –

"ऐ अदी ! अफसोस तुम मुझे धमकाने आये हो या सुलह की बात चीत करने। खुदा की क़सम मैं "इब्ने हरब" जबरदस्त जगजू हूँ। जंग से मुतलकन नही डरता।" इसी तरह एक तवील गुफ्तगू का सिलसिला फिर चला लेकिन यह सेफ़ारत भी नाकाम हो गयी।

अब तक हज़रत अ़ली की तरफ़ से सफीर आ रहे थे। अब मआविया ने अपनी तरफ से अपनी तरफ़ से हबीब बिन मुस्लेमा अलफहरी, शरजील बिन अलसमत, और मअ़न बिन यज़ीद बिन अलअखनस को हज़रत अ़ली के पास बात चीत करने के लिए भेजा। यह तीनों हजरत अ़ली के पास पहुँचे। हबीब ने गुफ़्तगू शुरू की। उन्होंने कहा –

"हजरत उस्मान बिन अफ्फान ख़लीफ़ा बरहक थे। किताबुल्लाह अज्ज़ व जल्ल पर अमल करते थे। खुदा तआला के एहकाम के पाबन्द थे। तुमने उनकी ज़िन्दगी को पसन्द न किया और उनको जुल्म के साथ शहीद कर दिया। अगर तुम यह कहते हो कि हजरत उस्मान के कत्ल से बरी हो तो उनके कातिलीन को हमारे सुपुर्द कर दो। हम उन्हें हजरत के केसास में क़त्ल कर देगे। फिर मुसलमान जमा होकर जैसे चाहेंगे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लेगे।"

हज़रत अली ने फ़रमाया ? ——

"क्या खूब। तुम और मुझे माजूल करो। खामोश रहो तुम इस मामले में बोलने के अहल नहीं हो।"

हबीब ने खड़े होकर कहा। "तुम मुझे इस हालत में देखोगे जो तुम्हें पसन्द न होगी।"

हजरत अली ने कहा ———

"तुम मेरा कर ही क्या सकते हो ? तुम जितनी कोशिश कर लो अपने मक़सद में कामयाब न होगे।"

शरजील बिन अलसमत भी खड़े हो गये और कहने लगे– मैं भी वही कहूँगा जो मेरे साथी कह चुके हैं। क्या इसके सिवा भी आपके पास कोई जवाब है।"

हज़रत अ़ली ने फ़रमाया ———

"बेशक"

इसके बाद आपने अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान की। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बेअसत और उम्मत को हेदायत का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि – "फिर अल्लाह तआला ने उनको अपनी तरफ उठा लिया। हजरत अबू बकर आपके बाद खलीफ़ा हुए और नेहायत अच्छी तरह खेलाफत का काम सर अन्जाम दिया। आपके बाद हज़रत उमर खलीफा हुए और उन्होंने भी खिलाफत का काम बड़ी खूबी से निभाया। इन दोनों ने अपने अपने अहदे खिलाफ़त को बहुत अच्छी तरह गुजारा और उम्मत मे अद्ल व इन्साफ़ कायम किया। फिर हजरत उस्मान ख़लीफा हुए और कुछ लोगों ने बगावत करके उन्हे शहीद कर

दिया। इसके बाद लोग मेरे पास आये। मैं उनके मामलात से बिल्कुल अलग था। उन्होंने मुझसे बैअत लेने को कहा लेकिन मैने इन्कार कर दिया तो उन्होंने फिर बैअत लेने को कहा और कहा कि उम्मते मोहम्मदिया आपके अलावा किसी और शख़्स की खिलाफत पर राजी नहीं होगी और अगर आपने खिलाफ़त कुबूल न की तो उम्मत में तफरका पैदा होगा। तभी मैंने उनकी बैअत कर ली। पहले तलहा व ज़ुबैर ने बैअत करने के बाद मेरी मुखालफ़त की और अब मआविया मेरी मुख़ालिफ़त में पेश पेश है हालॉकि न उन्हे इस्लाम में साबेकीयत का शरफ हासिल है। मैं तुम्हे किताबुल्लाह सुन्नते नबवी की तरफ दावत देता हूँ और बातिल को मिटाने और हक को जिन्दा करने की हिदायत करता हूँ।"

और एक तवील गुफ्तगू के बाद यह तीनो वापिस हो गये और सुलह की बात मोकम्मल न हो सकी।

खूँरेज जंग

दोनों फरीक़ अपने अपने कैम्पों में ठहरे हुए थे। हजरत अ़ली का खयाल था कि इस अर्सा में दलायल व बराहीन से मुख़ालिफ़ीन को क़ायल कर लिया जायेगा और शमशीर ज़नी की नौबत भी न आयेगी। लेकिन जब मोहर्रम गुजर गया और आपको यकीन हो गया कि अब सुलह की मजीद गुफ्त व शुनीद बेकार होगी तो आपने एक सिपेहसालार को हुक्म दिया कि वह फौज में दुबारा जंग शुरू होने की मुनादी करादे ताकि तमाम लोग तैयार हो जायें। ताहम आप इस बात के लिए तैयार न हुए कि अपने इरादा का फ़रीक़ मुख़ालिफ़ पर इज़्हार करने से पहले ही वह उन पर हमला कर दें। इसलिए आपने अपने एक आदमी को अहले शाम में इस ऐलान के लिए भेजा।

"अमीरूल मोमिनीन तुम्हे मुतलअ करते हैं कि उन्होंने तुमको हक़ की तरफ़ रुजूअ करने और सरकशी से बाज़ रहने की काफ़ी मोहलत दी। तुम्हारे सामने किताबुल्लाह पेश की और तुम्हें

इसकी तरफ बुलाया लेकिन तुम अपनी सरकशी से बाज़ न आये और हक़ व सदाकत को कुबूल न किया। अब हम तुमसे दू बदू मुकाबला करेंगे।"

जब अमीर मआविया और उमर बिन आस को हज़रत अली के इरादे का पता चला तो उन्होने भी अपने लश्कर को जंग के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। लड़ाई से पहले हजरत अ़ली ने अपने साथियों को नसीहत करते हुए फरमाया ——

"जब तक फ़रीक मोखालिफ की तरफ़ से हमला शुरू न हो तो तुम हमला न करना और वह शिकश्त खा जायें तो किसी भागते हुए को कत्ल न करना। किसी ज़ख़्मी को न मारना। किसी मुर्दा का मुसला न करना। जब तुम उन लोगों के खेमों के पास पहुँचो तो किसी औरत की बे परदगी न करना। घरों में दाखिल न होना। किसी का माल न लूटना। औरतों पर हाथ न उठाना ना ख्वाह वह तुम्हारी बे इज्जती कर रही हों और तुम्हारे उमरा व बुजुर्गों को गालियाँ दे रही हों क्योंकि वह कमज़ोर जानों में शुमार होती हैं।"

शुरू मे मामूली झड़पे होती रहीं। तरफ़ैन की जानिब से फौजो के छोटे छोटे दस्ते एक दूसरे के मुकाबला के लिए मैदाने जंग मे आ जाते और आपस में मुक़ाबला शुरू हो जाता। रात होते ही यह दस्ते अपने अपने कैम्पों में वापस चले जाते। इन मुकाबलों में मकतूलीन की तादाद बहुत कम थी। रात को जब सिपाही हथियार उतारते तो अकसर औकात एक दूसरे के खेमों में भी चले जाते और आपस में भाइयों की तरह प्यार व मोहब्बत की बातें करते। एक हफ़्ता तक जंग की यही कैफियत रही।

आख़िर हजरत अली ने पूरे लश्कर के साथ हमला करने का इरादा कर लिया। 8 सफर 37 हिजरी की रात में आपने अपनी फौज में एक पुरजोश तक़रीर की और इसलिए जंग में साबित क़दम रहने की तलक़ीन की।

अगले रोज़ दोनों फौजे आमने सामने खड़ी हो गयीं।

Scanned by CamScanner

हज़रत अ़ली और अमीर मआविया दोनों ने जदीद उसूलो के मुताबिक़ अपने लश्कर को मुरत्तिब किया था। सबसे पहले अमीरूल मोमिनीन हज़रत अ़ली ने अपने लश्कर के दाये बाज़ू को आगे बढ़ाया जिसने अमीर मआविया के बाये बाज़ू के लश्कर पर हमला कर दिया। इस हिस्सा के लश्कर के सालार अरब के मशहूर बहादुर अब्दुल्लाह बिन बदील थे। यह हमला इतना जबरदस्त था कि अमीर मआविया के लश्कर के पॉव डगमगाने लगे और उसे क़ल्ब के सिपाहियों से मदद लेनी पडी। अब अमीर मआविया के मैसरह का पल्ला भारी हो गया और उन्होने हजरत अ़ली के मैमना पर जवाबी हमला करके उसे पीछे हटा दिया। सिर्फ मैमना का सालार अपने दो सिपाहियों के साथ साबित कदम रहा और जी तोड कर लडता रहा। जब हजरत अली ने देखा कि उनका मैमना ग़ैर मोतवक्का तौर पर पीछे हट गया है तो वह कल्ब को साथ लेकर हजरत अमीर मआविया के मैसरा के ऐन मुक़ाबिल आ गये लेकिन क़ल्ब भी इस हमला को न रोक सका। जब मैसरा ने यह हालत देखी उसकी ग़ैरत जोश में आयी और उसने आगे बढकर हजरत अमीर मआविया के मैसरा के हमले को रोकना शुरू कर दिया। हजरत अली भी उनके साथ थे और बनफ़्स नफीस लडाई में हिस्सा ले रहे थे। इस वक्त हज़रत अली अश्तर नख़ई के पास से गुज़रे और इरशाद फरमाया। अहले मैमना के पास जाओ और उनसे कहो तुम मौत से बच कर कहाँ तक भागोगे ? अश्तर ने हुक्म की तामील की। वह पीछे हटने वाली फौज के पास गया और अपनी ताकते लेसानी की वजह से उनके दिलों में नया जोश पैदा कद दिया। वह लोग इसक इर्द गिर्द इंकटठा हो गये। उन्हे लेकर वह मैदान जंग में पहुँचा और बडी शिद्दत के साथ अमीर मआविया की फौज पर हमला कर दिया। मआविया के सिपाही अश्तर के सामने न ठहर सके। आहिस्ता आहिस्ता अश्तर अमीर मआविया के ख़ेमों तक पहुँच गया। मआविया के सिपाहियों ने जुर्रात से काम लिया और एक बार फिर उन्हें पीछे हटा दिया। इसी रोज अम्मार बिन यासिर शहीद हुए जो हज़रत अ़ली की तरफ़ से जंग फरमा रहे थे और

जिनके बारे मे इरशादे नबवी था। तकतलोकल फेअतल बागियह।

रात आ चुकी थी और दोनों लश्कर मैदान में एक दूसरे का मुकाबला कर रहे थे। कोई लश्कर दूसरे पर काबू न पा सका। और किसी को किसी पर फतह हासिल न हुई। रात को भी यह लड़ाई बन्द न हुई। हर फरीक़ फतह व ज़फ़र की उम्मीद रखता था। और चाहता था कि लडाई को जारी रखकर जल्द से जल्द फ़तह हासिल कर ले। यह रात अपनी शिद्दत मे कादसिया की "लैलतुल हसीर" से मुशाबा थी। इस रात तरफ़ैन के क़सीर आदमी कत्ल हुए। मोअर्रिखीन इस हवलनाक रात और उसके बाद आने वाली सुबह का हाल इस तरह बयान करते हैं।

"इस लड़ाई में दोनों फरीक़ों को शदीद नुक़सान पहुँचा था। लेकिन अमीर मआविया के आदमियों की हालत नेहायत पतली थी। उन्होंने पहले तीरों और पत्थरों से काम लिया। जब वह ख़त्म हो गये तो नेज़े अपने हाथों में पकड़ लिये। जब वह भी टूट गये तो तलवारें निकाल ली। उस वक्त मैदाने जग में सिवाय तलवारों की खटखटाहट के और कुछ न सुनाई देता था। अश्तर कभी मैमना वालों के पास जाता और कभी मैसरा वालों के पास और अपनी जोशीली तक़रीरो से उनकी हिम्मत बढ़ाता था। इसी हालत मे सुबह हो गयी लेकिन लड़ाई इसी तरह जारी रही। हज़रत अ़ली की फौज के हौसले खूब बढे हुए थे और उन्होंने अमीर मआविया के फौज की सफ़ों को तहे तेग़ कर दीं। हज़रत अली भी मैदान में बराबर डटे हुए थे और अपने सिपाहियों को जोश दिला रहे थे। नौबत यहाँ तक पहुँची कि हज़रत अमीर मआविया और उन के साथी मैदान छोडकर भागने की तैयारियाँ करने लगे। उस वक्त अमीर मआविया ने उमर बिन आस से कहा।

"इब्नुल आस कोई तदबीर बताओ। हम तो हलाक

Scanned by CamScanner

हो गये।"

उमर बिन आस ने कहा ———

"तुम्हारी फौज हज़रत अली की फौज का मुक़ाबला नहीं कर सकती। सिर्फ एक तदबीर से उनका हमला रुक सकता है और वह यह कि तुम उनको किताबुल्लाह की तरफ बुलाओ कि वह हमारे और तुम्हारे दरम्यान फैसला करे और इस तरह रद व कुबूल दोनो ही सूरतों में उनके दरम्यान इख्तेलाफ़ पैदा हो जायेगा।"

जब लड़ाई ने इन्तेहाई शिद्दत अख्तियार कर ली और अमीर मआविया के फौजों की सफें तितर बितर हो गयीं तो अमीर मआविया ने अपने आदमियों को फौज के आगे भेजा जो नेज़ो के सरों पर कुरआन मजीद उठाये हुए थे। मालूम यह होता था कि हज़रत अ़ली की फौजों के सामने कुरआन मजीद पेश करने का फैसला रात ही हो चुका था क्योंकि जब सुबह हुई तो अमीर मआविया के आदमी कुरआन उठाये हुए थे और पुकार रहे थे।

"ऐ अहले ईराक़ ! अगर तुम हमें कत्ल कर दोगे तो हमारे बाल बच्चों का क्या बनेगा और अगर हम तुम्हें कत्ल कर देंगे तो तुम्हारे बाल बच्चों का क्या बनेगा। इसलिए लड़ाई से बाज आ जाओ।"

दमिश्क़ के मुस्हफ़े आज़म को दस आदमी नेज़ों पर उठाये हुए थे और पुकार रहे थे ———

"किताबुल्लाह के फैसला को अपने और हमारे दरम्यान कुबूल करो।"

अबू लाऔरूस्सलमा एक सफ़ेद खच्चर पर सवार था और अपने सर पर कुरआन मजीद उठाये हुए पुकार रहा था ——

"ऐ अहल ईराक़ यह खुदाये अज्ज़ व जल्ल की किताब है। अपने और हमारे दरम्यान इसके फैसले को मन्जूर कर लो। अगर अहले शाम न रहे तो मग़रिबी सरहदों की हिफ़ाज़त कौन करेगा और अगर अहले ईराक़ न रहे तो मश्रिक़ी सरहदों

की हिफ़ाज़त किस तरह मुमकिन होगी।"

हजरत अ़ली ने जंग बन्दी में तवक्कुफ़ किया। आपको पता था कि यह चाल है जो दुश्मन ने अपनी शिकश्त को क़रीब आते देखकर हमें धोखा देने के लिए चली है। लेकिन इस सवाल पर हज़रत अ़ली की फौज में इख्तेलाफ़ पैदा हो गया। बाज़ कहते थे जंग जारी रखा जाय लेकिन बाज़ शिद्दत से मुखालिफ़ हो गये और तहकीम कुबूल करने के हक़ में थे।

हज़रत अ़ली ने कहा। इस मामला में खूब गौर व फिक्र की जरूरत है लेकिन हर तरफ से तहक्कुम कुबूल करने की आवाजे बुलन्द होने लगीं और बीस हज़ार फौज ज़िरह बकतर पहने और तलवारें लटकाये आपके पास आये। उनकी पेशानियाँ सजदों की वजह से स्याह हो गयीं थीं। उन लोगों में पेश पेश मसअद बिन फ़दकी और ज़ैद बिन हसीन थे जो बाद में ख़ारजी हो गये थे। उन्होंने आपको अमीरूल मोमिनीन कहने के बजाय आपको आपके नाम से पुकारा और कहा। ऐ अ़ली ! आप किताबुल्लाह की फैसला की तरफ आइये जबकि आपको इसकी तरफ बुलाया जा रहा है और लड़ाई बन्द करने का हुक्म दीजिये वरना हम आपको भी इसी तरह कत्ल कर देंगे जिस तरह हमने उस्मान बिन अफ़्फ़ान को कत्ल किया था।

लड़ाई बन्द कर दी गयी और हजरत अ़ली ने अशअस बिन कैस को अमीर मआविया के पास यह मालूम करने को भेजा कि वह क्या चाहते हैं। जब अशअस बिन कैस उनके पास पहुँचा तो मआविया ने उससे कहा। आओ हम और तुम इस फैसले की तरफ रुजूअ करें जिसका कुरआन मजीद में हुक्म दिया गया है। एक आदमी तुम अपनी तरफ से मुकर्रर करो और एक आदमी हम अपनी तरफ़ से मोक़र्रर करते हैं और फिर उनसे अहद ले कि वह किताबुल्लाह से बाहर न जायें फिर कुरआन के हुक्म के मुताबिक यह दोनो हमारे नेज़ाअ़ का फैसला जिस सूरत से करें उसे हम कुबूल कर ले।

हजरत अमीर मआविया ने अपनी तरफ से उमर बिन आस को हकम तजवीज़ किया और हज़रत अ़ली की तरफ से अबू मूसा

Scanned by CamScanner

अशअरी को हकम बनाने की तजवीज खुद हज़रत अली के फौज के बाज अफराद ने पेश की। हज़रत अली ने फरमाया। "तुमने मेरी बात पहले भी नहीं मानी। इस अम्र में मेरी राय के खिलाफ न चलो। मुझे अबू मूसा अशअरी पर एतमाद नहीं है" लेकिन लोगों ने अबू मूसा ही को हेकम बनाने पर असरार किया जिस पर मजबूरन हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हो को उनकी बात माननी पड़ी।

तहकीम के असरार

वाक़ेआत के छान बीन से जो जंग सफ़्फ़ैन के दरम्यान पेश आये पता चलता है कि फित्ना खुद बखुद नही फूट पड़ा बल्कि इसके लिए जमीन हमवार की गई। और इसके तार हिलाने वाले पसे पर्दा मौजूद थे। यह अम्र यकीनी है कि हजरत अली की तरफ फौज में कुछ ऐसे अनासिर मौजूद थे जिनका मक़सद सिर्फ हुकूमते इस्लामिया में तजलजुल पैदा करना और मुसलमानो को इफ़्तेराक़ व इन्तेशार का शिकार बना कर उन्हें ज़क पहुँचाना चाहते थे। और उन्हीं फित्ना परदाजों की वजह से सफ़्फ़ैन में हज़रत अली के लश्कर की फ़तह ऐन आखिरी वक्त में शिकश्त से बदल गयी जिसकी वजह से हजरत अली के मवक्किफ़ सख्त नुक़सान पहुँचा।

इस मौका पर मोअर्रिखीन की राय यह है कि हज़रत अली के लश्कर के बाज़ सालारों को अमीर मआविया ने तहरीस व तरग़ीब के ज़रिये मिला लिया था। उनमें अशअस बिन कैस का नाम सरे फेहरिस्त है।

बहुत मुमकिन है कि ऐसा किया गया हो क्योंकि अमीर मआविया की अक़लमन्दी और हज़रत उमर बिन आस के तदबीर से यह कोई बईद बात नहीं है क्योंकि मोतक़द्दमीन व मोतअख़्ख़िरीन मोअर्रिख मुत्तफ़िक़ हैं कि तमाम अरब में कोई शख्स सियासत, अक़लमन्दी, बोअद नजर, हुस्ने बसीरत और ज़कावत में दोनों से बढ़कर नहीं था।

तहकीम की तकमील

हज़रत अली ने तहकीम कुबूल और लड़ाई बन्द करके अपनी फ़तह को शिकश्त में बदल दिया था और ऐसा करना भी उनके लिए ज़रूरी था क्योंकि अकसर मददगारों ने लड़ाई से हाथ उठा लिया था और धमकी दी गयी थी कि अगर तहकीम कुबूल न की गयी तो इसका नतीजा अच्छा न होगा।

इसी तरह तहकीम लिखा जाने लगा तो भी फित्ना परदाजों ही की शरारत से हजरत अली ने अपने नाम से अमीरूल मोमिनीन का लक़ब हजफ़ किया जाना मन्जूर कर लिया जिसके नताएज आगे चलकर खतरनाक साबित हुए। सुलहनामा लिखा गया जिसकी एबारत मुन्दरजा ज़ैल थी।

"यह वह अहदनामा है जिस पर अली इब्न अबी तालिब ने अहले कूफ़ा और उनके साथियों और मआविया बिन अबी सुफ़ियान ने अहले शाम और उनके हामियों की तरफ से इत्तेफ़ाक किया है। तय यह पाया है कि हम दोनों खुदा और उसके कलाम के फैसले को मन्जूर करेंगे। किताबुल्लाह शुरू से आखिर तक हमारे दरम्यान फैसला कुन होगी। वह जिस बात की हुक्म देगी उसकी तामील करेगे और जिस बात से मना करेगी उससे रुक जायेंगे। अबू मूसा अशअरी और उमर बिन आस हेकम मोकर्रर किये गये हैं। वह किताबुल्लाह के हुक्म ही के मुताबिक फैसला करेंगे। अगर कोई बात किताबुल्लाह में न पायेंगे तो सुन्नते आदेला जामेआ की तरफ रुजूअ करेंगे।

अली और मआविया की तरफ़ से दोनों हकमों को जान व माल की पूरी हिफाजत व इत्मिनान और वादा दिलाया जाता है कि उनके फैसले को नाफ़िज़ करने मे उम्मते मोहम्मदिया उनकी मदद करेगी। उन्हें फैसला के लिए रमज़ान तक की मोहलत दी [illegible]ी है वह अपने फैसला क़ा एलान किसी ऐसी जगह करेंगे जो ईर[illegible] और शाम के वस्त [illegible] हो। ता फैसला जंग बन्द रहेगी। फरीक़ैन आ[illegible] के साथ जहाँ चाहेंगे आयेंगे जायेंगे। अगर मज़ीद मुद्दत की ज़रूरत हो तो हेकम बाहमी फैसला से ताखैर भी कर

Scanned by CamScanner

सकते हैं। उनको जिस किसी शहादत की ज़रूरत होगी वह उनके तलब पर हाज़िर कर दिया जायेगा। और शहादतें क़लम बन्द की जायेंगी जो मुत्तफ़ेका फैसला होगा उसपर फ़रीक़ैन को अमल करना होगा। अगर हेकम यह चाहेंगे कि उनके फैसला के वक्त मजमए आम न हो तो वह सिर्फ खास अश्खास को इस मौक़े पर तलब करेंगे। अगर फैसला के कब्ल किसी हेकम की वफ़ात हो जाये तो उसकी बजाय उसका फ़रीक़ दूसरे शख़्स को मुन्तख़ब कर के भेज देगा।"

यह अहदनामा 15 सफ़र 37 हिजरी या 13 सफ़र को लिखा गया और इस पर फ़रीक़ैन के दस्तख़त सब्त किये गये। इस सुलहनामा पर सफ़्फ़ैन का वाक़या हाएलह इख्तेताम पज़ीर हुआ। जिसमें नव्वे हज़ार मुसलमान को अपनी जानों से हाथ धोना पड़ा। मक़तूलीन की यह तादाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अहद से लेकर इस वक्त की तमाम लड़ाइयों तक शोहदा की मजमुई तादाद से ज़्यादा थी। अगर खुदा न ख्वास्ता लड़ाई और तूल खींचती तो मुसलमानों की ताक़त बिल्कुल ही ख़त्म हो जाती और तमाम मफ़्तूहा मुमालिक उनके हाथ से निकल जाते।

ख़्वारिज

मुश्रिकीन इस मअ़रका को हज़रत अमीर मआविया और हजरत उमर बिन आस की वाजेह फतह करार देते हैं क्योंकि कुरआन मजीद का वास्ता देकर लड़ाई बन्द करने की जो तदबीर इन दोनो ने पेश की थी वह पूरी तरह कामयाब हो गयी थी और हज़रत अ़ली का लश्कर इस हालत में वापस हुआ था कि उसमें इख्तेलाफ़ पैदा हो चुका था और मुख्तलिफ गिरोह क़ायम हो चुके थे। अमीर मआविया का लश्कर गो मुकम्मल शिकश्त के बिल्कुल क़रीब था लेकिन उसकी सफ़ों में मुतलक इन्तेशार न था। जब वह वापस हुआ तो उसमे कोई झगड़ा या किसी किस्म का कोई इख्तेलाफ़ न था।

हज़रत अ़ली की फौज में तफ़रक़ा पड चुका था। बाज़

लोगों का ख्याल था कि जो कुछ हुआ ठीक हुआ लेकिन एक जमाअ़त ने जिसके अकसर लोग बनी तमीम में से थे। इस फैसले की सख्त मोखालफ़त करनी शुरू कर दी। उनका कहना था कि किसी शख़्स को किताबुल्लाह के बारे में हेकम नहीं बनाया जा सकता। उन लोगों ने अपना एक नया नारा भी ईजाद कर लिया। जो ला हकमा इल्लल्लाह था। जब हजरत अ़ली कूफ़ा के क़रीब पहुँचे और "हरौरा" के मक़ाम पर आये तो बारह हज़ार खवारिज ने आगे जाने से इन्कार कर दिया। और यही ठहर गये। उन्होने एलान कर दिया कि हमारा अमीरे लश्कर शबस बिन रुबइल्तमीमी होगा और अमीरे सलात अब्दुल्लाह बिन अलकवाईश्शकरी। हज़रत अ़ली ने पहले अब्दुल्लाह बिन अब्बास को उनके पास भेजा और उन्होने वाजेह दलील हकम बनाने के जवाज़ पेश की। दलील यह थी। "वइन ख़िफ़्तुम शेक़ाक़ा बैनहोमा फबअसू हकमन मिन अहलेही व हकमन मिन अहलेहा इन योरीदा इस्लाहन युवफ्फेकिल्लाहो बैनहोमा।" (पा0 5, रू0 3) "यहकुमो बेही ज़वा अ़दलिन मिनकुम।" (पा0 7, रू0 3)

लेकिन खवारिज ने न माना इसी दरम्यान हज़रत अली भी तशरीफ़ ले आये। और उन्हें समझा कर फिर कूफ़ा ले गये लेकिन खवारिज ने गलत मोक़दमात तरतीब देकर नताएज निकाले और एक नया अकीदा गढ कर नया मज़हब कायम कर लिया। और उम्मत के लिए एक रोज़ फ़ित्ना का सामान पैदा कर दिया। जहाँ पहले मुसलमानों के दो गिरोह थे अब तीन हो गये जिसमें से हर गिरोह दूसरे का खून बहाना जायज़ समझता था। पहले आपको सिर्फ अहले शाम से मुकाबला दरपेश था अब ख़वारिज से भी निपटना ज़रूरी हो गया।

ख़वारिज ने हज़रत अ़ली पर भी कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया था और वह असहाबे जमल हजरत आयशा, तलहा, जुबैर रज़िअल्लाहो अन्हुम को भी बुरा भला कहते थे और अबू मूसा अशअ़री और उमर बिन आस और अमीर मआ़विया पर भी कुफ़्र के फ़तवे लगा दिये।

Scanned by CamScanner

मजलिसे मशावेरत

दौमतुल जन्दल या अजरह के मक़ाम पर हकमैन का इज्तेमा हुआ। वक़्त मोक़र्ररा पर हजरत अ़ली ने चार सौ आदमियों का एक गिरोह रवाना कर दिया जिनका अमीर शरीह बिन हानी अलहारसी को बनाया और इमामुस्सलात इब्न अब्बास को। अबू मूसा अशअ़री भी उनके साथ थे। अमीर मआ़विया ने भी चार सौ आदमियों के साथ उमर बिन आस को भेजा।

इस दरम्यान में अमीर मआविया के क़ासिद बराबर उनके खतूत उमर बिन आस तक लाते रहते थे मगर खुद क़ासिद को भी मजमूने ख़त मालूम न होता था लेकिन जब हजरत अली का कोई खत हज़रत इब्न अब्बास को पहुँचता हो, अहले ईराक़ आप के पास जमा हो जाते कि अमीरुल मोमिनीन ने क्या लिखा है। अगर इब्न अब्बास छुपाना चाहते तो मुख्तलिफ किस्म के क़यास अपने दिलो में कायम कर लेते। आखिर हजरत इब्न अब्बास ने फरमाया "आखिर तुम्हारी अक्लो को क्या हो गया है ? क्या तुम देखते नहीं कि मआ़विया का क़ासिद आता है और किसी को पता नहीं चलता कि वह किस मजमून का खत लाया है। वह वापिस जाता है और किसी को मालूम नहीं होता कि क्या खत लेकर गया है, न वहाँ शोर होता है न शोअ़ब। एक तुम हो कि मुझे चैन नहीं लेने देते।"

इस मौक़े पर मुन्दरजा जैल सहाबा भी मौजूद थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर, हजरत अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हेशाम मख़जूमी, हज़रत मुगीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द बिन वक़ास रज़िअल्लाहो अन्हुम।

एक तवील गुफ्तुगू के बाद दोनों में यह तय पाया कि दोनों को माजूल करके किसी तीसरे को खलीफ़ा बना लिया जाय ताकि उम्मत में इख्तेलाफ व इन्तेशार खत्म हो जाय।

उमर बिन आस ने कहा "आख़िर आपकी क्या राय है।"

अबू मूसा ने कहा "मेरी राय यह है कि हम दोनों को

माजूल कर दें उसके बाद मुसलमान आपस में मशविरा कर के जिसको चाहेगे ख़लीफ़ा बना लेंगें।"

उमर बिन आस ने कहा "मेरी भी यही राय है।"

इस बात चीत में उमर बिन आस का यह तरीक़ा था कि वह पहले अबू मूसा अशअरी को बोलने का मौका देते थे और हर बात मे उनको मुक़द्दम रखते थे। आप उनसे कहते थे। "आप रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी है। मुझसे ज्यादा उमर रसीदा हैं। इसलिए पहले आप बोलिए इसके बाद मैं कुछ अर्ज करूँगा।"

ऐसा करने से उनकी ग़रज़ यह थी कि अबू मूसा की जबान से हज़रत अली को माजूल करने का लफ़्ज़ निकलवा लिया जाय। चुनान्चा उनकी यह ग़रज़ पूरी हो गयी। सिर्फ लोगों में एलान करना बाक़ी था। जो इन दोनों में तय पाया था। चुनान्चे उमर बिन आस ने हस्बे मामूल अबू मूसा अशअरी को पहले खड़ा किया और वह कहने लगे।

"ऐ लोगो ! हमने इस मामला पर खूब गौर व खौज किया। आखिर इस नतीजा पर पहुँचे कि उम्मत की फलाह व बहबूद के लिए इससे ज्यादा कोई आसान राह नही कि हम अली और मआविया दोनो को माजूल कर दे और उम्मत पर मामला छोड़ दें कि वह जिसको चाहे खलीफा मुन्तखब कर ले। सो मैंने अ़ली और मआविया को माजूल कर दिया है अब मामला मुसलमानों के सुपुर्द है वह जिसको खिलाफत का अहल समझे खलीफा मोक़र्रर करें।"

जब अबू मूसा तकरीर खत्म कर चुके तो उमर बिन आस हम्द व सना के बाद कहने लगे। "अबू मूसा ने जो कुछ कहा वह सब आप लोगो ने सुन लिया। उन्होंने अपने साहब (अली रज़िअल्लाहो अन्हो) को माजूल कर दिया। मैं भी उनको माजूल करता हूँ। लेकिन अपने साहब (मआविया रज़िअल्लाहो अन्हो) को कायम रखता हूँ क्योंकि वह हज़रत उस्मान के वली और सच्चे जानशीन हैं।"

इस पर दोनों फरीक़ में तल्ख कलामी हुई और हथियार उठा लिया और आपस में उलझ पड़े। शाम वालों ने चाहा कि अबू

Scanned by CamScanner

मजलिसे मशावेरत

दौमतुल जन्दल या अजरह के मक़ाम पर हकमैन का इज्तेमा हुआ। वक्त मोकर्ररा पर हज़रत अ़ली ने चार सौ आदमियों का एक गिरोह रवाना कर दिया जिनका अमीर शरीह बिन हानी अलहारसी को बनाया और इमामुस्सलात इब्न अब्बास को। अबू मूसा अशअ़री भी उनके साथ थे। अमीर मआ़विया ने भी चार सौ आदमियों के साथ उमर बिन आस को भेजा।

इस दरम्यान में अमीर मआ़विया के क़ासिद बराबर उनके ख़तूत उमर बिन आस तक लाते रहते थे मगर खुद क़ासिद को भी मज़मूने खत मालूम न होता था लेकिन जब हजरत अली का कोई खत हज़रत इब्न अब्बास को पहुँचता हो, अहले ईराक़ आप के पास जमा हो जाते कि अमीरूल मोमिनीन ने क्या लिखा है। अगर इब्न अब्बास छुपाना चाहते तो मुख्तलिफ किस्म के कयास अपने दिलों में क़ायम कर लेते। आखिर हजरत इब्न अब्बास ने फरमाया "आखिर तुम्हारी अक्लो को क्या हो गया है ? क्या तुम देखते नहीं कि मआविया का कासिद आता है और किसी को पता नहीं चलता कि वह किस मजमून का खत लाया है। वह वापिस जाता है और किसी को मालूम नहीं होता कि क्या खत लेकर गया है, न वहॉ शोर होता है न शोअ़ब। एक तुम हो कि मुझे चैन नही लेने देते।"

इस मौक़े पर मुन्दरजा ज़ैल सहाबा भी मौजूद थे।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर, हजरत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हेशाम मख़ज़ूमी, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द बिन वक़ास रज़िअल्लाहो अन्हुम।

एक तवील गुफ्तुगू के बाद दोनों में यह तय पाया कि दोनों को माज़ूल करके किसी तीसरे को खलीफ़ा बना लिया जाय ताकि उम्मत में इख़्तेलाफ़ व इन्तेशार ख़त्म हो जाय।

उमर बिन आस ने कहा "आख़िर आपकी क्या राय है।"

अबू मूसा ने कहा "मेरी राय यह है कि हम दोनों को

माजूल कर दें उसके बाद मुसलमान आपस में मशविरा कर के जिसको चाहेंगे ख़लीफ़ा बना लेंगें।"

उमर बिन आस ने कहा "मेरी भी यही राय है।"

इस बात चीत में उमर बिन आस का यह तरीक़ा था कि वह पहले अबू मूसा अशअरी को बोलने का मौक़ा देते थे और हर बात में उनको मुक़द्दम रखते थे। आप उनसे कहते थे। "आप रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जलीलुल कद्र सहाबी है। मुझसे ज्यादा उमर रसीदा है। इसलिए पहले आप बोलिए इसके बाद मैं कुछ अर्ज करूँगा।"

ऐसा करने से उनकी गरज यह थी कि अबू मूसा की जबान से हज़रत अली को माजूल करने का लफ्ज निकलवा लिया जाय। चुनान्चा उनकी यह ग़रज पूरी हो गयी। सिर्फ लोगों मे एलान करना बाकी था। जो इन दोनों मे तय पाया था। चुनान्चे उमर बिन आस ने हस्बे मामूल अबू मूसा अशअरी को पहले खड़ा किया और वह कहने लगे।

"ऐ लोगो ! हमने इस मामला पर खूब गौर व खौज किया। आखिर इस नतीजा पर पहुँचे कि उम्मत की फलाह व बहबूद के लिए इससे ज्यादा कोई आसान राह नहीं कि हम अली और मआविया दोनों को माजूल कर दे और उम्मत पर मामला छोड़ दें कि वह जिसको चाहे खलीफा मुन्तख़ब कर ले। सो मैंने अली और मआविया को माजूल कर दिया है अब मामला मुसलमानों के सुपुर्द है वह जिसको खिलाफ़त का अहल समझें खलीफा मोकर्रर करें।"

जब अबू मूसा तकरीर खत्म कर चुके तो उमर बिन आस हम्द व सना के बाद कहने लगे। "अबू मूसा ने जो कुछ कहा वह सब आप लोगो ने सुन लिया। उन्होने अपने साहब (अली रजिअल्लाहो अन्हो) को माजूल कर दिया। मै भी उनको माजूल करता हूँ। लेकिन अपने साहब (मआविया रजिअल्लाहो अन्हो) को कायम रखता हूँ क्योंकि वह हजरत उस्मान के वली और सच्चे जानशीन हैं।"

इस पर दोनों फ़रीक़ में तल्ख कलामी हुई और हथियार उठा लिया और आपस में उलझ पड़े। शाम वालो ने चाहा कि अबू

Scanned by CamScanner

मूसा को पकड़ ले लेकिन उन्होंने घोडे पर सवार होकर मदीना का रूख किया और शामियों के हाथ न आये।

हकमैन की गुफ़्तुगू से यह नतीजा निकलता है कि उमर बिन आस इस में फतहयाब हो गये और इसी का नतीजा था कि हज़रत अमीर मआविया के कदम शाम में और दूसरे इलाके में भी अच्छी तरह जम गये।

मजीद बरआँ इस फैसले की वजह से उमर बिन आस ने अमीर मआविया के लिए काफ़ी वक्त फराहम कर दिया जिसमें वह अपने लश्कर की तन्जीम कर सकते थे। हजरत मआविया ने इस लश्कर से खूब फायदा उठाया और अपने लश्कर को खूब मुनज़्जम और अच्छी तरह मुसल्लह कर लिया। इसी का नतीजा था कि जब हज़रत अली ने दुबारा शाम पर हमला किया तो हज़रत अली की फौज की हज़रत मआविया के सामने कुछ पेश न जा सकी।

ख़वारिज से जंग

हजरत इब्न अब्बास और शरीह ने हजरत अली को तमाम बातों की इत्तेला दी और हज़रत अली को एहसास हुआ कि अब मामला हद से गुजर चुका है लेहाजा उनको पहल करके इस फित्ने को बढ़ने से रोकना चाहिए लेकिन खवारिज की बग़ावत राह में हायल हो गयी और हजरत अली को मआविया से जग करने के बजाय खवारिज का किला कमअ करना पडा।

अमीर मआविया से दुबारा मुकाबला करने के लिए हज़रत अली के क़रीब एक लश्करे अजीम फिर इकट्ठा हो चुका था। जब बसरा, कूफ़ा, मदायन के लश्कर के बाज अफ़राद यह कह रहे हैं कि हमें पहले हरौरियों से (ख़वारिज) जग करना चाहिए। और उन्हें शिकश्त देकर उनका कसबल निकालना चाहिए। उनसे फ़ारिग होकर हम इत्मीनान से शाम की तरफ कूच करेंगे। लेकिन हजरत अली ने मौजूदा सूरते हाल पर रोशनी डालते हुए समझाया कि पहले शाम ही चलना चाहिए। लोगो को मालूम था कि हजरत अली के एहकाम की खिलाफ़ वरज़ी का कितना तबाह

कुन नतीजा निकल चुका है। इसलिए वह कहने लगे ———

"अमीरूल मोमिनीन आप जहाँ चाहें हमें ले चलें। हमें कोई उज्र न होगा।"

इसी दौरान में यह वाक़या ज़ुहूर पजेर हुआ कि एक बुजुर्ग हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबाब अपनी हामला बीवी को साथ लिए चले जा रहे थे कि ख़वारिज से उनका सामना हो गया। उन लोगो ने उन्हें पकड लिया और कहा। यह कुरआन जो आपके गले में लटका हुआ है आपके कत्ल का हुक्म देता है। आपने कहा मैं तो मुसलमान हूँ। अब्दुल्लाह बिन खुबाब मेरा नाम है। एक तवील गुफ़्तुगू के बाद उन्होंने पूछा। अ़ली के मुतअ़ल्लिक तहकीम से क़ब्ल व बाद आपकी क्या राय है। अब्दुल्लाह ने जवाब दिया। "अ़ली तुम्हारे मुक़ाबले में किताबुल्लाह को ज़्यादा समझने वाले और उसपर अ़मल करने वाले है।" ख़वारिज ने कहा। तुम अपनी नफ्सियाती ख्वाहिशात की पैरवी करके यह शहादत दे रहे हो। और वह उन्हे पकड कर नहर के करीब ले गये और ज़बह कर दिया। इसी तरह आपकी बीवी का पेट चाक करके उन्हें भी क़त्ल कर दिया। क़बीला तै के तीन औरतों और उम्मे सनान सैदाविया को भी इन जालिमो ने पकड़ कर मार डाला।

जब हजरत अ़ली को अब्दुल्लाह बिन खुबाब और तै के तीन औरतों के कत्ल की ख़बर मिली तो आपने अपने एक क़ासिद को सही खबर लाने को भेजा लेकिन उन्होंने उस क़ासिद को भी कत्ल कर डाला। जब क़ासिद के क़त्ल की ख़बर पहुँची तो हज़रत अली के साथियो ने कहा ——

"अमीरूल मोमिनीन ! अगर हमने ख़ारजियों को छोड़ दिया तो कहीं ऐसा न हो कि यह हमारे पीछे हमारे अह्ल व अ़याल पर हमला करके उन्हें क़त्ल न कर दें इस लिए हमें पहले इनका सर कुचलना चाहिए। इसके बाद हम शाम चलेंगे।"

हज़रत अली के पास अब इसके अलावा कोई चारा न था और हज़रत अली ने पहले ख़वारिज को वअ़ज व नसीहत से समझाना चाहा लेकिन वह एक न माने। आख़िर एक दिन हजरत अ़ली ने हज़रत अय्यूब अन्सारी को एक सफ़ेद झण्डा देकर भेजा

Scanned by CamScanner

और एलान करा दिया।

"तुममें से जिसने अब्दुल्लाह बिन ख़ुबाब और दूसरे मुसलमानो के क़त्ल में हिस्सा नहीं लिया है वह अगर इस झण्डे के नीचे आ जाये वह अमन में है जो शख़्स कूफ़ा या मदायन चला जाये वह अमन में है।"

यह एलान सुनकर एक जमाअत खवारिज को छोड कर चली गयी और एक जमाअत हजरत अली के झण्डे के नीचे आ गयी। अब इब्न वहब के पास सिर्फ दो हजार आठ सौ के करीब आदमी रह गये। आख़िर जंग शुरू हुई। इस जंग मे इब्न वहब और उसके अकसर साथी मारे गये। और इस तरह खवारिज का फित्ना खत्म हुआ।

हज़रत अली शाम जाना चाहते थे लेकिन साथियो ने कहा। हमारे तीर खत्म हो गये। तलवारें कुन्द पड गयीं। तीरो के फल टूट गये इसलिए फिलहाल वापस चले ताकि हम पहले से भी ज़्यादा तैयारी करके अह्ले शाम के मुकाबला के लिए निकले। आखिर मायूस होकर हज़रत अ़ली ने शाम जाने का इरादा तर्क कर दिया।

मिस्र पर अमीर मआ़विया का कब्ज़ा

अमीर मआ़विया ने उमर बिन आस को एक फौज देकर मिस्र पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा जिसमें वह कामयाब हो गये और मोहम्मद इब्न अबी बकर जो हज़रत अ़ली की तरफ से मिस्र पर वाली थे कत्ल कर दिये गये। उमर बिन आस ने 38 हिजरी में मिस्र पर क़ब्जा किया। हजरत अमीर मआविया ने उमर बिन आस को मिस्र की वेलायत सौंप दी। हज़रत उमर बिन आस को अगरचे मिस्र की वेलायत मिल गयी थी लेकिन वह अकसर शाम आते रहते थे। मिस्र पर हुकूमत करते हुए अभी चार ही साल गुजरे थे कि अल्लाह तआला की तरफ से बुलावा आ पहुँचा और 42 हिजरी में यह अज़ीमुश्शान सियासतदॉं उठ गया। "इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन।"

हज़रत अ़ली की शहादत

40 हिजरी का ज़िक्र है कि अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम अलमुरादी, बरक बिन अब्दुल्लाह, उमर बिन बकर अलतमीमी तीन मशहूर खारजी एक दूसरे से मिले। और आलमे इस्लाम के नागुफ्ता ब हालत का तजकेरा करने लगे। बात चीत के दरम्यान जंग नहरवान (खवारिज का कत्ल) का जिक्र आ गया और कहने लगे कि अपने भाइयों के कत्ल के बाद अब जिन्दगी का कोई मजा बाकी न रहा। अब हमारे लिए यही एक रास्ता है कि हम उन लोगो को जिन्होंने तमाम आलमे इस्लाम मे एक फसाद बरपा कर रखा है कत्ल कर दें। इस तरह जहॉं हम मुसलमानों को एक अजीम फित्ना से निजात दिला देगे वहॉं अपने भाइयों का इन्तेक़ाम भी ले लेंगे।

इब्न मुलजिम जो अहले मिस्र में से था ने कहा। मैं अली को क़त्ल करने का जिम्मा लेता हूँ। फिर बरक बिन अब्दुल्लाह ने मआ़विया को क़त्ल करने का जिम्मा लिया और उमर बिन बकर ने उमर बिन आस को कत्ल करने की हामी भरी। इन तीनों ने बाहम अहद व पैमान किये और क़समें खाईं कि अपने अपने मुफविजह कामों से किसी तरह पीछे न हटेगे और या इन तीनों को क़त्ल कर देंगे या खुद मारे जायेंगे। इस काम के लिए रमज़ानुल मुबारक की 17 तारीख मोकर्रर हुई। क़ौल व करार के बाद उन्होने अपनी तलवारें जहर में बुझाईं और तीनों अपना अपना काम सर अन्जाम देने के लिए कूफ़ा, मिस्र और दमिश्क रवाना हो गये।

इब्न मुलजिम कूफ़ा आया और बनी कुन्दा मे ठहरा जो दर परदा खवारिज के हामी थे। तीम रूबाब के एक औरत कताम नामी पर आशिक हो गया। वह बहुत हसीन व जमील औरत थी। उसके बाप और भाई को भी हजरत अली ने जग नहरवान में क़त्ल किया था जिसकी वजह से उसके दिल मे हज़रत अली की तरफ से शदीद अ़दावत थी। उसने क़ताम को निकाह का पैग़ाम दिया। क़ताम ने कहा मुझे तुमसे निकाह करने में कोई उज्र नही है लेकिन महर वह होगा जो मैं मोक़र्रर करूँगी। इब्न मुलजिम ने

कहा वह क्या होगा।

क़ताम ने कहा "तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम, एक लौंडी और अ़ली इब्न अबी तालिब का क़त्ल।"

इब्न मुलजिम ने कहा। तुम्हारा महर मुझको मन्जूर है। इब्न मुलजिम ने क़बीला के एक शख़्स शबीब बिन बजरह के पास आया और उससे कहा। "क्या तुम दुनिया व आख़ेरत का शरफ़ हासिल करना चाहते हो।" तो उसने पूछा किस तरह ?

इब्न मुलजिम ने कहा। "अ़ली इब्न अबी तालिब को क़त्ल करके।"

शबीब ने यह सुनकर कहा। यह कैसे हो सकता है। इब्न मुलजिम ने कहा मैं मस्जिद में छुपकर बैठ रहूँगा। जब अ़ली फज्र की नमाज़ पढाने मस्जिद में आयेंगे तो हम दोनों अचानक उन पर हमला करके उन्हें कत्ल कर देंगे।

इस तरह बहला फुसला कर शबीब को भी अपने साथ मिला लिया और हस्बे करार दाद 17 रमजान को मस्जिद में जा कर छुप कर बैठ गये। जब हज़रत अली नमाज़ के लिए तशरीफ लाये तो सबसे पहले शबीब ने अपनी तलवार से आप पर हमला किया लेकिन उसकी तलवार दरवाजा पर लगी। उसके बाद इब्न मुलजिम ने वार किया। उसकी तलवार आपके सर पर लगी। शबीब मौका पाकर मजमअ मे घुस गया और बच गया। हजरत अली ने फरमाया कातिल को पकड लिया जाय। इब्न मुलजिम को पकड़ लिया गया और हज़रत अली के सामने पेश किया गया।

आखिरी वक्त में आपने अपने दोनो बेटों हसन व हुसैन को बुलाया और उन्हें मुख़ातिब करते हुए फरमाया। मैं तुम्हें चन्द बातो की वसीयत करता हूँ।

"अल्लाह तआला का तकवा अख्तियार करना। दुनिया से कभी दिल न लगाना। किसी ऐसी चीज की ख्वाहिश न करना जो तुम्हारे दस्तरस से बाहर हो। हमेशा सच बोलना। यतीम पर रहम खाना। अपनी आखेरत सवारने की फिक्र करना। जालिम को उसके जुल्म से रोकना। मज़लूम की मदद करना। कुरआन करीम

के एहकाम पर अ़मल करना। अल्लाह तआला की तअ़मील एहकाम के सिलसिला मे लौमता लाएम की परवाह न करना।"

और अपने पसमान्दगान से फ़रमाया।

"ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब ! खबरदार ! तुम मेरे बाद मुसलमानो का खून न बहाना और मेरे कातिल के सिवा किसी को क़त्ल न करना।"

खास तौर से हसन को फरमाया। "हसन ! अगर मैं मर जाऊँ तो मेरे क़ातिल का तलवार से एक दफा मे ही ख़ातमा कर देना। इसका मुसला न करना क्योंकि मैंने रसूलल्लाह, सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है "मुसला से बचो ख्वाह व बावला कुत्ता ही क्यो न हो"।"

आखिर वक्त मे जन्दब इब्न अब्दुल्लाह ने हज़रत अली से दरियाफ्त किया। क्या हम आपके बाद आपके बेटे हसन को खलीफ़ा बनायेगे ? हजरत अली ने फरमाया। "न मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ न मना करता हूँ। जो तुम मुनासिब समझो करो।"

हजरत हसन ने इब्न मुलजिम को क़त्ल करने का हुक्म दे दिया और उसको क़त्ल के बाद आग में जला दिया गया।

बरक इब्न अब्दुल्लाह ने उसी रात को जिस रात को हजरत अली पर हमला किया गया अमीर मआविया की घात में बैठ गया। जब वह सुबह निकले तो हमला कर दिया गया। तलवार उनके रान में लगी। वह उन्हें कत्ल न कर सका। बरक को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया। उसने अमीर मआविया की खिदमत में अर्ज की मैं आपको एक खुशख़बरी सुनाता हूँ।

हजरत अमीर मआविया ने कहा। वह क्या ?

उसने कहा मेरे एक भाई ने अली को इसी रात क़त्ल कर दिया है।

अमीर मआ़विया ने कहा कि शायद वह भी तुम्हारी तरह अपने मकसद में कामयाब न हुआ हो।

उसने कहा। नही वह जरूर कामयाब हुआ होगा क्योंकि अली के साथ पहरादार नहीं रहते।

बरक को अमीर मआविया ने कत्ल करा दिया और साअदी

Scanned by CamScanner

नामी एक तबीब को बुलाया। तबीब ने जख़्मों को अच्छी तरह मुआयना किया और कहा।

आप पर जहर से बुझी हुयी तलवार से हमला किया गया है। मैं इसका दो ही इलाज कर सकता हूँ। एक तो लोहा गरम करके जख़्मों की जगह लगाऊँ या एक दवाई पिलाऊँ। लेकिन इस दवाई का असर यह होगा कि आपकी औलाद का सिलसिला मुनकतअ़ हो जायेगा।

अमीर मआ़विया ने कहा ———

गरम लोहा लगवाने की मुझे ताब बाकी नही रहा। औलाद का सिलसिला मुनकतअ हो जाने का सवाल तो मेरे लिए यजीद और अब्दुल्लाह ही काफी हैं। चुनान्चा तबीब ने उन्हें दवा पिलाई और वह अच्छे हो गये। बाद अज़ाँ उनके कोई औलाद न हुयी।

इस वाकया के बाद हजरत अमीर मआविया ने मस्जिद मे मक़सूरा बनाने का हुक्म दिया और पहरादार मोक़र्रर किये जो नमाज़ पढ़ते वक्त मुक्तदियों की निगरानी करते थे।

उमर बिन बकर भी उसी रात उमर बिन आस की घात में बैठ गया। उमर बिन आस बीमार थे इसलिए नमाज में न आ सके और अपनी जगह खारजा बिन हज़ाफ़ा को नमाज पढ़ाने का हुक्म दिया। चूँकि उस वक्त तक रोशनी नमूदार न हुई थी इस लिए उमर बिन बकर को पता न चल सका कि उमर बिन आस की जगह खारजा नमाज पढाने आये हैं। उसने इब्न आस के धोके में खारजा बिन हजाफा पर हमला कर दिया और उन्हे क़त्ल कर दिया। लोगों ने झट उसे पकड लिया और उसे हज़रत उमर बिन आस की खिदमत में ले गये। उमर बिन बकर ने लोगों से पूछा यह कौन है ?

लोगों ने जवाब दिया। "उमर बिन आस।"

उसने कहा मैंने किसे कत्ल कर डाला ?

लोगों ने कहा। "खारजा बिन हजाफा को।"

इस पर वह उमर बिन आस से कहने लगा। मैं तो अपने ख़याल में तुम पर हमला किया था। उमर बिन आस ने कहा। तूने मुझे कत्ल करना चाहा था लेकिन अल्लाह तआ़ला की मशीअत

यह थी कि मेरी जगह खारजा मारे जायें। अच्छा अब अपने किये की सजा भुगत। उन्होंने उसे क़त्ल करने का हुक्म दिया और वह कत्ल कर दिया गया।

☆☆☆☆☆

हज़रत अली की शहादत के साथ इस्लाम की तारीख के एक दरखशन्दा बाब का खात्मा हो गया। अपनी खिदमाते आला, कलेमतुल हक, जहद व कनाअत और दुनयवी आराम से नफ़रत के लेहाज़ से हजरत अली हजरत अबू बकर व हज़रत उमर के नक्शे क़दम पर थे। अलबत्ता जहाँ तक तदबीर, ममलुकत, सियासत की बारीकियों को समझने, कौम के हालात का इल्म रखने, फित्ना व फसाद की राहों को बन्द करने और फरमा रवाई का तअ़ल्लुक है हजरत अली को वह मकाम हासिल न था जो शेखैन को था। ताहम इसमें कोई शक नही कि अगर जमाना हजरत अली का साथ देता और उम्मत मे तफ़रका न पैदा हो जाता तो आप अपने अहद में आलमे इस्लाम में अद्ल व इन्साफ़ का वह नमूना क़ायम करते और फतूहात इस्लामी को इतनी वुसअत देते कि अहदे सिद्दीक व फ़ारूक का समाँ लोगों की नज़रो मे छा जाता। हज़रत अली के तकवा और परहेजगारी, सादा जिन्दगी और दुनियवी माल व मताअ से नफरत का यह हाल था कि आपके इन्तेकाल के वक्त आपके पास सिवाय सात दिरहम के और कुछ न था।

आपने पहली शादी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहबज़ादी हजरत फ़ातमा रजिअल्लाहो तआला अन्हा से की। उनकी जिन्दगी मे आपने और कोई शादी नहीं की। हज़रत फ़ातमा के बतन से दो लडके हसन, हुसैन और दो लड़कियाँ ज़ैनब और उम्मे कुलसूम पैदा हुयी। हजरत फातमा की वफात के बाद आपने आठ शादियाँ की। आपके कुल चौदह लडके और सत्रह लडकियाँ पैदा हुयी। आपके जिन साहबजादों से नस्ल का सिलसिला जारी रहा उनके नाम यह हैं।

हसन। हुसैन। मोहम्मद बिन अलहन्फिया। अब्बास। उमर

Scanned by CamScanner

रज़िअल्लाहो अन्हुम।

खोलफ़ाए राशिदीन के अहद में सल्तनत का नज़्म व नसक़

खेलाफ़ते राशेदा में तशरीअ की बुनियाद कुरआन करीम और सुन्नते मारूफ़ा पर थी। अगर खोलफा के सामने कोई ऐसा मसला पेश होता जिसके बारे मे कुरआन करीम और सुन्नत मे कोई हुक्म न मिलता तो वह अम्साल व अशबाह और नज़ायर पर क़यास करके उस मसला का हुक्म निकालते। ख़लीफ़ा का इन्तेख़ाब मशविरा से किया जाता। जम्हूरियत की बुनियाद दरअस्ल इसी वक्त पडी।

क़ज़ा

कज़ा का काम खलीफ़ा के फ़राएज में समझा जाता था इस लिए खोलफ़ा इस काम के लिए खुद अपनी तरफ से नाएब मोक़र्रर करते थे। हज़रत सिद्दीक अकबर के अहद में हर शहर क़ा आमिल ही क़ज़ा का काम करता था लेकिन हज़रत उमर ने इसके लिए एक जुदागाना मोहकमा कायम किया और मुख़्तलिफ़ शहरों में काजी मोक़र्रर किये गये। काजी अपनी राय और हुक्म देने में आज़ाद होते थे। उन्हें यह हिदायत थी कि वह जो भी हुक्म दें कुरआन व सुन्नत के एहकाम के मुताबिक़ दें। इलाक़ा के हाकिम का काज़ी पर पूरा दबाव या असर न होता था। काजी का तअय्युन ख़लीफ़ा खुद करता था। काज़ियों को बैतुल माल से बेश क़रार तन्खाहें दी जाती थी ताकि वह रिश्वत की तरफ माएल न हों। क़ाज़ियों के अलावा हर शहर में एक जमाअत ऐसी भी मौजूद रहती थी जिसने एहकाम फेकही इस्तेख़राज व इस्तेन्बात में खूब मलका पैदा कर लिया था। जब क़ाज़ी को कोई मुश्किल मसला दर पेश होता तो उन्ही लोगों से मदद लेता था।

देफ़ाअ

लश्करों की अस्ल क़यादत खलीफ़ा के हाथों में होती थी।

क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाने में आप खुद फौजो की क़यादत फरमाया करते थे लेकिन जब सल्तनत के कामों ने वुसअत अख्तियार की तो खोलफ़ा अपनी जगह ऐसे लोगो को बहादुरी में यकता और शुजाअत में ताक़ होते थे सिपेह सालार मोक़र्रर करने लगे। उनकी एताअत वाजिब थी जिस तरह ख़लीफ़ा की एताअत वाजिब थी। फ़तह के बाद जब हालात पुर सुकून हो जाते तो इन सिपेहसालारो की जिम्मेदारी फौज क उमूर की निगेहदाश्त और आइन्दा के लिए उन्हें जंग की तरबियत देने तक महदूद हो जाती थी।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर के जमाने में सारी फौज रज़ाकाराना थी। उसके नाम रजिस्टर में दर्ज न थे। हज़रत उमर के ज़माना में सिपाहियों के नाम दर्ज रजिस्टर किये गये। इस तरह बाक़ायदा फौज की सूरत पैदा हुयी। हज़रत फारुक आज़म ने बैतुल माल से तमाम फौजियों की तन्खाहे मोक़र्रर कर दी थी।

महसूल

हजरत फारुक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो के अहद से खेराज के वसूल के लिए मुस्तकिल और जुदागाना आमिल मोक़र्रर किये जाते थे। जो ख़ेराज वसूल होता उसे ख़लीफ़ा के एहकाम के तहत फौज की तन्खाह और मसालेह आम्मा के दूसरे कामों पर खर्च किये जाते, और जो रक़म बच जाती उसको दारूल खिलाफ़त भेज दिया जाता है।

जुज़िया

वह रक़म जो ज़िम्मियो से उनकी हिफ़ाज़त के बदले और उनको दुश्मनो से बचाने के एवज़ वसूल की जाती थी। औरतें, बच्चे, मुफ़लिस, अपाहिज इससे मुस्तसना थे।

ज़कात

मुसलमानों के हर किस्म के माल, चरने वाले जानवर, नक़दियों और जमीन की पैदावार पर कुरआन मजीद के एहकाम और रसूलल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत के

Scanned by CamScanner

मुताबिक़ ज़कात वसूल की जाती थी।

उशूर

मुसलमान ताजिर जब अपना माल लेकर रोम के शहरों में जाते तो उनसे माल का दसवाँ हिस्सा बतौर महसूल वसूल किया जाता था। हज़रत उमर को जब मालूम हुआ तो आपने हुक्म दिया। जो रोमी ताजिर हमारे मुल्क में माल लेकर आयें उनसे भी इसी क़दर महसूल वसूल किया जाय।

सिक्का

इस्लाम से क़ब्ल अरब में सोना चाँदी के ईरानी व रोमी सिक्के रायज थे। उनका अपना कोई सिक्का न था। हज़रत सिद्दीक़ अकबर तक यही सिक्के रायज रहे। ईरान फ़तह होने के बाद फ़ारूक आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो ने चाहा कि सिक्कों का वज़न मोक़र्रर किया जाय और दस दिरहम का वज़न सात मिसक़ाल रखा गया। 18 हिजरी में कसरवी दिरहम के नमूना पर दिरहम ढाले गये। बाज़ का नक़्शा अलहम्दो लिल्लाह और बाज़ का नक़्शा मोहम्मदुर्रसूलल्लाह और बाज़ का नक़्श लाइलाहा इल्लल्लाह। बाज़ पर उमर लिख दिया गया। हज़रत उस्मान के दौर में जब दिरहम ढाले गये तो उन पर सिर्फ अल्लाहो अकबर ही के अल्फ़ाज़ कुन्दा थे।

मौलाए कायनात की अदबी शख़्सियत

हज़रत अली की शख़्सियत पर तारीख़ ने बड़े दबीज़ पर्दे डाल रखे हैं जिससे आपके सही खद व ख़ाल मोतअय्यन करना बहुत मुश्किल हो गया है।

एक तरफ़ आपके दुश्मनों ने आपकी सीरत को मसख़ करने में कोई कसर न उठा रखी है दूसरी तरफ मोअतकेदीन व मोहिब्बीन ने भी आपकी मोबालग़ा आमेज़ मदह व तौसीफ़ में कोई दकीका फर्व व गुज़ाश्त न किया।

आपके अक़वाल, खुतबात और एहकाम पर नज़र डालने से आपकी हकीकी शख़्सियत मालूम करने में मदद मिलती है और

यह बात सामने आ जाती है कि आपको खुदा तआला की तरफ़ से हैरत अंगेज़ दिमाग़ अता हुआ था। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़रीबी अज़ीज़ होने और आपकी ख़िदमत में शब व रोज़ रहकर आपका पुर मआरिफ़ कलाम सुनते रहने की वजह से फ़साहत व बलाग़त, मआनी व बदीअ आपके रग व रेशा में सरायत कर गयी थी और यही वजह थी कि आपके ज़बान मुबारक से हमा वक्त फ़साहत व बलाग़त के चश्मे फूटते रहते थे। हिकमत आपके घर की लौंडी थी और ज़ोरे खुतबात में कोई शख़्स आपका हम पल्ला न था। कोई भी मौज़ू कितना ही दुश्वार क्यों न हो आप उसपर गुफ़्तुगू व तक़रीर कर सकते थे। लोगों को जेहाद पर अंगेख़्त करने के खुत्बे, अमीर मआविया के नाम आपके मकतूबात, उमरा व अम्माल व हुक्काम के मोतअल्लिक़ आप के एहकाम अदब के मोजेज़ात की हैसियत रखते थे।

नहजुल बलाग़त

मौलाए कायनात की बेहतरीन यादगार नहजुल बलाग़त है बाज़ का ख़याल है कि इस किताब में जो कुछ है वह सब का सब हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हो का फरमूदा नहीं है लेकिन हक़ीकत यह है कि उसका अकसर हिस्सा हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हो ही के फरमूदात और इरशादात पर मब्नी है। यह किताब आपकी ज़िन्दगी, आपके अहदे ख़िलाफ़त, आपकी जंगों और ग़ज़वात और आपकी दुनिया से बे रग़बती की सही तस्वीर पेश करती है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि बाज़ खुतब व रसायल ग़लत तौर पर हज़रत अली से मन्सूब हैं। ताहम इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि नहजुल बलाग़त में जो आपके खुतबात और रसायल दर्ज हैं उनसे हज़रत अली की रफीउश्शान शख़्सियत जो ईमान व यक़ीन से भरपूर और हक़ व सदाक़त के सिलसिला में इन्तेहाई मज़बूत थी हमारे सामने आ जाती है।

एक मशहूर नक़्क़ाद "नहजुल बलाग़त" की तौसीफ़ व तारीफ़ करते हुए लिखता है कि "एक ख़तीब और एक अदीब के

Scanned by CamScanner

कलाम में जितनी बातों की ज़रूरत होती है वह सब इस किताब में मौजूद हैं। इसमें अदबी पैराया में मदह भी है और ज़म भी। नेक बातों की तरग़ीब भी है और बुरी बातों से इज़्हारे नफ़रत भी। सियासी चपकलश के नमूने भी हैं और जंग व जदल का हाल भी। रेआया पर हाकिम के हुकूक की तफ़्सील भी है और हाकिम पर रेआया के हुकूक का बयान भी। शहरियत के उसूल भी दर्ज हैं और अदालत के क़वायद भी। शख़्सी नसायह भी हैं और अमूमी मवाइज़ भी। मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में इसकी तारीफ़ यूँ की जा सकती है कि यह खुदा तआला के कलाम से कमतर और बन्दों के कलाम से बढ़कर है।"

खुतबात अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो के नमूने

एक खुतबा में अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात बयान करते हुए फ़रमाते हैं।

"हर किस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जो अव्वल भी है और आख़िर भी है। जो ज़ाहिर भी है और बातिन भी। उसके अलावा हर अज़ीज़ ज़लील है। हर क़वी ज़ईफ़ है हर मालिक ममलूक है, हर आलिम मोतअ़ल्लिम है, हर क़ादिर आजिज़ है। हर समीअ़ बहरा है क्योंकि वह लतीफ़ आवाज़ों को नहीं सुन सकता। हर बसीर अअ़मा है क्योंकि वह मख़्फ़ी रंगों और लतीफ़ अजसाम को नहीं देख सकता। हर ज़ाहिर बातिन है, हर बातिन ज़ाहिर है। जो चीज़ उसने पैदा की है उसे पैदा करने की किसी में कुदरत नहीं। इसे ज़माना के मवाक़िब ख़ौफ़ज़दा नहीं कर सकते। उसे किसी के मदद की ज़रूरत नहीं। तमाम मख़लूक उसकी परवरदह है तमाम बन्दे उसके मतीअ़ व फ़रमा बरदार हैं वह किसी चीज़ में महलूल नहीं। ताकि यह न कहा जा सके कि वह फलाँ चीज़ में पाया जाता है। वह किसी चीज़ से मुन्फ़सिल नहीं है ताकि यह न कहा जा सके कि वह फलाँ चीज़ से अलाहेदा है। उसे किसी चीज़ को पैदा करने में मशक्कत तकलीफ़ और इज्ज़ का सामना नहीं करना पड़ता। जो कुछ

गुजर गया और जो कुछ आइन्दा पेश आने वाला है उसमें किसी किस्म का शुबह नहीं है। उसकी कज़ा यक़ीनी है उसका इल्म मोहकम और उसका हुक्म मुबरम है जो किसी सूरत में टलने वाला नहीं है।"

बारिश की दुआ यूँ फ़रमाते हैं ——

"ऐ अल्लाह ! हमारे पहाड़ खुश्क हो गये हैं। हमारी ज़मीन पर ख़ाक उड़ने लगी है। हमारे जानवरों के हलक प्यास की वजह से खुश्क हो चुके हैं। वह बड़ी बेताबी के साथ अपने अहातों में खड़े नेहायत दर्दनाक आवाज़ों से चीख़ रहे हैं। वह बार बार चारों तरफ़ पानी की तलाश में चरागाहों में फिरते हैं और घाट पर जाते हैं लेकिन नाकाम वापस आ जाते हैं।

ऐ अल्लाह ! गिड़गिड़ाने वालों की गिड़गिड़ाहट पर रहम फ़रमा। ऐ अल्लाह ! उन जानवरों पर रहम फरमा जो चरागाहों में हैरान व सरगरदाँ फिर रहे हैं और अपने बाड़ों में दर्दनाक आवाज़ों से चीख़ रहे हैं।

ऐ अल्लाह ! तू ऐसी बारिश बरसा जो बरकत हो। रूवैदगी और सब्ज़ा पैदा करने वाली हो जिससे तेरे ज़ईफ़ और कमज़ोर दरिन्दे फरहत और तवानाई हासिल करें। जिससे मुर्दा इलाके फिर तर व ताज़ा और सर सब्ज़ हो जायें और हमारे मवेशी बा फरागत चारा हासिल कर सकें।

ऐ अल्लाह ! अपने ग़रीब और कमज़ोर मख़लूक़ और बे जुबान जानवरों को अपने करम से नवाज़ और उनपर बे पायाँ बरकात नज़िल फ़रमा। तू अपनी रहमत से हमारे लिए ऐसा बादल भेज जो पानी से भरा हुआ हो और जो आकर मूसलाधार पानी बरसाये। ऐसा बादल न भेज जिसकी कड़क, गरज और चमक हमें धोका दे और जो पानी से बिल्कुल ख़ाली हो। ऐ अल्लाह खुश्क ज़मीन को सैराब कर और कहत ज़दा लोगों को आराम और चैन मरहमत फ़रमा।"

मौला अ़ली के हकीमाना इरशादात

(1) अगर तुम मुनइम का शुरू ही से शुक्रिया अदा न करोगे तो

Scanned by CamScanner

आइन्दा हासिल होने वाली नेअमत को हाथ से खो दोगे।

(2) बेहतरीन ज़ह्द यह है कि अपने ज़ह्द को छुपाया जाय।

(3) अगर किसी ग़लती से तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआला के नज़दीक यह ग़लती उस नेकी से अच्छी है जिससे तुम मग़रूर हो जाओ।

(4) जब तक तेरा बख़्त यावर है तेरा ऐब भी छुपा हुआ है।

(5) सख़ावत वह है जो बिला मांगे की जाय। मांगने पर सख़ावत सख़ावत नहीं होती बल्कि हया और तज़म्मुम होती है।

(6) अक़्ल से बढ़कर और कोई दौलत नहीं। जेहालत से बढ़कर और कोई फ़ोक्र नहीं। अदब से बढ़कर और कोई मीरास नहीं। मशविरा से बढ़कर और कोई मददगार नहीं।

(7) जिस शख़्स ने तुझे डराया वह उस शख़्स की तरह है जिसने तुझे खुशख़बरी दी।

(8) किसी हाजत मंद को थोड़ी चीज़ देने से न शरमाओ क्यों कि बिल्कुल ही न देना उससे बदतर है।

(9) नाशुक्री फ़ोक्र का ज़ीना है और शुक्र दौलतमंदी का ज़ीना।

(10) जब अक़्ल कामिल हो जाती है तो कलाम घट जाता है। (यानी आक़िल लोग बहुत कम कलाम करते हैं।)

(11) तफ़क्कुरात आधा बुढ़ापा होते हैं।

(12) इन्सान अपनी जुबान के नीचे छुपा हुआ होता है।

(13) अकसर इन्सानों की अक़्लें सीम व जवाहिर की चमक देखकर जाती रहती हैं।

(14) जो छोटे हाथ से सख़ावत करता है उसे लम्बे हाथ से दिया जाता है।

(15) तीन चीज़ें जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं।
1.बीमारी का छुपाना। 2. सदक़ा व ख़ैरात को छुपाना। 3. मुसीबत छुपाना।

(16) औरत बिच्छू है जिसने शीरीनी का लिबास पहन रखा है।

Scanned by CamScanner

شفیق ملت

حضرت علامہ مفتی شفیق احمد شریفی صاحب کی دیگر تصانیف

- فتاویٰ دار العلوم افضل المدارس
- فتاویٰ دار العلوم غریب نواز
- تاریخ الاولیاء جلد اول اردو
- تاریخ الاولیاء جلد اول ہندی
- تذکرہ خلفائے راشدین اردو
- تذکرہ خلفائے راشدین ہندی
- تذکرہ اکابر علمائے اہلسنت
- ذکر الصالحین
- اصلاحی خطبات
- حقوق زوجین
- حیات خواجہ غریب نواز
- حیات سیدنا امام اعظم
- حیات شاہ حسام الحق، مانکپور
- اہلسنت وجماعت و دیوبندیوں کی پہچان
- ثبوت فاتحہ
- (عالم کا مکمل نوٹ)
- التلخیص (عالم کا مکمل نوٹ)
- مسنون دعائیں
- تذکرہ مشاہیر اولیاء الہ آباد
- جدید مسائل
- پاسبان ملت
- تاریخ مشاہیر اولیاء الہ آباد

Rs. 70/-

Scanned by CamScanner